वैश्विक संवाद GLOBAL DIALOGUE

5.2

15 भाषाओं में एक वर्ष में 4 अंक

अमरीकी समाजशास्त्र का तिहरा संकट

इवान स्जेलेन्यी

वैश्विक समाजशास्त्र सवालों में

गुरमिंदर भाम्बरा

जो भविष्य हम चाहते हैं

मार्कस शुल्ज

चार्ली हेब्दो के पश्चात

स्टेफनी ब्यूद
मेबल बेरेजिन
एलिजाबेथ बेकट

वैश्विक परिसंवाद :

> पाकिस्तान में समाजशास्त्र
> अल्चिच बेक की याद में
> आयरलैंड में समाजशास्त्र

सूचना पत्र

GD
अंक 5 / क्रमांक 2 / जून 2015
http://isa-global-dialogue.net

International Sociological Association

> सम्पादकीय

समाजशास्त्र का भविष्य और भविष्य का समाजशास्त्र

यह अंक समाजशास्त्र के भविष्य पर एक नई श्रृंखला का शुभारम्भ करता है। हंगरी के प्रख्यात समाजशास्त्री श्वान स्जेलेंजी अमरीकी समाजशास्त्र के तिहरे संकट – राजनैतिक, पद्धतीय एवं सैद्धान्तिक का निदान पेश करते हैं। अमरीकी समाजशास्त्र ने अपनी उन राजनैतिक जड़ों को खो दिया है जिन्होंने 1960 और 70 के दशक में छात्रों को आकर्षित एवं उत्तेजित किया था। राजनीति शास्त्र और अर्थशास्त्र में आज फल–फूलने वाले क्षेत्रीय परीक्षणों द्वारा पेश किये गये कारकीय विश्लेषण के साथ कदम न मिला पाने के कारण इसने अपना पद्धतीय लाभ खो दिया है: और शास्त्रीय विचारकों के साथ कार्य से निर्मित होने वाली सैद्धान्तिक कल्पना को भी खो दिया है। अमरीकी समाजशास्त्र पथ से भटक गया है और अब यह छात्रों की पीढ़ी के लिए आकर्षक नहीं है। क्या यह सच हो सकता है?

गुरमिंदर भाम्बरा, यू.के. से लिखते हुए, किसी भी उत्तर पर एकांतिक फोकस जैसे स्जेलेंसी के साथ 'स्वदेशी' समाजशास्त्र, वैश्विक महानगरीयवाद और आधुनिकतावाद का सिद्धान्त चाहे वह यूरोकेन्द्रीयवाद को प्रस्थान के बिन्दु या संदर्भ बिन्दु के रुप में देखता है, की आलोचक हैं। इनमें से कोई भी वो अर्जित नहीं कर सकता जो इनके द्वारा प्रस्तावित वैश्विक समाजशास्त्र चाहता है जैसे पारदेशीय सम्बद्धताओं द्वारा आकार दिये गये उपनिवेशी और उत्तर उपनिवेशी अनुभवों की बहाली। परन्तु क्या दक्षिण की भागीदारी के बिना वैश्विक समाजशास्त्र हो सकता है? पाकिस्तान से दो युवा समाजशास्त्री लैला बुशरा और हसन जावेद, दक्षिण के कई देशों में समाजशास्त्र (वैश्विक समाजशास्त्र को छोड़ दे) के अस्तित्व के लिए बाधाओं का वर्णन करतें हैं। हालांकि पाकिस्तान में कोई राष्ट्रीय समाजशास्त्र संघ नहीं है पर आई.एस.ए. में पाकिस्तान से 19 व्यक्तिगत सदस्य हैं।

न ही हम उत्तर में दक्षिण की गहराती उपस्थिति को भूल सकते हैं। चार्ली हेब्दों की हत्याओं के स्टेफने ब्यूद हमें फ्रांस के समाजशास्त्रीयों के मध्य बहस का अहसास कराती है जबकि मेनल बेरेजिन यूरोप में दक्षिणपंथी राजनीति के बलवे का वर्णन करती है। जर्मनी, स्पेन और यू.के. की मस्जिदों में क्षेत्रीय कार्य के आधार पर एलिजाबेथ बेकर मुस्लिम समुदायों में व्याप्त गहरे डर को स्पष्ट करती है।

मार्कस शुल्ज, शोध उपाध्यक्ष, आई.एस.ए. हमें भविष्य के समाजशास्त्र से 10–14 जुलाई 2016 में वियना में आयोजित आई.एस.ए. फोरम की थीम, भविष्य के समाजशास्त्र की तरफ ले जाते हैं। वे हमें हमारे भविष्य के निदान के महत्व की तरफ ले जाते हैं और उसके खतरों के प्रति आगाह करते हैं। भविष्य मनुष्य की मुटठी में होता है और उसे आकार देने में समाजशास्त्र की भूमिका को उसे पहचानना चाहिये। शुल्ज का विजन एक जनवरी 2015 को स्वर्गवासी उलरिख वेक से प्रेरित हैं। वेक का निधन समाजशास्त्र एवं अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के लिए दुखद हानि है। वे ऐसे समाजशास्त्री थे जिनका प्रभाव और प्रेरणा हमारे विषय के काफी दूर तक फैला था। यहाँ उनके पथप्रदर्शक योगदानों पर जर्मनी, अर्जन्टीना, दक्षिण कोरिया और कनाडा से प्राप्त चिन्तन का उत्सव मनाते हैं।

अंत में हम आयरलैंड से इस बार राष्ट्रीय समाजशास्त्रों पर हमारी श्रृंखला को जारी रखते हैं। चार लेख आयरलैंड के वैश्विक रुपान्तरण पर विचार/चिंतन करते हैं: वैश्विक स्तर पर प्रेरित आर्थिक संकट का प्रभाव, पुनः बढ़ने वाले सार्वजनिक क्षेत्र की प्रतिक्रिया, आयरिश परिवार का पारदेशीय चरित्र और आयरिश महिला आंदोलन को यूरोपीय समर्थन के परिणाम वैश्विक संवाद आई.एस.ए. वेबसाइट पर 15 भाषाओं में देखा जा सकता है।

> ***वैश्विक संवाद*** को आईएसए वैबसाइट पर 15 भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियां (Submissions) burawoy@berkeley.edu पर प्रेषित की जा सकती हैं।

*हंगरी के प्रख्यात समाजशास्त्री, **इवान स्जेलेन्यी** अमरीकी समाजशास्त्र के उनके लंबे और विविध अनुभवों पर चिंतन करते हुए उसके अन्त का पूर्वानुमान लगाते हुए।*

*इंग्लैंड की अग्रणी समाजशास्त्री **गुरमिंदर भाम्बरा** वैश्विक समाजशास्त्र के पारंपरिक उपागमों की आलोचना करते हुए अपने 'कनेक्टेड–समाजशास्त्र' उपागम की पेशकश करती हैं।*

*आईएसए के शोध उपाध्यक्ष, **मार्कस एस शुल्ज** जुलाई 10–16, 2016 को वियना में आयोजित होने वाले आईएसए फोरम की थीम : **हम कैसा भविष्य चाहते हैं : वैश्विक समाजशास्त्र और बेहतर विश्व के लिए संघर्ष,** का परिचय देते हुए।*

GD

Global Dialogue is made possible by a generous grant from **SAGE Publications.**

> Editorial Board

Editor: Michael Burawoy.

Associate Editor: Gay Seidman.

Managing Editors: Lola Busuttil, August Bagà.

Consulting Editors:
Margaret Abraham, Markus Schulz, Sari Hanafi, Vineeta Sinha, Benjamin Tejerina, Rosemary Barbaret, Izabela Barlinska, Dilek Cindoğlu, Filomin Gutierrez, John Holmwood, Guillermina Jasso, Kalpana Kannabiran, Marina Kurkchiyan, Simon Mapadimeng, Abdul-mumin Sa'ad, Ayse Saktanber, Celi Scalon, Sawako Shirahase, Grazyna Skapska, Evangelia Tastsoglou, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

Regional Editors

Arab World:
Sari Hanafi, Mounir Saidani.

Brazil:
Gustavo Taniguti, Andreza Galli, Renata Barreto Preturlan, Ângelo Martins Júnior, Lucas Amaral, Rafael de Souza, Benno Alves.

Colombia:
María José Álvarez Rivadulla, Sebastián Villamizar Santamaría, Andrés Castro Araújo, Katherine Gaitán Santamaría.

India:
Ishwar Modi, Rashmi Jain, Pragya Sharma, Jyoti Sidana, Nidhi Bansal, Pankaj Bhatnagar.

Iran:
Reyhaneh Javadi, Abdolkarim Bastani, Niayesh Dolati, Mitra Daneshvar, Faezeh Khajehzadeh.

Japan:
Satomi Yamamoto, Hikari Kubota, Hatsuna Kurosawa, Masahiro Matsuda, Yuka Mitani, Ayaka Ogura, Hirotaka Omatsu, Fuma Sekiguchi.

Kazakhstan:
Aigul Zabirova, Bayan Smagambet, Gulim Dosanova, Daurenbek Kuleimenov, Elmira Otar, Ramazan Salykzhanov, Adil Rodionov, Nurlan Baygabyl, Gani Madi, Anar Bilimbayeva, Galimzhanova Zhulduz.

Poland:
Adam Müller, Anna Wandzel, Jakub Barszczewski, Justyna Kościńska, Justyna Zielińska, Kamil Lipiński, Karolina Mikołajewska, Krzysztof Gubański, Mariusz Finkielsztajn, Martyna Maciuch, Mikołaj Mierzejewski, Patrycja Pendrakowska, Weronika Gawarska, Zofia Penza.

Romania:
Cosima Rughiniş, Corina Brăgaru, Andreea Acasandre, Ramona Cantaragiu, Alexandru Dutu, Ruxandra Iordache, Mihai-Bogdan Marian, Angelica Marinescu, Anca Mihai, Monica Nădrag, Balazs Telegdy, Elisabeta Toma, Elena Tudor.

Russia:
Elena Zdravomyslova, Anna Kadnikova, Asja Voronkova.

Taiwan:
Jing-Mao Ho.

Turkey:
Gül Çorbacıoğlu, Nil Mit, Rana Çavuşoğlu.

Media Consultants: Gustavo Taniguti, José Reguera.

Editorial Consultant: Ana Villarreal.

> इस अंक में In This Issue

सम्पादकीय : समाजशास्त्र का भविष्य, भविष्य का समाजशास्त्र **2**

अमरीकी समाजशास्त्र का तिहरा संकट
इवान स्जेलेन्यी, हंगरी **4**

वैश्विक समाजशास्त्र से हमें क्या समझना चाहिए ?
गुरमिंदर भाम्बरा, यू.के. **7**

जो भविष्य हम चाहते हैं
मार्कस शुल्ज, यू.एस.ए. **11**

> चार्ली हेब्दो के पश्चात

चार्ली हेब्दो हत्याओं पर फ्रांसीसी समाजशास्त्रियों में बहस
स्टेफनी ब्यूद, फ्रांस **13**

चार्ली हेब्दो के पहले और बाद की चरम राजनीति
मेबल बेरेजिन, यू.एस.ए. **16**

क्षेत्र से नोट्स : यूरोप की डर की खेती
एलिजाबेथ बेकट, जर्मनी **19**

> पाकिस्तान में समाजशास्त्र

पाकिस्तान में समाजशास्त्र की खोज
लैला बुशरा, पाकिस्तान **22**

पाकिस्तान में समाजशास्त्र की संभावनायें
हसन जावेद, पाकिस्तान **24**

> अल्रिच बेक की याद में

अल्रिच बेक, सार्वभौम उद्देश्य वाले यूरोपीय समाजशास्त्री
क्लास डोरे, जर्मनी **26**

लेटिन अमेरिका में अल्रिच बेक
एना मारिया वारा, अर्जेंटीना **28**

पूर्वी एशिया में अल्रिच बेक का प्रभाव
सेंग जिन हान, दक्षिण कोरिया **30**

उत्तरी अमरीका में अल्रिच बेक का अपसारी प्रभाव
फुयुकी कुरासावा, कनाडा **32**

> आयरलैंड में समाजशास्त्र

आयरलैंड की आर्थिक आपदा की यात्रा
सियन ओ'रियायिन, आयरलैंड **34**

सार्वजनिक क्षेत्र के बचाव में
मेरी पी. कोरकोरान, आयरलैंड **36**

आयरिश महिला आंदोलन
पाउलिन कुलीन, आयरलैंड **38**

सेल्टिक सम्बद्धताएँ : आयरलैंड के वैश्विक परिवार
रेबेका सीयोको किंग ओ'रियायिन, आयरलैंड **40**

> अमरीकी समाजशास्त्र का तिहरा संकट

इवान स्जेलेन्यी, न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय, यू.एस.ए.

45 वर्ष पूर्व The Coming Crisis of Western Sociology में एल्विन गुण्डनर ने पारसंस के सरंचनात्मक प्रकार्यवाद के पतन और अधिक समाजशास्त्र के उदय की भविष्यवाणी की थी। यह चेतावनी जो आज गलत लगती हैं, चूंकि 1970 तक पारसंस का समाजशास्त्र मर चुका था और समाजशास्त्र अपने एक रोमांचकारी युग में प्रवेश कर रहा था। गोल्डनर के साथ सेमोर मार्टिन लिपसेट, सी.राइट मिल्स, एस.एम.मिलर, ली रेनवाटर, पियरे बोर्दियु, डेविड लॉकवुड, राल्फ मिलीबैंड, क्लास ऑफे, राल्फ डेहरनडोर्फ जैसे समाजशास्त्री और तब के समाजवादी पूर्वी यूरोप के अन्य जिसमें जिगमंट बॉमन, लेसजेक कोल कोवस्की और यूगोस्लाविया का अमल समूह–एक ताजगी देने वाले नये विवेचनात्मक समाजशास्त्र की पेशकश कर रहे थे। विडंबना यह है कि ऐसा प्रतीत होता है कि गोल्डनर द्वारा पूर्वानुमानित संकट का समाधान हो गया है : विषय संरचनात्मक और अधिक स्मार्ट विद्यार्थियों प्रकार्यवाद के चरमान्त से अपना रास्ता खोज चरमपंथियों के लिए मक्का के रूप में पल्लवित हो रहा है। एक समय में अभेय, आनुभाविक रूप से अपरीक्षित अवधारणाओं की उबाऊ सूची, प्रारंभिक समाजशास्त्र के कोर्स राजनैतिक लामबंदी और बौद्धिक विवाद के रोमांचक स्थान बन गये है।

इवान स्जेलेन्यी

इवान स्जेलेन्यी एक प्रतिष्ठित और विभूषित सामाजिक वैज्ञानिक हैं जो हमारे समय के महत्वपूर्ण प्रश्नों पर समाजशास्त्रों को वहन करने के लिए ला रहे हैं। उन्होंने 1960 के दशक में हंगरी में अपना कैरियर, हंगरी के सांख्यिकी कार्यालय और फिर विज्ञान की अकादमी में प्रारंभ किया था। यहाँ उन्होंने तब तक कार्य किया जब तक उन्हें उनकी आलोचनात्मक कृतियों के कारण निर्वासित होने पर मजबूर होना पड़ा। इन पुस्तकों में से अधिक चर्चित जार्ज कोनराड के साथ लिखी पुस्तक (Intellectuals on the Road to Class Power (1979) जो पूर्वी यूरोप से निकलने वाली राज्य समाजवाद पर एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं मौलिक निबंध में से एक थी। वे फिर ऑस्ट्रेलिया चले गये जहाँ उन्होंने फिलडंर्स विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग की नींव डाली और ऑस्ट्रेलिया से फिर वे अमरीका चले गये जहाँ वे विस्कोनसिन मेडिसन विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क के सिटी विश्वविद्यालय के ग्रेजुएट सेन्टर, केलिफोर्निया विश्वविद्यालय में प्रतिष्ठित प्रोफेसर के रूप में रहे। हाल ही में वे न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय के आबूधाबी कैम्पस के समाज विज्ञान के संस्थापक अधिष्ठाता बने। राज्य समाजवाद के अंतर्गत बाजारों के पुनर्वितरण प्रभाव पर शोध एवं सामाजिक उद्यमियों के प्रक्षेप पथ का उनका अध्ययन आज तक भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ऐतिहासिक और तुलनात्मक विश्लेषण के संयोजन से राज्य समाजवाद से पूंजीवाद के रूपान्तरण के साथ सामना करने वाले कुछ सामाजिक वैज्ञानिकों में से वे एक हैं। उन्होंने अपने छात्रों गिल इयाल और इलेनॉर टाउनस्ले के साथ; Making Capitalism without Capitalists (1998) का लेखन किया। उन्होंने साम्यवाद पश्चात के हंगरी में सर्वाधिक अमीर अभिजनों और सर्वाधिक वंचित जनसंख्या, दोनों पर शोध प्रकाशित किये हैं। दुनिया भर में फैले इनके कई विद्यार्थी इन्हें आज भी प्यार करते हैं और सम्मान देते हैं। ये सामाजिक सिद्धान्त के इतिहास पर अपने व्याख्यान के लिए प्रसिद्ध हैं। अमरीकी समाजशास्त्र के भाग्य का अन्दर और बाहर से आकलन करने के लिए उनसे बेहतर स्थिति में बहुत कम लोग हैं।

> >

चित्रण अरबू द्वारा

परन्तु आज, गोल्डनर की बहुत पहले की गई भविष्यवाणी पूर्वदृष्टा प्रतीत होती है : सामाजिक विज्ञानों में मौलिक परिवर्तन हुए हैं। नव–शास्त्रीय अर्थशास्त्र, तर्क संगत विकल्प सिद्धान्त और प्रायोगिक शोध प्रारूप विजयी प्रतीत होते हैं। समाजशास्त्री अभी भी प्रत्युत्तर की तलाश कर रहें हैं। अब अधिक रूढ़िवादी और कैरियर एंव पेंशन कोष के प्रति चिंतित विद्यार्थियों की कटटरपंथी उग्र सिद्धान्तों में रूचि कम हो गई हैं समाजशास्त्र विभाग अक्सर शिक्षकों की संख्या को न्यायोचित दिखाने हेतु मुख्य विषयों में विद्यार्थियों को आकर्षित करने के लिए संघर्ष करते हैं। कई बार वे सिर्फ अपने पंजीयन में वृद्धि के लिए 'सेक्सी' (और कई बार बहुत ही अल्प भार वाले) कोर्स की पेशकश करते हैं।

हमारा विषय तिहरे संकट का सामना करता प्रतीत होता है। प्रथम, समाजशास्त्र ने अपनी राजनैतिक अपील (और अपनी कटटरपंथी मिशन) खो दी है। द्वितीय, इसे अभी तक तर्कसंगत विकल्प वाले राजनैतिक विज्ञान या अर्थशास्त्र द्वारा प्रस्तुत पद्धतिय चुनौती का उपयुक्त उत्तर भी नही मिला है। और तृतीय क्या समाजशास्त्र में समान सैद्धान्तिक कोर (महत्वपूर्ण पुस्तकें जिनसे प्रत्येक समाजशास्त्री परिचित होना चाहिए) है और क्या इस तरह का कोर वांछनीय भी है के बारे में समाजशास्त्र पूर्णरूप से चकराया प्रतीत होता है।

> राजनैतिक संकट

चालीस वर्ष पूर्व, समाजशास्त्र चरमपंथी युवा संकाय सदस्य और छात्रों को आकर्षित करने वाला विषय था। यदि किसी की आमूलचूल सुधार या फिर क्रांति में रूचि थी तो यह करने योग्य विषय था। 1960 के उत्तरार्ध और 1970 के पूर्वार्ध में समाजशास्त्र के शिक्षक (विशेष रूप से वरिष्ठ) रूढ़िवादी थे परन्तु उनके विद्यार्थी वामपंथी अतिवादी थे।

आज स्थिति विपरीत हैः हमारे पास अभी भी कटटरवादी शिक्षक हैं परन्तु हमारे विद्यार्थी ''युवा रिपब्लिकनस'' की तरफ झुके हुए हैं। और यदि आप रिपब्लिकन हैं, आप क्यों अर्थशास्त्र या तर्कसंगत विकल्प राजनैतिक विज्ञान के बजाय समाजशास्त्र में मेजर करेंगें? अचानक हमारी समस्या यह नहीं कि हमारे पास पर्याप्त स्थान नहीं है बल्कि यह है कि हम अपने लेक्चर हॉल नहीं भर सकते।

इसे मैं 'राजनैतिक संकट' कहता हूँ जो दोतरफा हैः हम पर्याप्त संख्या में विद्यार्थियों को आकर्षित नहीं कर पाते हैं, और समाजशास्त्र में कटटरपंथी सामाजिक सुधार के लिए परिदृष्य की पेशकश होने की संभावना बहुत कम है।

> पद्धति संबंधी संकट

परन्तु समाजशास्त्र का संकट एक ''पद्धति शास्त्रीय क्रांति'' को भी प्रतिबिंबित करता है। ऑगस्त काम्ट, जिन्होंने इस बात पर बल दिया कि ''समाज के विज्ञान'' में प्रकृति का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिकों के समान पद्धति शास्त्रीय दृढ़ता होनी चाहिए, के समान सामाजिक वैज्ञानिकों ने लम्बे समय से अपने विषय के नाम में ''विज्ञान'' को तर्कसंगत ठहराने हेतु ''चरों के मध्य'' कार्यकारणीय सम्बन्ध स्थापित करने की कोशिश की है।

क्या सामाजिक (और आर्थिक) घटनाओं का अध्ययन करने वाले करणीय सम्बन्ध के बारे में विश्वसनीय दावे कर सकते हैं? यह शक करते हुए कि हम ऐसा नहीं कर सकते, वेबर ने 'अर्थपूर्ण सामाजिक विज्ञानों' को चुना है। जहाँ समाजशास्त्र को दैव निर्दशन आधारित सर्वेक्षण शोध, करोड़ों की आबादी से लिए कुछ सैकड़ों निदर्श से चुनाव के नतीजों की भविष्यवाणी के साथ विस्मयकारी सफलता मिली है, यह सफलता करणीय सम्बन्धों के बारें में प्राकल्पना के परीक्षण के एक इंच भी करीब नहीं ले जाती है।

करणीय सम्बन्धों के बारे में प्राकल्पना का परीक्षण करने के लिए, जनसंख्या के एक हिस्से को एक ''प्रायोगिक समूह'' जिसे किसी उत्तेजना (उपचार) से एक्सपोज किया जायेगा, के रूप में नियत करना आवश्यक है। बची हुई जनसंख्या नियंत्रित समूह होगी जो इस उत्तेजना से पृथक रहेगी।

प्रयोगों के तुलना में सर्वे अनुसंधान ''चयन की समस्या'' से अधिकतर ग्रसित होते है। वे किसी भी वैज्ञानिक दृढ़ता के साथ यह बताने में असमर्थ होते हैं कि आबादी 'ए' का परिणाम आबादी 'बी' से इसलिए अलग है क्योंकि 'ए' पहले से ही अलग था क्योंकि इसे अलग ''ट्रीटमेंट' प्राप्त हुआ। एक साधारण उदाहरणः हम जानते हैं कि बता सकते हैं कि वे अधिक जीवित इसलिए रहते हैं क्योंकि वे विवाहित है या क्या स्वस्थ व्यक्ति की विवाह करने की संभावना

>>

अधिक है (और वैसे भी अधिक जीवित रहेंगें)? यदि मैं कुछ 14 वर्षीय बच्चों का एक प्रयोगात्मक समूह में रखूँ जो विवाह करेंगें और अन्य को एक नियंत्रित समूह में जो कभी विवाह नहीं करेंगें और फिर वर्षों बाद उनकी सम्पूर्ण स्वास्थ्य स्थिति की समीक्षा करूँ, तब मैं करणीय सम्बन्धों के प्रश्न का सही वैज्ञानिक उत्तर दे सकता हूँ – परन्तु ऐसा दैव निर्धारण निसंदेह असंभव है।

सामाजिक वैज्ञानिकों ने अपने आप को इस खडडे से निकालने का प्रयास किया है। कछ ने 'कारणीय प्रक्रिया' को पहचानने के लिए यह सुझाव दिया कि y का कारण x हो सकता है। (उदाहरण के लिए विवाहित लोग कम पीते है और अधिक नियमित रूप से खाना खाते है अतः अधिक जीवित रहते हैं।) ''करणीय तंत्र'' को चिन्हित करने का प्रयास किया है। यह एक नेक प्रयास है – मैंने अपने शोध में कई बार इसका प्रयास किया है परन्तु यह ''सामान्य वैज्ञानिकों'' के लिए अधिक प्रेरक नहीं है। सर्वे अनुसंधानकर्त्ताओं ने अन्य तकनीकों की कोशिश की है परन्तु न तो पेनल अध्ययन न ही जीवन इतिहास साक्षात्कार मौलिक समस्या का समाधान करते हैं, पेनल अध्ययनों में अक्सर समय के साथ जनसंख्या खो जाती है और जीवन इतिहास अध्ययन अक्सर अध्ययन इकाई की चयनात्मक याददाश्त से पीड़ित होते हैं।

कुछ अर्थशास्त्री और राजनैतिक शास्त्री प्रयोगशाला प्रयोगों की तरफ मुड़ गये हैं। पूर्ण रूप से नियन्त्रित वातावरण वाले प्रयोगशाला प्रयोग दैव चयन के संदर्भ में अधिक लागत : बाल वैधता, अर्थात क्या परिणाम प्रयोग की परिस्थिति के बाहर वैध है या नहीं, के साथ बेहतर परन्तु महँगा समाधान प्रस्तुत करते हैं जैसे क्या परिणाम परीक्षणात्मक परिस्थिति के बाहर भी वैध रहे हैं। प्रयोगशाला प्रयोग हमेशा दैव चयन पर कमतर रहते हैं: हम प्रयोगशाला प्रयोग के निष्कर्षों से सामान्यीकरण नहीं कर सकते हैं, जहाँ अध्ययन इकाई अक्सर मध्यमवर्गीय महाविद्यालय छात्र हैं। (अन्य समाधान तथाकथित ''क्षेत्रीय प्रयोग'' में हैं जहाँ दैव चयन को प्रयोग में लाया जा सकता है परन्तु इनमें शायद ही कभी दैव चयन सम्मिलित होता है।)

यद्यपि, अर्थशास्त्र और राजनैतिक विज्ञान करणीय समस्या का तार्किक रूप से सुसंगत (यद्यपि जैसा कि मैं नीचे विस्तार से बताऊँगा अनुमानित तौर पर समस्यात्मक) समाधान प्रस्तुत करते हैं। समाजशास्त्र हालांकि बचाव की मुद्रा में है। अतः वह अपने आप को एक पद्धतिशास्त्रीय संकट में पाता है।

>सैद्धान्तिक संकट

सैद्धान्तिक रूप से समाजशास्त्र बहुत बेहतर अवस्था में नहीं है : 1980 के दशक से यह यकीनन अधोमुखी ढलान की तरफ है। निश्चित तौर पर मैं मर्टन–पारसंस के प्रकार की एकीकृत सैद्धान्तिक प्रमाणिकता के लिए विरही नहीं हूँ, मेरे विचार में संरचनात्मक प्रकार्यवाद एक स्वस्थ सैद्धान्तिक संवाद जिसमें मुख्य रूप से मार्क्स वेबर बहस हावी थी परन्तु जिसमें छोटी प्रतीकात्मक अर्न्तक्रियावाद और सहित विकल्पों के लिए जगह थी, द्वारा पलटा गया। मुझे यह स्वीकार करना है कि 1960 और 1970 के स्वर्णिम दिनों में भी, समाजशास्त्र के शिक्षक, समाजशास्त्रीय सिद्धान्त के आवश्यक कोर्स में किन लेखकों को सम्मिलित करना है, पर अक्सर लड़ते थे। आज और भी कम सहमति है–विशेष रूप से जब अपने किसी अध्ययन क्षेत्र को बनाये रखने के हताश प्रयास में, समाजशास्त्र अन्तःवैषयिक प्रोग्रामों जैसे महिला अध्ययन, अफ्रीकी–अमरीकी अध्ययन, एशियन–अमरीकी अध्ययन, चिकानों अध्ययन, सांस्कृतिक अध्ययन इत्यादि को अपील करता है। ये सभी शिक्षण और विद्वता पूर्ण जाँच के वैध क्षेत्र हैं परन्तु इन्हें समाजशास्त्र में सम्मिलित करने को विषयगत सीमाएँ धुँधली हो जाती है।

अर्थशास्त्र और राजनीति शास्त्र के साथ तुलना शिक्षाप्रद है। सामान्य तौर पर अर्थशास्त्री अपने विषय के सैद्धान्तिक आधारों पर सहमत प्रतीत होते हैं। जितने भी अर्थशास्त्री को मैं जानता हूँ उनमें से अधिकतर के मध्य विद्यार्थी अधिक अग्रवती कोर्स में जाने के पहले क्यों सूक्ष्म अर्थशास्त्र के सिद्धान्त और समाष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धान्त लेते है के बारे में समान समझ है। इन कोर्स में क्या पढ़ाया जाना चाहिए के बारे में बहुत कम असहमति है, पाठयक्रम इतने मानकित है कि डॉक्टरेट प्राप्त कोई भी अर्थशास्त्री इन में कोई भी कोर्स पढ़ा सकता है – हालांकि ''शास्त्रीय'' चिन्तकों की आश्चर्यजनक उपेक्षा, जिसका अर्थ है कि विरले ही लंबे समय से चले आ रहे विवादों का सामना करते हैं, का उल्लेख करना महत्वपूर्ण है। शास्त्रीय सैद्धान्तिक विवाद अभी भी विषय में परेशानी खड़ी करने के लिए वापिस आ सकते हैं – जैसा 2008–09 के वैश्विक राजस्व संकट के दौरान कीन्स और मार्क्स ने किया था।

इसके विपरीत, हालांकि अधिकांश समाजशास्त्र विभाग या तो इस बात पर सहमत नहीं हो सकते कि एक प्रारंभिक पाठयक्रम को कैसा होना चाहिए (इसके बजाय, वे एकदम भिन्न सिद्धान्तों और वाले ऐच्छिक कोर्स की श्रृंखला की पेशकश करते हैं), या फिर एक फ्रूट सलाद जैसा प्रारंभिक पाठयक्रम जिसमें ''मूल अवधारणाओं'' की उबाऊ निर्देशिका के साथ सेक्सी विषय को मिश्रण होता हैं, की पेशकश करते हैं। क्या अर्थशास्त्र सही कर रहा है या समाजशास्त्र विषय परिचय की समस्या को बेहतर सुलझा रहा है? मैं इस लेख के अंतिम खण्ड में इस प्रश्न पर पुनः आऊँगा परन्तु यह स्पष्ट है कि जहाँ अर्थशास्त्र के प्रारंभिक पाठयक्रम विषयगत मतैक्य स्थापित करते है, समाजशास्त्र अराजकता के कगार पर खड़ा प्रतीत होता है।

उससे भी अधिक परेशान करने वाला है, अपने विषय के ''शास्त्रीय'' पर असहमत होते ही हम उन प्रश्नों के बारे में जिन्हें हमारे विषय को उठाने चाहिए पर कम निश्चित हो जाते हैं। एक समय में समाजशास्त्री असमानताओं (शक्ति, आय और जीवन अवसर में वर्ग, प्रजाति एवं जेण्डर द्वारा) शैक्षणिक एवं व्यवसाय में उपलब्धियों, सामाजिक गतिशीलता जैसी समस्याओं पर खुद के स्वामित्व के बारे में मोटे तौर पर सहमत थे। अब, यद्यपि, हमें न सिर्फ हमारे शोध प्रश्नों की पहचान करने में परेशानी होती है, अपितु अर्थशास्त्री और राजनैतिक वैज्ञानिक हमारे क्षेत्र को हथिया लेते हैं। क्या यह कष्टदायक नहीं है कि सामाजिक असमानता पर हाल ही सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक थामस पिकेटी और जोसफ स्टिगलित्ज जैसे अर्थशास्त्रीयों द्वारा लिखी गई थी? क्या हम बहुत पीछे रह गये है?

>इस संकट से बाहर निकलने का रास्ता?

सामाजिक यथार्थ के प्रति समाजशास्त्रीय उपागमों के गुण और शक्तियों की समीक्षा करते हुए एवं अपने सहकर्मियों को अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में नई प्रवृत्तियों के अनुसरण के बारे में सावधान रहने की चेतावनी देते हुए इस काफी निराशावादी संदेश को समाप्त करना चाहता हूँ।

समाजशास्त्रीय उपागम की ताकत रिफलेक्सिविटी थी। कार्ल मार्क्स (प्रत्येक युग में शासक वर्ग के विचार ही शासक विचार है) और कार्ल मैनहीम (मत, कथन, प्राक्कथन और विचारों की व्यवस्था उन्हें अभिव्यक्त करने वालों की जीवन स्थिति के अनुसार समझे जाते हैं) से लेकर एल्विन गुल्डनर (The Future of Intellectuals and the Rise of the New call) तक की लंबी परम्परा पूछती है कि

>>

वक्ता कौन है, और समाजशास्त्री की (राजनैतिक) भूमिका क्या है। जब तक समाजशास्त्री ''बेआवाज की आवाज'' की तरफ ध्यान देगें उन्हें अपना क्षेत्र मिलेगा।

यह सच है कि छात्र अधिक रूढ़िवादी हो गये हैं, परन्तु 2008–09 के बाद वैश्विक पूंजीवाद द्वारा जनित असमानताओं के साथ असंतोष में वृद्धि हुई है। जैसे समाजशास्त्र बहुमत की चिंताओं–वर्ग, नस्लीय एवं लैंगिक असमानता, शक्ति, गरीबी, उत्पीड़न, शोषण, पूर्वाग्रह की तरफ लौटेगी–पुराने अच्छे दिन जब व्याख्यान कक्ष में कुर्सियाँ खाली छोड़ने के बजाय छात्र सीढ़ियों पर बैठते थे, वापिस आ सकते हैं। माइकल बुरावे का सार्वजनिक समाजशास्त्र के लिए आह्वान इसके लिए चौकस आह्वान है और यह उल्लेखनीय है कि बर्कले विश्वविद्यालय का समाजशास्त्र विभाग, भरी कक्षाओं एवं उच्च गुणवत्ता वाले स्नातक छात्रों के साथ, काफी अच्छा कर रहा है। यदि समाजशास्त्र अपना राजनैतिक मिशन बरकरार रख ले तो, वह बड़े सामाजिक मुददों की जाँच को अर्थशास्त्र से पुनः ग्रहण कर सकता है। इसके साथ साथ वह मार्क्स या वेबर की शास्त्रीय समाजशास्त्र की विवेचनात्मक दृष्टि की विशेषता को प्राप्त कर सकता है।

हमारे कई साथी, विषय के पद्धतिशास्त्रीय संकट का समाधान समाजशास्त्र को अर्थशास्त्र या तर्कसंगत विकल्प राजनीति विज्ञान की तरह ''सामान्य विज्ञान'' में परिवर्तित कर और यथार्थ को जितनी ज्यादा परिशुद्धता से वर्णित करने की कोशिश के बजाय व्यवहार को (प्रयोगशाला प्रयोगों पर निर्भर हो कर) प्रतिरूपित कर, करने का प्रयास करते हैं। परन्तु जैसा कि मैंने बताया, जहाँ प्रयोगशाला प्रयोग हमें करणीय प्राकल्पना के परीक्षण की अनुमति देते हैं, उनकी बाह्य वैद्यता के साथ घाता समस्या यह व्याख्या कर पाये कि नव शास्त्रीय अर्थशास्त्र की इतनी सारी वैज्ञानिक भविष्यवाणी वास्तव में झूठी साबित हुई है।

न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय, आबू धाबी की एक संकाय संगोष्ठी में अर्थशास्त्र के पेरिस स्कूल के मेरे प्रिय सहयोगी गाईल्स सेन्ट पॉल ने एक बार पूछा, क्या अर्थशास्त्र एक विज्ञान है? उनका जवाब प्रेरक था। वह ऐसा कैसे हो सकता है, जब वह खराब गुणवत्ता वाले ऑकड़े और मॉडल जिन्हें गलत साबित नहीं किया जा सकता है, का उपयोग करता है? इसके बजाय गाइल्स ने सुझाव दिया कि अर्थशास्त्र एक सांस्कृतिक गतिविधि है जो गलत ठहरायी जाने वाली भविष्यवाणीयों की पेशकश करने के बजाय बहस के संदर्भ को विकसित करती है।

मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मुझे ''कैसे'' से अधिक 'क्यों' का प्रश्न ज्यादा प्रतिफल देने वाला लगता है और मुझे कुछ भी, जो अच्छे सामाजिक अनुसंधान के रूप में नहीं है, को स्वीकार करने में कठिनाई होती है। परन्तु वेबर, जिन्होंने वैषयिकता को 'वैषयिकता' की भाँति कहा, मैं समाज विज्ञानों को ''विज्ञान'' के रूप में वर्णित करता हूँ। यदि विज्ञान का अर्थ, प्रस्तावों की संस्था जहाँ करणीय सम्बन्धों का परीक्षण होता है, है तो कोई भी सामाजिक विज्ञान ''विज्ञान'' नहीं है। हाब्स या पारसंस के संदर्भ में, यह मानकर कि एजेन्ट चयन कर सकता है, (यद्यपि दी गई परिस्थितियों के अन्तर्गत) सामाजिक क्रिया ''स्वेच्छाचारी'' है। जैसा कि मार्क्स ने इतनी समझदारी से कहा ''मनुष्य अपना इतिहास खुद रचते है परन्तु (परिस्थितियों के अधीन) अतीत से प्रेरित हो कर। लोग चयन करते है और ये चुनाव अनेक संभावनाओं में से चुना हुआ और उनके अस्तित्व के साथ निर्धारणात्मक सम्बन्ध में नहीं, होता है। वेबर सही थेः हम, लोग क्या करते है की व्याख्या कर सकते हैं परन्तु हम यह कभी नहीं बता सकते कि उनकी कौन सी क्रिया 'तार्किक' है, और न ही हम यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि तार्किक रूप से वे क्या कर सकते हैं या करेंगे।

इस संबंध में समाजशास्त्र तर्कसंगत विकल्प अर्थशास्त्र से काफी आगे है और समाजशास्त्री अर्थशास्त्री या राजनीति विज्ञान में अपने अधिक वैज्ञानिक सहकर्मियों का अनुकरण करने की गलती करते हैं।

अन्य ''सामाजिक विज्ञानों'' के उपर समाजशास्त्र के पास एक और लाभ हैः समाजशास्त्री आँकड़ों के बारे में विवेचनात्मक रिफेलेक्सिविटी का उपयोग करते है। ऐसा ''मात्रात्मक विद्वानों'' के बजाय गुणात्मक शोधकर्त्ताओं के संदर्भ में अधिक सही है। हावर्ड बेकर द्वारा शिक्षित नृवंश विवरणकारों को यह अच्छी तरह पता थाः सही प्रश्न क्या है यह जानने के लिए खुद को सामाजिक परिस्थितियों में डूबोना पड़ता है। सावधान नृवंश विवरणकार और अवश्य ही कुछ सर्वे शोधकर्ता–सामाजिक यथार्थ को समझने के लिए कितनी सावधानी बरतनी चाहिए का प्रदर्शन करते हैं।

समाजशास्त्र स्पष्ट रूप से अपनी पहचान को विज्ञान के बजाय 'विज्ञान' के रूप में स्वीकार कर लेने में बेहतर स्थिति में होगा। हाँ, हमें 'क्यों' पूछना चाहिए परन्तु इस प्रश्न का उत्तर कितना सही होगा उसके बारे में संदेह रहेगा। इस संदर्भ में, यदि अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान भी समाजशास्त्र से कुछ सीखते हैं तो वे बेहतर स्थिति में होंगे।

तो तल–रेखा क्या है? समाजशास्त्र वास्तव में तिहरे संकट में है। वह नव–शास्त्रीय अर्थशास्त्री और तर्कसंगत विकल्प राजनैतिक शास्त्रीयों द्वारा प्रस्तुत ''वैज्ञानिक'' चुनौती का गलत रूप में जवाब देता है। या तो यह उनका अनुकरण करता है या खोये हुए क्षेत्र को पुनः प्राप्त करने हेतु ''ट्रेंडी'' या ''सेक्सी'' अन्तःवैषयिक क्षेत्रों में घुसता है।

मैं सुझाव देता हूँ कि इसके बजाय हमें मार्क्स और वेबर की शास्त्रीय परम्परा, जब समाजशास्त्र बड़े मुद्दों का सामना करती थी, पर लौटना चाहिए। नव–शास्त्रीय अर्थशास्त्र और तर्कसंगत विकल्प राजनीति विज्ञान विज्ञान होने का नाटक कर सकते हैं परन्तु समाजशास्त्र के लिए एक अन्य ''सामान्य विज्ञान'' बनने की कोशिश और साथ ही राजनैतिक रूप से सही वृत्तान्त बनने के चक्कर में दृढ़ता को छोड़ना मूर्खता होगी। इसके बजाय, हम क्यों नहीं शास्त्रीय परम्परा की तरफ लौटें जब समाजशास्त्र बड़े और महान प्रश्न पूछती थी और अपने रिफलेक्सिव व्याख्यात्मक प्रारूप में अर्थशास्त्र (तत्कालीन नवजात राजनीति विज्ञान) को गंभीर चुनौती प्रस्तुत करती थी? क्यों नहीं एक वामपंथी झुकाव वाली विवेचनात्मक नव–शास्त्रीय समाजशास्त्र विकसित हो सकता है? ■

इवान स्जेलेन्यी से पत्र व्यवहार हेतु पता
<ivan.szelenyi@nyu.edu>

[1] **All commentators agree there was a jump in sociology enrollments and majors between 1965 and 1975 and a sharp decline during the 1980s. (See David Fabianic, "Declining Enrollments of Sociology Majors,"** *The American Sociologist*, **Spring 1991: Bronwen Lichtenstein, "Is US Sociology in Decline?"** *Global Dialogue* **3.2, and** http://www.asanet.org/research/stats/degrees/degrees_level.cfm**). While the number of BA/BSc degrees awarded increased steadily since the lows of the 1980s, sociology enrollments and BA awards are still behind their peak of the mid-1970s.**

> वैश्विक समाजशास्त्र से हमें क्या समझना चाहिए?

गुरमिंदर भाम्बरा, वॉरविक विश्वविद्यालय, यू. के. एवं आई.एस.ए. की कन्सेपचुअल एण्ड टर्मिनोलोजिकल एनेलिसस (RC35) की शोध समिति की बोर्ड सदस्य

गुरमिंदर भाम्बरा

गुरमिंदर, के. भाम्बरा उत्तर औपनिवेशिक समाजशास्त्र के विकास में एक अग्रणी हस्ती है। वे उपनिवेशियों के योगदान और अनुभवों को कैसे इतिहास से बाहर कर दिया गया, दर्शा के समाजशास्त्र की संकीर्णता को सम्बोधित करती हैं। उनकी नवीनतम पुस्तक Connected Sociologies (2014) यहाँ प्रस्तुत तर्को पर विस्तार से चर्चा करती है। उनकी पुस्तक वैश्वीकरण के यूरोकेन्द्रीत दृष्टिकोण, जो आज की दुनिया को जैसा हम जानते हैं, को बनाने में, गैर–यूरोपीय 'अन्य' की केन्द्रियता को छुपाते है, की आलोचक है। वे यू.एस. में विषय के कोर से अफ्रीकी–अमरीकी समाजशास्त्र के सीमान्तीकरण और कैसे नागरिकता के समकालीन विचार इसकी ऐतिहासिक अन्डरसाइड अर्थात उपनिवेशवाद और दासता के साथ इसके गहरे सम्बन्ध की उपेक्षा करते है, के बारे में लिखती हैं। वे एक नई रोमांचक पुस्तक श्रृंखला "Theory for a Global Age" की संपादक है।

समाजशास्त्र के भीतर यूरोकेन्द्रित हावी आधुनिकता के अभिप्रायों में 'अन्य' के रूप में प्रतिनिधितों की पूर्व में की गई उपेक्षा को सुधारने के एक तरीके के रूप में ''वैश्विक समाजशास्त्र'' को प्रस्तावित किया गया है। यह नवनिर्मित–वैश्विक काल के लिए समाजशास्त्र को फिर जवान करने का एक मार्ग है। इस मार्ग में तीन मुख्य घटक सम्मिलित हैं: (1) बहु–आधुनिकता पैराडाइम की तरफ बढ़ना (2) बहु–सांस्कृतिक वैश्विक समाजशास्त्र की माँग; और (3) वैश्विक महानगरीय दृष्टिकोण के पक्ष में तर्क। जहाँ ये दृष्टिकोण प्रकट रूप में ''बाकी दुनिया'' को ध्यान में रखती हैं, मेरा मानना है कि ऐसा वे अपनी शर्तों पर जो कि अपर्याप्त है, पर करती हैं।

इसके विपरीत मैं यूरोकेन्द्रीयवाद की उत्तर–उपनिवेशी एवं आलोचनाओं पर निर्मित ''सम्बद्ध समाजशास्त्र'' उपागम को साझा वैश्विक वर्तमान को समझने के लिए बेहतर तरीका मानती हूँ। ''सम्बद्ध समाजशास्त्र'' की केन्द्रीय चिंता उपनिवेशवाद, दासता और विनियोजन के इतिहास को ऐतिहासिक समाजशास्त्र के केन्द्र में एवं सामान्य तौर पर विषय पर रखकर, समाजशास्त्र पर पुनर्विचार करने की है। समाजशास्त्र के निर्माण में मेरा मानना है कि ''उपनिवेशी वैश्विक'' के महत्व को स्वीकार करने से ही हम उत्तर–औपनिवेशिक और वर्तमान को समझ और सम्बोधित कर सकते हैं। यही उचित विवेचनात्मक ''वैश्विक समाजशास्त्र'' का क्षेत्र होगा।

आधुनिक विश्व और इसके सहयोगी आर्थिक एवं राजनैतिक आंदोलनों के उभार से समाजशास्त्र और आधुनिकता विशिष्ट रूप से सह संघटक के रूप में दर्शायी जाती हैं जिसके लिए व्याख्या एक नये ''आधुनिक'' स्वरूप की आवश्यकता होगी। यह समझ जो आधुनिकता को यूरोप की देन मानती है के साथ यह विचार है कि बाकी दुनिया इन विश्व–ऐतिहासिक प्रक्रियाओं के बाहर है। उपनिवेशी संपर्क एवं प्रक्रियाएँ आधुनिकता के तथाकथित उदगम स्थलों के साथ अन्य जगहों पर आधुनिकता के दमन या विरूपण के लिए नगण्य माने गये हैं। इन क्रांतियों के ऐतिहासिक वर्णन अतः स्वयं आधुनिकता के, जहाँ समय के साथ सतत नहीं रहे हैं, स्वायत्त अंतर्जात मूल और उसके पश्चात वैश्विक प्रसार के ऐतिहासिक फ्रेम, जिनके मध्य ये घटनाएँ स्थित हैं, चलती रहती है। ऐसा वहाँ भी है, जहाँ नये ''वैश्विक समाजशास्त्र'' का दावा प्रस्तुत किया जाता है।

>>

> बहुल–आधुनिकताएँ

उदाहरण के लिए, बहुल–आधुनिकताओं ने आधुनिकीकरण के सिद्धान्त को 1990 के दशक के उत्तरार्ध में, ऐतिहासिक समाजशास्त्र के अन्तर्गत एक विशिष्ट शोध पैराडाइम के रूप में प्रतिस्थापित कर दिया है। आधुनिकीकरण के सिद्धान्त मार्क्सवादी दृष्टिकोणों और निर्भरता एवं अल्प विकास के विचारकों के द्वारा गंभीर आलोचना के दायरे में आ चुके थे। बहु–आधुनिकताओं के लिए बहस करते हुए, विद्वानों ने दो भ्रांतियों से बचने का प्रयास किया: पहली यह विचार कि केवल एक आधुनिकता है – वह भी पश्चिम की, जिसमें अन्य सब मिलेंगे, और दूसरी यह विचार कि पश्चिम से पूर्व की ओर देखना निश्चित तौर पर यूरोकेन्द्रीयवाद का एक स्वरूप है। ये विद्वान तर्क कर लेते हैं यह दावा करना कि केवल एक आधुनिकता है, यूरोकेन्द्रीय होगा, विशेष रूप से वह जिसे यूरोप प्राप्त कर चुका है। बहु–आधुनिकता के सिद्धान्त, वैकल्पिक आधुनिकताओं के उनके परीक्षण में फिर भी यूरोप को संदर्भ बिन्दु के रूप में लेते हैं। इस तरह वे यह सुझाव दे कर कि यूरोपीय मूल के तथ्य को नकारा नहीं जा सकता, प्रभावी दृष्टिकोण का बचाव करते हैं। इसके विपरीत, मैं सुझाव देती है कि एक बार वैश्विक अर्न्तसम्बद्धता को उचित रूप से पहचाने और समझे जाने के बाद, इसी 'तथ्य' को स्पष्ट रूप से नकारा जाना चाहिए।

> स्वदेशी सामाजिक विज्ञान

''वैश्विक'' बहु–सांस्कृतिक समाजशास्त्र'' के लिए हाल ही में दिये गये तर्क सामाजिक विज्ञानों के ''स्वदेशीकरण'' के साथ पहले के कार्यो की थीमों से निकालते हैं। यह स्वायत्त या वैकल्पिक सामाजिक विज्ञान की परम्पराओं के विकास की माँग करते हैं। ''वैश्विक समाजशास्त्र'' के लिए लंबे समय से दिये जा रहे तर्कों ने पश्चिम के अन्दर समाजशास्त्रीय बहस की मुख्यधारा को हमेशा प्रभावित नहीं किया है परन्तु यहाँ वैश्विक संवाद में और इसके पूर्ववर्ती में काफी विचार–विमर्श की छेड़ा हैं। इस बहस के अन्तर्गत मुख्य बिन्दू स्वायत्त समाजशास्त्रीय परम्पराओं का विकास या बहाली की माँग है जो स्थानीय एवं प्रादेशिक अनुभवों और व्यवहारों से सूचित होगी। बहु–आधुनिकता के भांति, यद्यपि स्वायत्त परम्पराएँ वैश्विक समाजशास्त्र को क्या दे सकती हैं पर बहुत कम चर्चा होती है। यदि वर्तमान दृष्टिकोणों की सीमाएँ, पश्चिम से बाहर के विद्वानों और विचारकों को आकर्षित करने की असफलता से निकलती हैं तब मुख्य समस्या सीमांतीकरण और अपवर्जन की है। इसका समाधान, अंतर को पहचान कर और विषय के अंतर्गत ''गैर–यूरोपीय विचारकों की अनुपस्थिति'' को दूर करने के प्रयासों के माध्यम से तथाकथित समानता की मांग में है। बेशक यह महत्वपूर्ण मुद्दा है और भविष्य में (कई) बहु–सांस्कृतिक समाजशास्त्र के सृजन में मदद कर सकता है, यह अतीत में समाजशास्त्र के समस्याग्रस्त विषयगत रचना और वर्तमान में इस रचना के निरंतर परिणामों को सम्बोधित करने हेतु बहुत कम कार्य करता है।

> महानगरीय समाजशास्त्र

अब मैं उपर वर्णित तीसरे दृष्टिकोण, वैश्विक महानगरीय समाजशास्त्र पर केन्द्रित एक नये सार्वभौमिकवाद के दावे की तरफ अपना ध्यान देना चाहती हूँ। इस संदर्भ में, महानगरीयवाद एक मानदंड सम्बन्धी अनिवार्यता, जिसमें महानगरीय भविष्य की सोच वर्तमान की राजनीति को आकार दे सकती है, के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह, फिर, संभावी वैश्विक समावेश पर आधारित महानगरीय पैराडाईम के द्वारा समाजशास्त्र के पुनर्निमाण के प्रयासों द्वारा पूरा होता है। यद्यपि महानगरीयवाद के अधिकांश विचारकों के लिए समावेश का मुद्दा ''संभावी'' रहता है क्योंकि यह ''अपनी'' शर्तों पर उनके सम्मिलित होने पर निर्भर होता है। पश्चिमी समाजशास्त्र के साथ स्थानीय ज्ञान के सापेक्षवाद से बचने के लिए सार्वभौमिकतावाद आवश्यक माना जाता है परन्तु इस बात पर कोई चर्चा नहीं होती कि मान्य विषयगत इतिहासों में अनुपस्थित महानगरीय सम्बद्धताओं पर विचार करने के लिए दृष्टिकोण के रूप में महानगरीयवाद को कैसे प्रयोग में ला सकते हैं। ऐसे इतिहासों की स्वीकार करना हमें अन्य के विचार से समाजशास्त्र की अवधारणाओं और श्रेणियों के बारे में पुनर्विचार करने की अनुमति देगा न कि अन्य को एक समस्या जिसे समायोजित करना है वे रूप मे देखने की।

उपर चर्चित सभी दृष्टिकोण वैश्विक की एक योज्य दृष्टिकोण के रूप में संकल्पना करते हैं जो विश्व के वर्तमान विन्यास की ऐतिहासिक जड़ों (और मार्ग) को सम्बोधित किये बिना संस्कृतियों और विचारों की समकालीन बहुलता का उत्सव मनाती हैं। तीनों सभी वैश्विक को ऐतिहासिक रूप से अलग सभ्यता मूलक संदर्भों के मध्य समकालीन सम्बन्धों द्वारा निर्मित मानते हैं – यह पहचानने के बजाय कि ''वैश्विक'' के विकास में उपनिवेशवाद और दासता के इतिहास केन्द्रीय है। ''वैश्विक'' को केवल एक नवीनतम घटना के रूप मे देखते हुए, इन दृष्टिकोणों द्वारा समर्थित समाजशास्त्रीय पुनर्निमाण को भविष्य के प्रयासों में लगाया जाना चाहिए। यह पूर्व के विवेचन और अवधारणात्मक समझ की अपर्याप्ता की ओर संकेत करता है। मेरे सुझाव में, यह विषय के वर्तमान संस्तरण को बनाये रखता हैं। छोर से आवाजों को केन्द्र के साथ बहस में संलग्न होने की माँग का तात्पर्य है कि भविष्य में समाजशास्त्र भिन्न हो सकता है। वह यह स्वीकार करने में असफल होता है कि ऐसा होने के लिए समाजशास्त्र को अपने अतीत के साथ भी भिन्न रूप से सम्बन्धित होना पड़ेगा (और उस अतीत से जिसे वह विषय की समझ के लिए महत्वपूर्ण समझता है)।

> सम्बद्ध समाजशास्त्र

मैं ''सम्बद्ध समाजशास्त्र'' का परिपेक्ष्य जो इस पहचान से प्रारम्भ होता है कि घटनाएं प्रक्रियाओं से निर्मित होती है कि हमेशा किये गये चयन से व्यापक होती हैं, से समाप्त करना चाहूँगी। यह घटनाओं और प्रक्रियाओं के विवरण के रूप में नहीं अपितु जिसे हम सोचते है कि हम जानते है पर पुनर्विचार करने के अवसर के रूप में संभावित विवेचना और चुनाव की बहुलता की पहचान करता है। सम्बद्ध ता की आवश्यकता को महसूस करने वाले विभिन्न समाजशास्त्र स्वयं समय और स्थान में स्थित है जिसमें उपनिवेशवाद, साम्राज्य और उत्तर–उपनिवेशवाद का समय और स्थान सम्मिलित है। ये नये समाजशास्त्र अक्सर प्रतिरोधी और चुनौतीपूर्ण प्रतीत होगें और इसी आधार पर इनका प्रतिरोध भी हो सकता है (प्रतिरोध जो कि शैक्षणिक जगत के भौगोलिक–स्थानीय स्तरीकरण से आसान बनता है)। यद्यपि विभिन्न परिपेक्ष्यों का परिणाम घटनाओं और प्रक्रियाओं के परीक्षण को खोलना होना चाहिए ताकि उन्हें कार्य के मद्देनजर भिन्न रूप से समझा जा सके। अन्य शब्दों में, भिन्न आवाजों के साथ कार्य करना शुरू में सोची गई साधारण बहुलता से काफी आगे ले जाता है; ऐसा नहीं कि हम सभी एक जैसा सोचने लगे, परन्तु इस कार्य के पहले की सोच से अब हम भिन्न तरह सोचते हैं।

उदाहरण के लिए, राजनैतिक समुदाय को राष्ट्रीय राजनैतिक व्यवस्था के रूप में देखने का विचार यूरोपीय स्वयं की समझ एवं

>>

यूरोपीय ऐतिहासिक समाजशास्त्र के लिए केन्द्र में रहा है। यद्यपि कई यूरोपीय देश उतने ही राजसी राज्य थे जितने राष्ट्र–राज्य थे –अधिकतर राष्ट्र–राज्य बनने के साथ साथ या फिर राष्ट्र–राज्य बनने के पहले– और अतः राज्य का राजनैतिक समुदाय हमेशा से काफी व्यापक और स्तरीकृत रहा है। उदाहरण के लिए, जहाँ ब्रिटिश साम्राज्य की राजनैतिक समुदाय ऐतिहासिक तौर पर बहुसांस्कृतिक समुदाय था, यह समझ विरले ही समकालीन राजनैतिक विमर्श जहाँ राष्ट्रीय राजनैतिक राष्ट्रीय संदर्भों में समुदाय की सीमाओं को राज्य की क्षेत्रीय सीमाओं के साथ समनुरूप सोचा जाता है। उपनिवेशी अतीत को शांत कर, यूरोप (पश्चिम) का उत्तर उपनिवेशी वर्तमान लोप हो जाता है। इस चुनिंदा समझ के परिणाम अप्रवास की बहस, जो यूरोप के अधिकांश राष्ट्रीय चुनावों को बदरंग बनाती है, में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

चुनाव वह समस है जब लोगों को जोड़ने वाले राजनैतिक अनुबंध की शर्तें सौदेबाजी के लिए उपलब्ध होती हैं। जहाँ इन अनुबंधों में निरपवाद रूप से वर्तमान स्थितियों की सौदेबाजी शामिल होती है, ये सम्बद्धता के विशिष्ट ऐतिहासिक वृतान्तों के संदर्भ में प्रकट होती है; पारिभाषिक तौर पर राष्ट्रीय संदर्भों में ''अप्रवासी'' राज्यों के इतिहासों से अलग किये जाते हैं। राजनैतिक समुदाय के इतिहास से बाहर, ''प्रवासी'' राजनीति के अन्तर्गत अधिकारों से भी वंचित होते हैं और उन्हें अक्सर राजनीति को छोड़ने को कहा जाता है। हालांकि, यदि हम राष्ट्र–राज्यों के इतिहास को तथाकथित ''स्वदेशी'' निवासियों की गतिविधियों के विवरण से अधिक विस्तृत समझें, तो समकालीन राष्ट्रीय सीमाओं में इतिहास का स्वेच्छाकारी घटाव स्पष्ट तौर पर अधिक व्यापक इतिहास से जुड़े लोग जैसे प्रवासियों को यथोचित रूप से नागरिकों के रूप में देखने की बजाय गलत रूप से शिनाख्त करता है। उत्प्रवास राष्ट्रीय और यूरोपीय पहचान के वर्णन में महत्वपूर्ण है; राज्यों के इतिहास में उत्प्रवास को मुख्य एवं अंगभूत के रूप में समझने का अर्थ यह समझना है कि प्रवासी भी ऐतिहासिक रूप में नागरिक है न कि सिर्फ संभावित प्रतीक्षारत नागरिक।

तब ''सम्बद्ध समाजशास्त्र'' का दृष्टिकोण के लिए यह आवश्यक है कि वह स्वयं को उन प्रक्रियाओं के भीतर स्थित करे जिन्होंने उस दुनिया आविर्भाव को सुगम किया है। दुनिया के एक स्थान से प्रारंभ होने से, हम आवश्यक रूप से उस इतिहास से शुरू करते हैं जो उस स्थान को दुनिया से जोड़ता है। इस दृष्टिकोण में जिन घटनाओं या पहचानों की हम व्याख्या करना चाहते हैं से उन्हें समझने वाली सम्बद्धताओं को पहचानान और व्याख्या करना हमेशा अधिक व्यापक होता है। वैश्विक समाजशास्त्र के लिए उपर चर्चित आम दृष्टिकोण वैश्विक इतिहास के मुददे को नजर अंदाज करती हैं। वे उन्हीं सम्बद्धताओं को महत्वपूर्ण मानती है जो अन्य समाजों में यूरोपीय आधुनिकता को लाने के लिए माने जाते हैं। इसके विपरीत ''सम्बद्ध समाजशास्त्र'' के दृष्टिकोण की माँग है कि हम यूरोप को व्यापक प्रक्रियाओं के भीतर स्थित करें, उन परिस्थितियों की जिनमें यूरोप ने उपनिवेशवाद और दासता की रचना की और बाद में लाभ उठाया को सम्बोधित करे, और इस बात की जाँच करें कि वर्तमान में जिन समस्याओं का हम सामना कर रहे हैं को सम्बोधित करने के लिए यूरोप को बेदखल किये जाने वालों से क्या सीखने की आवश्यता है।

''सम्बद्ध समाजशास्त्र'' दृष्टिकोण वैश्विक विश्व में सामाजिक न्याय की सेवा में पुनर्जीवित समाजशास्त्रीय कल्पना के वादे को पूरा करने के लिए आवश्यक कार्य की तरफ इंगित करता है। ■

गुरमिंदर भाम्बरा से पत्र व्यवहार हेतु पता
<G.K.Bhambra@warwick.ac.uk>

> वह भविष्य जो हम चाहते हैं?

मार्क्स एस.शुल्ज, अर्बाना चम्पेग्न में इलिनोइस विश्वविद्यालय, यू.एस.ए. और आई एस ए शोध उपाध्यक्ष 2014-18

एक नई सुबह की उम्मीद में, दुनिया भर के तीर्थयात्रियों, पर्वतारोहियों और पर्यटकों ने क्षितिज पर सूर्योदय देखने के लिए जापान के माउण्ट फ्यूजी के शिखर पर पहुंचने की कोशिश में खड़ी चढ़ाई करते हुए रात बिताई। 'असमान विश्व से सामना' थीम की 2014 की समाजशास्त्र की विश्व कांग्रेस, योकोहामा के बाद मार्क्स शुल्ज द्वारा खींचा यह फोटो, आगामी आईएसए फोरम जो इस संवाद को आगे ले जायेगी, को दर्शाता है। यह फोरम इस बात पर बल देगी कि इस असमान विश्व को कैसे पार किया जा सकता है, अपनी आकांक्षाओं से प्रफुल्लित विभिन्न सामाजिक कर्त्ता नाना प्रकार की परिस्थितियों में भिन्न तरीकों से कैसे संघर्ष करते हैं और इस परियोजना में वैश्विक समाजशास्त्र कैसे योगदान दे सकता है।

शोध उपाध्यक्ष के रूप में **मार्कस शुल्ज** ने ''वह भविष्य जो हम चाहते हैं: वैश्विक समाजशास्त्र और जुलाई 10–16, 2016 में से बेहतर दुनिया के लिए संघर्ष'' को वियना में आयोजित होने वाली तीसरी आई.एस.ए फोरम की थीम के रूप में परिभाषित किया। यहाँ वे इस थीम के पीछे की प्रेरणा से अवगत कराते हैं। फोरम की अधिक जानकारी के लिए http://www.isa-sociology.org/forum-2016/ पर जायें।

वैश्वीकृत ग्रह कम न होने वाले अन्याय, व्याप्त संघर्ष एवं पर्यावरणीय विनाश से कलंकित है। तथापि, बेहतर दुनिया के लिए आशा कायम है। चियापा के जंगलों से लेकर जोहान्सबर्ग के नगर क्षेत्रों, अरब राजधानियों की सड़कों से शिकागो के इलाकों, अप्रवासियों के रास्तों से नवीन मीडिया के आभासी स्पेस से साहसिक–संघर्षों के द्वारा स्वप्न पोषित होते हैं। आदर्शवादी ऊर्जा अभी खत्म नहीं हुई है परन्तु वह विद्वतापूर्ण नवाचार को प्रेरित कर सकती है। अप्रत्याशित जोखिमें और अवसर सोच के नये तरीकों की माँग करते हैं।

>>

वैश्वीकरण ने प्रचुर मात्रा में उत्पाद लाभ को सुलभ किया है और अतिवृहत धन दौलत को पैदा किया है। तथापि इसने असमानता सीमांतीकरण और गरीबी को भी बढ़ावा दिया है। वैश्वीकरण द्वारा बहुल स्तर पर सामाजिक स्केल को और अधिक गहन तरीकों से जोड़ने के फलस्वरूप बाजार, राज्य, समाज और इन क्षेत्रों के मध्य सम्बन्ध पूर्णतया नये रूप में परिवर्तित हो रहे हैं। कोई भी राष्ट्र, शहर, इलाका या समुदाय इससे अछूता नहीं रहा है। इसके प्रभाव और अनुभव बहुत अधिक समान और बहुधा विरोधाभासी होते हैं। इतिहास में इससे पहले कभी इतने प्रवासी गतिमान नहीं हुए हैं और आसन्न पर्यावरणीय परिवर्तन द्वारा इस रूझान को बढ़ाने की संभावना अधिक है। नये पारदेशीय स्थानों ने सांस्कृतिक विविधता को बढ़ाया है, जबकि गतिशीलता अक्सर असमानता की मुख्य धुरी बन जाती है। सूचना और प्रौद्योगिकी की नई तकनीकों ने वैश्वीकरण को तीव्र करने में मदद की है। फिर भी वे जितना एकजुट करती है उतना ही विभाजित भी और स्वतन्त्र आदान–प्रदान को जितना आसान बनाती है उतनी ही उसे रोकती भी है। नियंत्रण, निगरानी और संग्राम के नये स्वरूप उभर रहे हैं।

निर्धारणात्मक प्रारूपों और सैन्य प्रतिक्रिया के तर्क बहुत अदूरदर्शी, मंहगे और अंततः शांति और सुरक्षा के लिए प्रतिकूल साबित हुए हैं। स्थायी समाधानों के लिए बुनियादी समस्याओं की गहरी और अद्वितीय रूप से अधिक खुले विश्लेषण की आवश्यकता होती है। नये पारदेशीय गतिशीलता किसी अपरिहार्य शक्तियों का परिणाम नहीं है बल्कि वह सामाजिक स्तर पर संस्थागत रूप से लेकिन रिफलेक्सिव मानवीय एजेंसी से आकार प्राप्त करते हैं। अतः वे निर्णयों और चुनावों चाहें वे अभीष्ट हो या नहीं, का परिणाम होते हैं।

आज के कई राष्ट्रीय समाजशास्त्रों में, भविष्य असाधारण रूप से उपेक्षित प्रतीत होता है। ऐसा क्यों है? विभिन्न स्थानीय कारणों में, एक विचार विशेष रूप से फैला हुआ है। यह भविष्य के साथ आचरण करने के विरोध में तर्क देता है क्योंकि हम उसके बारे में कुछ नहीं जान सकते है और चूंकि हमें उसके बारे में बात नहीं करनी चाहिए जिसे हम जानते नहीं है, हमें भविष्य के बारे में चुप ही रहना चाहिए।

यह अवस्थिति इस तथ्य के उल्टे चलती है कि हम सब अपने दैनिक जीवन को भविष्य की लघु कालिक और दीर्घकालिक बड़ी और छोटी असंख्य धारणाओं पर आधार कर बितातें हैं। चाहे हम किसी भी चीज को संभव या असंभव, वांछनीय या अवांछनीय माने, उसके परिणाम होते हैं। प्रत्याशा, आकांक्षा, अपेक्षा, आशा, कल्पना, योजना, प्रक्षेपण और दृष्टि भविष्य आधारित मानवीय क्रिया के अन्तर्निहित पक्ष है।

हमारे द्वारा एक बार समाजशास्त्र को अधिक प्रगतिशील बनाने की जरूरत को स्वीकार करने पर कई पेचीदे सवाल उठते हैं। हम भविष्य की कैसे संकल्पना कर सकते हैं? कौन से सर्वाधिक फलदायक तरीके हैं और हम कार्य के प्रतिस्पर्धात्मक प्रकारों का कैसे आकलन कर सकते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर ढूंढना एक ऐसा कार्य है जिसमें सैद्धान्तिक उपागमों की श्रृंखला योगदान दे सकती है।

पूर्व में, अतीत अक्सर पूर्व नियत, पूर्व निर्धारित या कम से कम एक निश्चित दिशा में प्रगति करने वाला माना जाता था और अतः उचित पद्धति से वह पूर्वानुमेय हैं। समाजशास्त्र के प्रारंभिक काल के दौरान, किन्ही भावी में धार्मिक विश्वास सामाजिक कानूनों की प्रत्यक्षवादी खोज के लिए मार्ग प्रशस्त करते हुए प्रतीत होते थे। कॉम्स से दुर्खीम की परम्पराओं को मानने वाले समाजशास्त्रीयों ने इनका ज्ञान समाज के प्रशासन के लिए उपयोगी माना। मार्क्स भी समान मान्यताओं को साझा करते हैं जब वे शोषित सर्वहारा वर्ग की बुर्जुआ पर आवश्यक जीत की तरफ इशारा कर इतिहास के नियम प्रतिपादित करते हैं। यद्यपि उन्होंने अपने अधिक आनुभाविक ऐतिहासिक कृत्यों में इस बात को स्वीकारा कि इसका कोई यन्त्रवत फार्मूला नहीं हैं परन्तु संभाव्य क्रिया के लिए बहुत स्थान है। वैश्विक दक्षिण के विद्वान या जो उस के साथ कार्य कर रहे है (जैसे अमीन कारडोसा, दसल, गुहा, क्वीजानो, नेदरवीन, पिये सॉद, सन्तोस स्पीवाक) ने व्यापक रूप से फैले आधुनिकीकरण के मॉडलों जिनके अनुसार तथाकथित तृतीय विश्व विकास में पीछे था और वे अपने इस परिकल्पिस पिछड़ेपन वैश्विक उत्तर के मार्ग का अनुसरण करके ही पार पा सकते हैं, को चुनौती दी।

सामाजिक अनुभवों से अपेक्षा का असाहचर्य उग्र अनिश्चितता के साये के साथ सैद्धान्तिक नवाचार को खोल देता है। जो है वह भिन्न हो सकता था। वर्तमान यथार्थ अनिश्चिता मानवीय क्रियाओं से भिन्न प्रकार से गढ़ा जा सकता था। ऐसा कम या अधिक रिफलेक्सिव के साथ–साथ कमोबेश संघर्षकारी या सहयोगी तरीकों से हो सकता था। इस अनिश्चितता की चेतना समकालीन सामाजिक सिद्धान्त में सामाजिक अभिकरणों एवं बहुत ऐतिहासिक वक्र रेखाओं के स्पष्ट समावेश से उत्तरोत्तर थीम में सम्मिलित हो रही है। आज यह आटोपोइसिस, सृजनशीलता, कल्पना और दूरदृष्टि पर जोर में अपनी अभिव्यक्ति पाती है।

अतः समाजशास्त्र का भविष्य के प्रति पुनःअभिमुखन आनुभाविक, विश्लेषणात्मक एवं प्रतिमानात्मक उपागमों की एक विस्तृत श्रृंखला से लाभ प्राप्त कर सकता है। वह ऐसा पूरे ग्रह को प्रभावित करने वाले सूक्ष्म अन्तःक्रिया के लघु संसार के साथ–साथ व्यापक वृहद रूझानों को जाँचने के द्वारा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, क्रियात्मक सिद्धान्त के नवीनतम विकास प्रत्यक्षवादी प्रतिबंधों और संकीर्ण उपकरणवाद को दूर कर देते हैं। सामूहिक कार्यवाही और सामाजिक आंदोलन के सिद्धान्त जमीन से प्रतिपादित वैकल्पिक दृष्टि को बेहतर पहचानने और राजनैतिक संघर्ष को बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सकते है। काल निदानात्मक उपागम उचित रूझानों को समझने में मदद कर सकते हैं। विवेचनात्मक सिद्धान्त दाँव पर लगे मूल्य निर्णयों को इंगित करने, निहित स्वार्थों की कार्य प्रणाली को बेनकाब करने और समाज के भिन्न क्षेत्रों के लिए अंतरीय परिणामों की पहचान करने में मदद कर सकते हैं।

बढ़ती सामाजिक असमानता, मानवाधिकार उल्लंघन, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय पतन और वितरण, मान्यता और शासन की बुनियादी विफलताओं को समझने के लिए अग्रिम अभिमुखन वाली विद्वता चाहिए जो संकीर्ण व्यापारी परिप्रेक्ष्य और कार्पोरेट रूचियों के आगे जा सकें और जो सतत विकल्पों की खोज में सीमा पार पहुँच सकती हैं। ऐसा लगता है वर्तमान आर्थिक संकट ने 1980 के दशक में हावी आर्थिक उपागमों को बदनाम कर दिया है परन्तु एक व्यापक समाज–विज्ञान परिप्रेक्ष्य को अभी उस रिक्त स्थान को भरना है। करने योग्य, संभावित निवार्य और वाछंनीय भविष्य पर शोध के लिए नये अवधारणात्मक परिप्रेक्ष्य और पद्धितीय उपकरणों की आवश्यकता है। यदि समाजशास्त्र को अधिक प्रासंगिक बनना है, उसे एक अधिक प्रगतिशील अभिमुखन को अपनाना होगा और विभिन्न सामाजिक कर्त्ताओं द्वारा कल्पना किये गये विविध भविष्य के साथ कार्य करना होगा। ■

मार्कस एस शुल्ज से पत्र व्यवहार हेतु पता
<markus.s.schulz@gmail.com>

> चार्ली हेब्दों हत्याओं पर फ्रांसीसी समाज-शास्त्रियों में बहस

स्टेफनी ब्यूद, École des hautes études en sciences sociales (EHESS), पेरिस, फ्रांस

पेरिस मेट्रो, फेबियन ट्रओंग द्वारा फोटो, जनवरी 12, 2015

जनवरी 7–9, 2015 की घटनाओं (पेरिस में चार्ली हेब्दों पर घातक हमला और यहूदी सुपरबाजार पर यहूदी विरोधी हत्या) पर क्या सामाजिक विज्ञान मौके पर कमटेंरी की पेशकश कर सकते हैं? या क्या हमारा दूरी बनाकर रखना बेहतर है ताकि मीडिया बुद्धिजीवी– जो समाजशास्त्रीय प्रयासों के विरोधी है, हावी हो जायें। फ्रांस के समाज को बिखेरने वाले और गति में लाने वाली घटनाओं के बाद चुप रहना विशेष रूप से कठिन लगता है, जैसा कि जनवरी के विशाल (एवं अस्पष्ट) नागरिक मार्च ने प्रदर्शित किया।

फ्रांस के 2005 के दंगों के तुरन्त बाद जेरार्ड माउगर ने इन घटनाओं पर प्रथम स्तर के शोध : इन घटनाओं पर समाजशास्त्रियों के दृष्टिकोणों का परीक्षण, का सुझाव दिया। 7–9 जनवरी 2015 के हमलों के बाद लोकप्रिय मीडिया केन्द्रों ने भिन्न सैद्धान्तिक परम्पराओं में कार्य करने वाले समाजशास्त्रियों के लेख प्रकाशित किये। इसके द्वारा इन विविध समाजशास्त्रियों के सार्वजनिक स्थापन– वे सार्वजनिक स्थापन जो सैद्धान्तिक और राजनैतिक रूप से अवियोज्य हैं, को जाँचने का अवसर प्राप्त हुआ। हमलों के तुरन्त बाद लिखे गये इन स्तभों ने लम्बे विवाद को पुनः प्रारम्भ किया: ऐसी घटनाओं की व्याख्या करते समय किस प्रकार की करणीयता को समाजशास्त्रीयों को प्राथमिकता देनी चाहिए? व्यक्तिगत आचरण या सामाजिक पृष्ठभूमि को हमें कैसा महत्व देना चाहिए। क्या वृहद समाजशास्त्रीय और संरचनात्मक सामाजिक कारकों में निहित व्याख्याओं पर्याप्त हैं? या क्या ये विश्लेषण व्यक्तियों को नैतिक जिम्मेदारी से दोषमुक्त करते हैं? इसके विपरीत सख्त

> >

व्यक्तिगत तर्क पर हमारा ध्यान क्या हमारी समाजशास्त्रीय भूमिका को त्याग देगा।

इस विवाद ने बड़ी बहस को उत्पन्न किया है। इस लड़ाई में सबसे पहले घुसने वाले समाजशास्त्री ह्यूगस लग्रान्जे थे जो साइन्सेज पो में वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय केन्द्र (CNRS) में शोधकर्त्ता थे और इन्होंने पेरिस के उपनगरीय इलाकों में बाल अपराध पर अपने शोध का वर्णन किया। अपराध के लिए ''राजनैतिक रूप से सही'' व्याख्याओं को खारिज करते हुए उन्होंने नृवंश सांस्कृतिक उत्पत्ति को भेदभाव के उत्पाद या सामाजिक आर्थिक या आवासीय गतिशीलता के संश्लेषण के बजाय एक स्वतन्त्र कारक के रूप में देखा।

कोउची और एमेड़ी कॉलाबेली भाई (स्कूल में खराब प्रदर्शन, जेल रिकार्ड के साथ अस्थिर परिवारों द्वारा हाशिये के शहरों में पले बड़े औपनिवेशिक आप्रवासियों के बेटे) का सामाजिक प्रोफाइल ''उसके'' पूर्व के मुखबिरों से मिलता था। इस बिन्दु को लाग्रान्जे ले मोंडे (जनवरी 14, 2015) में मजबूती से स्थापित करता है। उनके शीर्षक ''एक वि–समाजीकृत अल्पसंख्यक के नैतिक दोषों को देखने का साहस रखिये'' ने दो आयामों को प्रस्तुत किया। एक तरफ वे यह स्वीकार करते हैं कि फ्रेंच युवाओं का एक खण्ड जो हाशिये के इलाकों (पेरिस के उपनगरीय इलाके या शहर) में पला बढ़ा और समाज से कटा हुआ, दुराग्रही और शत्रुतापूर्ण उपसंस्कृति में फँसा, वि–समाजीकृत है। ये युवा सलाफीज्म सहित कटटरपंथी इस्लाम के अन्य रूपों के साथ नये धार्मिक प्रथाओं में प्रवेश कर अपने ''क्षतिग्रस्त आत्मसम्मान'' का पुननिर्माण करना चाहते हैं। परन्तु लाग्रान्गे लिखते हैं कि फ्रेंच युवाओं के इस खोए हुए अंश की चारित्रिक समस्याग्रस्त प्रवृत्तियों (पुरूष प्रधानता, लैंगिकवाद, होमोफोबिया, हिंसा या यहूदी–विरोधी भावनाएँ) को जाँचने के बजाय फ्रेंच बुद्धिजीवी उपनिवेशवाद से जुड़े हुए अपराध की भावना के कारण हिचकते हैं। वे औपनिवेशिक देशों के अल्पसंख्यकों के बुरे व्यवहार और नैतिक दोषों का सामना करने की हिम्मत नहीं करते हैं।

अगले दिन, डिडिएर फासिन EHESS (द स्कूल फॉर एडवान्सड स्टडीज इन सोशल साइसेन्जेस, पेरिस) और प्रिंस्टन में मानवविज्ञानी ने प्रत्येक समाजशास्त्री की सामाजिक मुद्दों को निष्पक्ष रूप से जाँचने के लिए दायित्व को कड़ाई से पुष्ट करने की जिम्मेदारी पर जोर दिया है। वे लिखते हैं कि संवेदनशील नगरीय क्षेत्रों में युवा सामाजिक और स्थानिक अलगाव, उच्च बेरोजगारी दर एव अनिश्चितता के साथ दोषारोपण और नस्लीय भेदभाव (काम पर, घर पर और पुलिस से) का अनुभव करते हैं। सामाजिक विज्ञानों को यह स्मरण कराते हुए कि ऐतिहासिक उत्तेजना के समय में उनकी भूमिका ''मूल्यांकन की आदत'' जैसा इतिहासकार मार्क ब्लोच ने कहा, से बचने की होनी चाहिए, फासिन अंत में कहते हैं कि ''हमारे समाज ने वही पैदा किया जिसे वह आज कुख्यात कुरूपता के रूप में खारिज करता है।'' CNRS शोधकर्त्ता एवं बाल अपराध विशेषज्ञ लारेट मुचियली, इसी प्रकार से दीर्घावधि के परिप्रेक्ष्य की पेशकश करते हैं (मीडिया पार्ट, जनवरी 2015) 1960 से 1980 के मध्य, उत्तर और उपसहारा अफ्रिका की अपनी पूर्व उपनिवेशों से कामगारों को बड़े पैमाने पर भर्ती करने के अपने अतीत को फ्रांस ने स्वीकार नहीं किया। इसके दो प्रमुख परिणाम हुए: प्रथम आप्रवास एकीकरण की नीतियों के अधीन नहीं था और द्वितीय, फ्रेंच समाज स्वयं को ''पूर्ण बहुनस्लीय एवं आंशिक बहु–सांस्कृतिक समाज'' के रूप में पहचान दिलाने के लिए संघर्ष करता है। स्वीकृति के लिए इस्लाम के प्रति डर, पूछताछ और कानून (जैसे स्कूलों में बुरकों पर रोक लगाने वाला 2004 का कानून) को स्थगित कर, खुद को बनाने वाले आधारभूत अवयव के हिस्से के रूप में इस्लाम पर विचार की आवश्यकता होगी। मुशियली, ''अटल रचनात्मक स्थिति जो समान नागरिकता, सामाजिक एकता और सामूहिक पहचान का निर्माण करती है'' का आह्वान करते हैं। मैं अपने शोध में इन तथ्यों की सामाजिक और आर्थिक दरिद्रीकरण, धार्मिक दोषारोपण और नस्लीय भेदभाव के रूप में व्याख्या करते हुए इस अवस्थिति को साझा करता हूँ। यह एक उपयोगी और यहाँ तक कि आवश्यक व्याख्या है, यद्यपि संतोषजनकता से आज भी बहुत दूर।

मेरी सोच में, प्रगति के दो रास्ते हैं। पहला, सिरिल लेमियुक्स (EHECS में शोधकर्त्ता) अपने लेख ''समाजशास्त्र में बैचेनी'' (Liberation, 30 जनवरी 2015) में एक सैद्धान्तिक स्थिति को प्रस्तुत करते हैं। स्वयं को ''व्यावहारिक'' समाजशास्त्र कहलाने वाले उभरते समकालीन प्रवृत्ति के अग्रणी लेमियुक्स ''किन्ही समाजशास्त्रियों'' द्वारा काम में लिए गये व्याख्यात्मक मॉडल की सीमाओं को सम्बोधित करते है। संभवतया यह बोर्दियू द्वारा प्रेरित ''विवेचनात्मक समाजशास्त्री'' का एक संदर्भ है। वे लिखते हैं कि ये समाजशास्त्री यह भूल जाते हैं कि उनका कार्य न सिर्फ संरचनात्मक गतिकी को ढूढनां है बल्कि (इन युवा जिहादियो की) उत्तम मुस्लिम बनने की इच्छा को गंभीरता से लेना भी है'' लेमियुक्स राजनैतिक और प्रतीकात्मक के रूप में ''मैं चार्ली हूँ'' के नारे के अधीन एकजुट करीब 3.5 करोड़ लोगों के नागरिक मार्च को करने वाले समाजशास्त्रीयों को निशाना बनाते हैं। लेमियुक्स का तर्क है कि लोग सड़क पर इसलिए निकल आये क्योंकि उन्हें उनकी नैतिक एवं राजनैतिक शिक्षा के अनुरूप करना उचित लगा। और उन्होनें नागरिकों की स्व–बाध्यकारी दक्षता में अपने विश्वास को पुनः पुष्ट करते हुए समाप्त किया। यह वह दक्षता है जिसे ''विवेचनात्मक समाजशास्त्रियों'' ने अस्वीकार किया है।

दूसरी, अधिक आनुभाविक उपागम उन तथ्यों को विचार में लेती है जो वृहद समाजशास्त्रीय या संरचनात्मक विश्लेष–णात्मक फ्रेमवर्क में फिट नहीं होते हैं। तीनों हत्यारों का बचपन गरीबी और अन्य परेशानियों से अंकित था; कोआची बंधु अपने प्रारंभिक टीनएज वर्षों में अनाथ हो गये थे और कोरेज में बाल–संबल सस्थाओं में रखे गये थे। हालांकि वे पूर्ण रूप से संस्थागत समर्थन से महरूम नहीं थे, न ही वे संगीन भेदभाव के पीड़ित थे। उदाहरण के लिए, एमेड़ी काउलीबेली को पेप्सी कोला में प्रशिक्षुता से लाभ हुआ जिसके दौरान वह निकोलस सरकोजी से यूलेसी पैलेस में मिला। उसी तरह, सईद कोआची ने पेरिस में सिटी हॉल में 'पुनरावर्तन राजदूत' के रूप में कार्य किया, हालांकि उसे 2009 में बर्खास्त कर दिया गया। ऐसा शायद इसलिए हुआ क्योंकि धार्मिक नियमों की (महिलाओं से हाथ मिलाने से मना करना और दिन में पांच बार नमाज पढ़ना) कठोर पालना ने उसे अपने सहकर्मियों से दूर कर दिया था।

यह दृष्टिकोण उल्लेख करता है कि सभी फ्रांसीसी जिहादी निर्धन उपनगरों से आये उत्तर–उपनिवेशी आवासीयों के वंशज नहीं हैं। कुछ युवा पेशेवर, जिनमें सामाजिक रूप से एकीकृत भी शामिल है जिहाद में सम्मिलित हो गये; कुछ युवा नवधर्मी शहर से दूर पवेलियनों में पले बढ़े। डेनमार्क जैसे देश जिनका कोई उपनिवेशी इतिहास नहीं है और जिन्होंने ''अल्पसंख्यकों'' से बहुत भिन्न तरह से बर्ताव किया है, भी फ्रांस जितने ही संकट में हैं। हम इसकी

>>

कैसे व्याख्या कर सकते है? हमारी पूछताछ को वृहद–समाजशास्त्रीय कारकों (निर्धन उपनगर, गैर–दक्ष अप्रवासी युवा, भेदभाव, संस्थागत नस्लवाद) तक सीमित कर क्या अकस्मात हम उन्हीं स्टिरियोटाइप जो इन युवाओं को खतरनाक के रूप में परिभाषित करते हैं, को पुनःसुदृढ़ तो नहीं कर रहे हैं।

इन युवाओं के धार्मिक आसक्ति के पीछे उत्प्रेरण को समझने में शायद धर्म का समाजशास्त्र मदद कर सकता है। यह हमें धर्मान्तरण को कट्टरवादी आंदोलन के रूप में पुनः उत्पन्न करने की और नये सदस्यों की विशेषताओं को पहचानने की अनुमति देता है। इस प्रकार की व्याख्या को चरमपंथी आंदोलनों के तर्क का पुननिर्माण करते हुए भरोसे के समाजशास्त्र के साथ जोड़ने की आवश्यकता होगी। इसके साथ ही जो भी इस्लामी व्यवहार के अस्पष्ट विधिक सीमा से समर्थन प्राप्त कर सकते हैं, की आवश्यकता होगी। हमें चार्ली हेब्दो कार्यालय पर हमले के संदर्भ को भी देखना चाहिए। बड़ी गंभीरता से हमें इन मुस्लिम युवाओं का चार्ली हेब्दों के धर्म विरोधी हास्य के प्रति नफरत का परीक्षण करना चाहिए। यह चार्ली हेब्दों जो स्वयं को बेवकूफ और पत्रिका कहती है द्वारा प्रस्तुत और सन्निहित, 1968 संस्कृति में पले बढ़े दोनों युवाओं और व्यस्कों के लिए समझना कठिन है। अतः जूली पेजिस (CNRS शोधार्थी) को चार्ली हेब्दों द्वारा इस्लाम पर किये गये (अन्य धर्मों की तुलना में) उपहास के विशिष्ट महत्व को समझने में समस्या हुई। यह एक ऐसे प्रमुख धर्म पर हमला था, जो इन युवाओं के लिए सकारात्मक सम्बन्ध के दावे का एकमात्र प्रतिनिधि था और इस हमले ने उनके माता पिता के औपनिवेशिक और कामगारी अतीत के शर्मसार करने वाले अनुभवों की याद को स्मरण करा दिया।

अतः हम विभिन्न समाजशासत्रियों की मान्यताओं के साथ–साथ मीडिया द्वारा समाजशास्त्र की प्रतिकात्मक शक्ति के सृजन निर्माण की प्रक्रिया पर सवाल उठा सकते हैं। बेशक, एक आवश्यक प्रश्न है कि किसे बोलने को मिलता है और किसे नहीं? हमलों के बाद, मघरेब और अफ्रीकी अप्रवासियों के वंशज– सफल उद्यमी, कलाकार (अभिनेता, संगीतकार, हास्य अभिनेता, लेखक) एवं खिलाड़ी मुखर होने लगे। शिक्षाविदों, अफ्रीकी – अमरीकी के सम्बन्ध में विशेष रूप से समाजशास्त्रीयों ने भी WEB Du Bois द्वारा उठाया गया प्रश्न ''एक समस्या होना आपको कैसा लगता है? को उठाया। समाजशास्त्रियों के रूप में, हम उस सामाजिक दुनिया जहाँ से कोआची एवं ए. काउलीबेली बंधु आये थे, के बारे में गंभीर शोध में आने वाली परेशानियों को दर्शा सकते थे। हमारे पास एक दुनिया जो पिछले दशकों में गहनता से रूपांतरित हुई है, के बारे में समृद्ध नृवंशीय विवरण का अभाव हैं। हमें इन प्रश्नों का अध्ययन करने के लिए शोध ग्रांट को प्रायोजित करने और इस पृष्ठभूमि से आने वाले समाजशास्त्रियों के लिए छात्रवृत्ति उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। ■

स्टेफनी ब्यूद से पत्र व्यवहार हेतु पता
<stephane.beaud@ens.fr>

> चार्ली हेब्दो के पहले और बाद की चरमपंथी राजनीति

मेबेल बेरेजिन, कार्नेल विश्वविद्यालय, इथाका एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त की आई.एस.ए. की शोध समिति (RC16) की सदस्य

मरीन ले पेन,
भावी अध्यक्षीय उम्मीदवार

दुनियाभर के राजनेताओं और व्यापक जनता ने प्रारम्भ में चार्ली हेब्दों हत्याओं को अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, एक कोर लोकतान्त्रिक सिद्धान्त के खिलाफ हमले के रूप में देखा था। हालांकि यह बहुत जल्दी ही स्पष्ट हो गया कि इन हत्याओं का कहीं अधिक व्यापक राजनैतिक और सामाजिक महत्व था: अगले दिन एक यहूदी दुकान में चार लोगों की हत्या ने अंतर्राष्ट्रीय पत्रकारों को 1930 के दशक की वापसी के बारे में लिखने के लिए प्रेरित किया।

चार्ली हेब्दों फ्रांस और यूरोप का सराजेवो क्षण था – अर्थात ये हमले फ्रांस और उसके पार राजनैतिक संकट को उकसा सकते थे। एक बेरहम ऋण संकट, कठोर मित्तव्यतता की नीतियाँ, स्तरित शरणार्थी संकट, विशेष रूप से युवाओं में उच्च बेरोजगारी दर, यहूदी मंदिरों और शमशानों पर यहूदी–विरोधी हमले – इन सभी प्रघटनाओं ने यूरोप में दक्षिणपंथी राष्ट्रवादी दलों को मजबूती प्रदान की है।

फ्रांस का नेशनल फ्रंट एवं उसके नेता, मरीन ला पेन इस लहर में सबसे आगे रहे हैं। 2011 में मरीन ला पेन ने पार्टी का नेतृत्व अपने पिता से उत्तराधिकार में प्राप्त किया। उनके पिता एक खास शख्सियत थे जिनकी अप्रवासी विरोधी बयानबाजी ने दशकों तक पार्टी को परिभाषित किया। मरीन ला पेन का उद्देश्य नेशनल पार्टी को शासन का दल न कि उत्तेजना वाला दल बनाना था और उन्होंने मित्तव्यतता, यूरो संकट और बेरोजगारी मुददों पर ध्यान केन्द्रित किया। नेशनल फ्रंट के इतिहास से अनजान पाठक अक्सर यह टिप्पणी करते हैं वे यह नहीं समझ पाये कि उनके समीचीन विचार कुछ क्षेत्रों में डर क्यों पैदा करते हैं। मरीन ले पेन – जिन्होंने न्यूयोर्क टाइम्स में हाल ही में लिखा कि ''इस्लामी कटटरवाद'' इस्लाम पर ''नासूर'' है जो ''हमारे मुस्लिम हमवतनों'' को कष्ट पहुँचाता है। यह पूर्व में हाशिये पर दलों को यूरोपीय जनता द्वारा सामान्य के रूप में देखने की प्रवृत्ति का एक हिस्सा है।

> गति एवं राजनैतिक अस्थिरता

लेकिन मजबूत यूरोपीय लोकतंत्र को गहरे खतरे कही ओर से हैं। पहला, यूरोपीय राजनैतिक परिदृश्य जिस गति में बदला है और मतदाता वरीयता और भावनाओं की अस्थिरता है, दूसरा, चार्ली हेब्दों जैसी घटनाओं द्वारा उत्पन्न राजनैतिक और आर्थिक संकट के मध्य नकारात्मक तालमेल है।

> >

ग्रीक संसद में नव–नाजी गोल्डन डॉन आंदोलन

2012 का बसन्त एक नया मोड़ था – ''क्रोधित लोगों की बहार'' के रूप में अभिव्यक्ति, जिसे एरिक हाब्सब्वाम से उधार लिया गया। ऐसा लगा कि यूरोपीय राजनीति ने गति पकड़ ली: एक चुनावी परेशानी के पीछे दूसरी आ गई। वामपंथी और दक्षिणपंथी राजनैतिक चरमपंथी चुनावी प्रगति प्राप्त करने लगे। यद्यपि फ्रांस्वां हॉलेण्ड ने फ्रांस के राष्ट्रपति पद का चुनाव जीता, मरीन ला पेन तीसरे स्थान पर आई। चरमपंथी वाम और दक्षिण, दोनों ने मिलकर पदस्थ राष्ट्रपति सरकोजी या उसके समाजवादी दावेदार के कुल वोटों से अधिक मत आकर्षित किये।

थोड़े ही समय पश्चात ग्रीस की प्रकट नव नाजी दल, हिंसक अप्रवासी विरोधी गोल्डन डॉन ने एक पारंपरिक दक्षिणपंथी दल को विस्थापित किया, जबकि एक छोटे से ज्ञात समाजवादी गठबंधन सीरिजा ने समाजवादी को विस्थापित किया। 2014 के उत्तरार्ध में चार्ली हेब्दों हत्याओं के कुछ सप्ताह बाद, ग्रीस में दुबारा चुनाव हुए – और आज सीरिजा का ग्रीस में शासन है जबकि गोल्डन डॉन देश का तीसरा बड़ा दल है। स्वीडन जो यूरोपीय आर्थिक एवं मौद्रिक संघ का सदस्य नहीं है और जो यूरोपीय संघ द्वारा मितव्यत्तता उपायों के आदेशों से त्रस्त नहीं है, में भी चुनावी अस्थिरता हुई। स्वीडन के हाल ही के संसदीय चुनावों में दक्षिणपंथी स्वीडन डेमोक्रेट 2010 में प्राप्त सिर्फ 'प्रतिशत मतों से 2014 में 13 प्रतिशत तक बढ़ गये।

इसी काल में, इटली का फाइव स्टार आंदोलन 2013 के चुनावों में प्रथम आया जबकि स्पेन का दक्षिणपंथी पोडेमोस आंदोलन ने भी बढ़त ली। यद्यपि जर्मनी का दक्षिणपंथी अप्रवासी विरोधी आंदोलन पेगिड़ा कुछ महिनों पुराना ही है, यह शायद नया क्षेत्र प्राप्त कर सकता है – विशेष रूप से उस सदंर्भ में जहाँ थीलो सराजित की 2010 की Germany in doing away with itself एक बेस्टसेलर थी।

> नकारात्मक तालमेल और राजनैतिक मिजाज

महत्वपूर्ण मतभेदों के बावजूद, ये दल और आंदोलन समान विशेषताएँ रखते हैं: अपने राष्ट्र–राज्यों के प्रति प्रतिबद्धता, यूरोपीय एकीकरण के प्रति अविश्वास और वैश्वीकरण की प्रति वैर भाव। वे यूरो–विरोधी, अक्सर मौद्रिक एकीकरण से बाहर निकलने के पक्षधर और मित्तव्यत्तता नीतियों के प्रति तीव्र नापसंदगी को साझा करते हैं।

अप्रवास और एकीकरण के विमर्श में चार्ली हेब्दों के कारण नई तात्कालिकता आई। यदि इयू द्वारा लागू कठोर मित्तव्यत्तता ने ला पेन जैसे राजनेताओं द्वारा नव उदारवादी और वैश्विक एजेण्डा को खतरनाक के रूप में वर्णित करने की अनुमति प्रदान की, चार्ली हेब्दों हत्याओं ने इस्लामिक कटटरवादी अस्तित्व में है और एक खतरा है या अप्रवास एक समस्या है के दावे को और भार दिया। यद्यपि यह यूरोपीय दक्षिणपंथियों का लंबे समय से चल रहा तर्क है, फ्रांसीसी प्रधानमंत्री ने चार्ली हेब्दों के हमला के बाद इसे अपना बनाया जब उन्होनें बाद फ्रांस में नस्लीय एवं सामाजिक रंगभेद के बारे में कहा।

> >

जॉन मेनार्ड कीन्स ने 1919 में लिखा था, ''आने वाले साल की घटनाएं राजनेताओं की विचारपूर्वक कृत्यों से नहीं बल्कि राजनैतिक इतिहास की सतह के नीचे सतत बह रहे छिपे हुए करण्ट जिसका कोई परिणाम नहीं बता सकता, के द्वारा आकार ली जायेगी।'' युद्ध के बाद के यूरोप के आर्थिक और शारीरिक क्षय पर कीन्स की टिप्पणी भयग्रस्त समकालीन यूरोप का आहवान करती हैं।

क्या हम यूरोप में 1930 के दशक की पुनरावृत्ति और फासीवाद की वापसी देख रहे हैं? हालांकि गोल्डन डॉन स्पष्ट तौर पर नाजीवाद का पक्ष लेती है, फ्रेंच नेशनल फ्रंट और स्वीडन डेमोक्रेट दोनों के उद्देश्य राष्ट्रवादी है न कि अधिकारवादीः परेशान व्यक्ति जैसे नार्वे के एंडर्स ब्रेनिक को सुसंगत राजनैतिक कार्यक्रमों के साथ विमूढ़ नहीं होना चाहिए। 1920 और 1930 के दशकों की तानाशाही की वापसी की भविष्यवाणी करना, अनुभवहीन होगा वैसे ही जैसे हाथ के टाइपराइटर की वापसी की भविष्यवाणी करना। यूरोपीय राष्ट्र–राज्य आज कार्यविधि में लोकतांत्रिक हैः हंगरी के राष्ट्रपति विक्टर ओरबान का ''अनुदार लोकतंत्र'' को समर्थन भी लोकतंत्र के प्रति दिखावटी प्रेम की पेशकश करता है।

इस में से किसी भी का मतलब यह नहीं है कि चिंता का कोई कारण नहीं हैः यूरोप के छिपे हुए करण्ट अंधेरे में हैं, और सामूहिक मिजाज ऐतिहासिक समानताओं का आहवान करते हैं। 1930 के दशक के जर्मनी के बारे में उनके मरणोपंरात प्रकाशित संस्मरण में सेबस्टियन हाफनेर आशा, मायूसी, डर और गुमराह क्रोध को हिटलर के उदय के लिए अविवादित प्रस्तावना के रूप पहचानते हैं। उसी तरह से आज यूरोप में अंधेरे मूड प्रबल हैं। फ्रांस में, हाल ही के राष्ट्रीय मतदान में उत्तरदाताओं ने ''विश्वास का अभाव, ''अवसाद' और 'निष्क्रीयता'' को उन गुणों के रूप में चिन्हित किया जो उनकी मनः स्थिति को शायद ही बेहतर परिभाषित करते हैं। ''उत्साह'' अन्त में आया– यह निष्कर्ष शायद ही आश्चर्यजनक है जब रूढिवादी पत्रकार एरिक जेमोर्स की पुस्तक फ्रेंच सुसाइड (le suicide francais) आज फ्रांस की सबसे ज्यादा बिकने वाली पुस्तक है।

आर्थिक संकट और मित्तव्यत्तता नीतियों की अनुपस्थिति में यह संभावना बहुत कम है कि वाम या दक्षिणपंथी चरम दल इतने आकर्षक होगें। 1970 के दशक के बाद से, हालांकि, आर्थिक नीतियों और पारस्परिकता की दृष्टि ने अच्छी तरह से काम नहीं किया है। उसी प्रकार, अप्रवास और एकीकरण की नीतियां जो या तो उन्नीसवीं शताब्दी के राष्ट्रीयवाद या बहुसांस्कृतिक आदर्शवाद का संदर्भ लेती है, को पुनःकल्पना करने की आवश्यकता है। वर्तमान क्षण से परे जाने हेतु, यूरोपीय नेताओं को सामाजिक सुदृढ़ता के नये स्वरूप जो सभी नागरिकों को संलग्न करें, की कल्पना और उन्हें लागू करने की आवश्यकता है। नेताओं द्वारा सामूहिक आशा की भावना – भविष्य की कल्पना करने की क्षमता को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है। आर्थिक अंशाकन आरम्भ करने के लिए एक स्थान है – परन्तु अकेले आर्थिक नीतियाँ पर्याप्त नहीं होगीं। यूरोपीय नेताओं को राजनैतिक क्षेत्रों, जो अभी भी कार्य क्षेत्र में राष्ट्रीय है, में समुदाय के अर्थ पर वास्तविकता से सोचने की जरूरत है। उन्हें इतने छिपे नहीं करण्ट के खिलाफ जाने होगा या फिर चार्ली हेब्दों जैसी घटनाओं द्वारा आगे निकलने की जोखिम को उठाना पड़ेगा। ■

मेनेल बेरेजिन से पत्र व्यवहार हेतु पता
<mmb39@cornell.edu>

> क्षेत्र से नोट्स :
यूरोप की डर की खेती

एलिजाबेथ बेकर, येल विश्वविद्यालय, यू.एस.ए.

एक मस्जिद में एलिजाबेथ बेकर उत्सवी माहौल में

नृवंशविज्ञान दूसरों की दुनिया में प्रवेश करने और उनके दैनिक जीवन का अवलोकन एवं उसमें भाग लेने पर जोर देता है। अभिलेखीय कार्य, सर्वेक्षण अनुसंधान या प्रयोगात्मक विधियों से भिन्न, नृवंशविज्ञान वास्तविक दुनिया की घटनाएँ जो अनुसंधान को रोक, पुनः निर्देशित या असफल कर सकती है, से असुरक्षित हैं। चार्ली हेब्दों पत्रकारों की हत्या के पश्चात यूरोप के तीन देशों में मस्जिदों के मेरे अध्ययन का ऐसा ही मामला था।

मैनें यूरोप के मुस्लिमों की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करने के लिए और यह समझने के लिए कि वे अपनी पहचान के साथ जुड़े कलंक का सामना कैसे करते हैं, मस्जिदों को अपनी नृवंशविज्ञानी साइट के रूप में चुना। मैं मुस्लिमों के दैनिक जीवन के बारे में अन्दर से, उनके दृष्टिकोण से और उनके प्रार्थना गृहों भीतर से जानना चाहती थी। मैं उनके दैनिक जीवन के बारे में , हमारे समय में इस्लाम के आसपास जटिल व्यापक राजनैतिक स्थिति का विश्लेषण करने के बजाय, मैं उनके दैनिक जीवन के बारे में भाग लेकर जानना चाहती थी।

बर्लिन, लंदन और मैड्रिड की मस्जिदों में प्रवेश के लिए निजी रूपांतरण की आवश्वकता थी। फैशनपरस्त और नारीवादी दोनों के रूप में, मुझे स्वयं की मेरी भावना का सम्मान करते हुए अपने आप को तथाकथित सम्मानजनक रूप से प्रस्तुत करने में काफी संघर्ष करना पड़ा। पहले,

> >

मैं गड़बड़ा गई और स्कार्फ मेरे चेहरे या जमीन पर गिर गया। और तथापि शीघ्र ही मैंने अपने आप को रेशम के स्कार्फ में ढंका, ढीला हिजाब पहने मध्य बर्लिन की बस में सवारी करते हुए, अलगेट ईस्ट लंदन में आराम से करी आर्डर करते हुए मेड्रिड में पडोसी मस्जिद से निकलते हुए पाया जिसने मुझे काफी तरेरों का सामना करना पड़ा। जैसे मैं मुस्लिम का जीवन जीने लगी, मुझे डर अपने विविध रूपों में महसूस हुआ।

मुझे उस जर्मन आदमी से डर नहीं लगा जो मुझे स्कार्फ पहने देख चकित हो कर साइकिल से गिर गया। न ही मैं दक्षिण पंथी प्रो. कॉलन आंदोलन ऊंची आवाज के साथ एक छोटा समूह जिसने कॉल्न के कैथोलिक शहर में एक बड़ी मस्जिद के निर्माण को रोकने की मांग की, से भयभीत थी। मैं निश्चित रूप से मस्जिदों से भयभीत नहीं थी। शोध के प्रारंभिक चरणों में जो डर मैंने अनुभव किया वह उन बूढ़ी मुस्लिम महिलाओं, जो यह नहीं समझ पा रही थी कि मैं उनकी मस्जिद में क्या कर रही हूँ, की परख के दौरान महसूस किया। मैं न तो अंदरूनी थी और न ही बाहरी; मैं सही प्रकार परन्तु बेमेल कपड़े पहने थी; मेरा निकाह मुस्लिम आदमी से हुआ था। ये महिलाएँ अक्सर मेरा स्कार्फ ठीक करती, एक और परत (मेरे कंधों पर अधिक मोटा स्कार्फ फेंककर) लगा देती, मेरी पतलून की मोहरी को नीचा कर और जुराबों को ऊँचा करती थी। उन्होंने मुझे ऐसे स्थान की सदस्या होने में मदद की जहां बाहरी व्यक्ति शायद ही रूकते हैं, अरबी अक्षरों के सीखने की तो बात ही छोड़ दो। वे मुझे फातमा बुलाना चाहती थी क्योंकि पहले यह नहीं समझ पाई कि एलिजाबेथ मस्जिद की रोजमर्रा के जीवन में भाग लेने से क्या चाहती है। वे मेरा दुबारा नामकरण करना चाहती थी, अपने सुरक्षित स्थानों की रक्षा और जिसके बारे में मुझे उनका स्वामित्व पता है, उसके प्रति उनके दावे वो सुनिश्चित करना चाहती थी। तथापि ये प्रारंभिक डर मेरे क्षेत्र कार्य के लिए और एक शोधकर्त्ता के रूप में मेरे लिए छोटे और सांसारिक बने रहे जैसे ही मैंने विभाजित बर्लिन में दो दुनिया के किनारों पर संतुलन बनाने की कोशिश की।

मेरी दूसरी क्षेत्रीय साइट, लंदन के प्रसिद्ध बहुसांस्कृतिक मक्का में, मैंने अपने आप को और अधिक महसूस किया। मेरे और उन दोस्त महिलाओं के, जिन्होंने अपना पूरा जीवन प्रार्थना के आहवान के अनुरूप व्यतीत कर दिया, के मध्य की रेखा अधिक विशिष्ट प्रतीत होती थी। और तथापि, शायद विडंबना पूर्वक इस अन्तर ने उन्हीं रेखाओं को धुंधला होने दिया। मैं आसानी से इस पूरे समूह को 'अन्य' के रूप में चिन्हित कर आसानी से देख सकती थी। मैंने जानपहचान वाली महिलाओं के साथ हमारे बच्चों की चिन्ताएँ चटकारी करी का स्वाद और हमारी काफी अलग शैलियों के बावजूद एक सौन्दर्य बोध को साझा किया। इन्हीं महिलाओं ने मेरे मस्जिद में आने के वास्तविक कारण पर भी पूछताछ की और अधिकांश इस बात के प्रति आश्वस्त थीं कि मेरा अकादमिक लक्ष्य गर्भ में पल रहे मेरे बच्चे के प्रति चिंता से गौण था।

चार्ली हेब्दों के हमलों से एक सप्ताह पहले मैं मेड्रिड पहुंची और मैंने वहां कैफे कान लेचे और रेटिरो पार्क में पैदल घूमकर मजा लिया। मेरी मस्जिद का शोध धीमे शुरू हुआ। जब मैने स्थानीय लोगों से मस्जिद के बारे में पूछा, अधिकांश ने प्रश्नवाचक आंखो से पूछा। ''क्या यहां मेड्रिड में मस्जिद हैं? क्या तुम्हारा मतलब कोरडोबा है? मुझे ऐसी जवाब मिलें जो कि वास्तविक दुनिया से गंभीर विरक्ति का सुझाव देते हैं। जब मैनें सिर्फ मुस्लिम महिलाओं से पूछा, वे हंसी और बोली, ''मस्जिदें शहर के मध्य में नहीं हो सकती, वे राजधानी में कभी नहीं हो सकती हैं।'' मैंने महसूस किया कि स्पेन में मुस्लिम समुदाय के लोगों में लंबे समय से डर मौजूद है। यह पेरिस में हुए हमलों के कारण नहीं था, परन्तु इन हमलों ने उसे बढ़ा दिया। चार्ली हेब्दों के पहले, मेड्रिड के उत्तर में स्थित पहली मस्जिद जहाँ मैं गई, महिलाओं ने मुझे भगा दिया। मैंने सामूहिक घटनाओं में भाग लेने की मांग की और उन्होंने झूठमूठ कहा कि कोई थी ही नहीं। शहर के दक्षिण में दूसरी में, द्वार पर एक पुरूष ने पूछा कि क्या मुझे विश्वास था कि मैं सही जगह आई हूँ। जब मैंने हाँ कहा, वह मुझे प्रसन्नता से अपने बच्चों का अभिनय करते हुए देखती महिलाओं के एक समूह के पास ले गया। उन बच्चों ने हंसते हुए मेरे बेटे के गालों का चूमा और उनकी माएँ मुझे प्रश्नभरी निगाहों से देखती रहीं।

हालांकि, हमलों के बाद मस्जिदें संदिग्ध चेहरों के साथ भरी नहीं बल्कि लगभग खाली थी। हमलों के बाद के सप्ताह, एक छोटे सी जगह की मस्जिद जो सिर्फ प्रार्थना के लिए खुली थी में, मैं उन महिलाओं में मिलने के लिए अकेली बैठी थी जो कभी आई नहीं। शहर की सबसे बड़ी मस्जिद भी खाली होने लगी, नमाज के समय के अलावा उसका मुख्य कमरा बंद होने लगा। मैं अपने बच्चे के साथ पहुँची और वहाँ मुझे सिर्फ कुछ महिलाएँ मिली। दो बात कर रही थी, दो नमाज पढ़ रही थी, एक सो रही थी, इनमें से किसी ने मेरे अभिवादन का उत्तर नहीं दिया। डर की भावना मेरे अंदर तक पहुच गई और मैं जल्दी से मस्जिद से निकल गई। मेरे शोध के दौरान पहली बार मुझे महसूस हुआ कि कुछ बहुत गलत था।

मुझे मेड्रिड में डर मिला, जो चार्ली हेब्दों के पश्चात बढ़ गया और वह मस्जिदों के अन्दर और बाहर अचानक खालीपन और बढ़ी हुई सुरक्षा में दिखाई दिया। शहर के मध्य, पुयरता देल सोल – 'सूर्य का द्वार', पर क्लाशनिकोव लिए पुलिस के आदमी पहुंच गये और मेरे अपने बच्चे को सुलाने के दौरान साइरन की आवाज ने शहर की हवा को भेद दिया। स्पेन की दक्षिण पंथी पेगिडा आंदोलन (Patristic European against the Islamicitization of the West) की एक शाखा जो गत अक्टूबर में ड्रेसडेन में बनी, के नेतृत्व में एक मस्जिद के बाहर एवं स्थानीय कानून प्रवर्तन के मना करने के बावजूद भी हुआ। चार्ली हेब्दों के हमलों के बाद, देशभर और महाद्वीप की मस्जिदों की दीवारें, 'अपने देश वापिस लौटो' या यहां तक 'इस्लाम की मृत्यु' से रंग दी गई थी। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरे मस्जिद में घुसने से लोग मुझसे डरते थे, से संपर्क से परहेज करते हुए मेड्रिड में उनके द्वार के भीतर और बाहर दोनों के मध्य दूरी बढ़ा रहे थे। वे मेरी उपस्थिति पर सवाल खड़े कर रहे थे। अकस्मात उन्हें लगने लगा कि मेरे इरादें अहानिकारक नहीं हो सकते, और यह कि मैं वहाँ अपने शोध, अपने बच्चे या फिर अपने लिए के लिए नहीं हो सकती थी।

पेरिस में हमलों के बाद ही मैं अपने शोध को रोकने के बारे में विचार करने लगी। ऐसा इस डर से हुआ कि मैंने अपने समक्ष प्रस्तुत होने वाली राजनैतिक स्थिति को कमतर आँका था। मेरा विचार, मस्जिद में आने वालों के सामाजिक और सांस्कृतिक संसार में से राजनैतिक को अलग करने का था। यर्थाथ में, राजनैतिक ने इन सामाजिक और सांस्कृतिक संसारों को बुरी तरह से हिला दिया और मुझे उसके (अन्दर) साथ। उनकी पृष्ठभूमि के बावजूद, मस्जिदों को धमकीयाँ मिली। पहली बार मुझे मस्जिद में अन्दर जाने में डर लगा। चार्ली हेब्दों हमलों के बाद, अमरीकी मित्रों ने सउदी अरब में अपशब्द और ISIS द्वारा शुरु की गई, के बारे में मुझे लिखा और

>>

पूछा कि मैं इतनी गहराई से कैसे मुस्लिमों के साथ सहयोग कर सकती हूँ। क्या मैं शर्मिंदा नहीं थी? क्या मुझे डर नहीं था? मेरे दिमाग में स्पेनिश मुस्लिम युवाओं के समूह के साथ की गई बातचीत बार–बार आ रही थी जिसमें इन्होंने बताया कि दुनिया के अन्य कोनों में चरमपंथियों द्वारा किये गये अत्याचारों के खिलाफ उन्हें स्वयं का निरंतर बचाव करना पड़ता है।

मैंने मेड्रिड में भय पाया और उसने बर्लिन लौटते समय मेरा पीछा किया। स्कार्फ पहनने वाले मित्रों ने पेरिस के हमलों के बाद घर पर रहने के बारे में कहा, उन्होंने सबवे पर मिलने वाली अनिश्चित मुस्कान के बारे में कहा और कैसे वे यूरोप से बाहर जाने का विचार कर रहे थे। बर्लिन में पुराने तुर्की पुरूष चाय पीते हुए वापिस जाने की बात कर रहे थे (एक अलग समय के तुर्की को)। बर्लिन मे एक युवा मुसलमान बालक ने मुझे पेरिस के हमलों के हफ्तों बाद उसकी हिजाब पहनने वाली बहिन को स्थानीय बस में एक गैर–मुसलमान अपंग महिला को बस के प्लेटफार्म पर चढाने के मदद करते समय मिली धमकी के बारे में बताया। सवारियों ने रास्ता बनाने से मना कर दिया। बस में सवार एक पुरूष ने फुसफुसाए बिना और बिना शर्म के घोषणा की ''किसी को इसे भोंक देना चाहिए। एक महिने पश्चात उसी युवा बालक ने मुझसे पूछा कि उत्तर कैरोलीना में तीन मुसलमान युवाओं को क्यों मारा गया? आँखों में आँसू भरते हुए उसने अविश्वासपूर्वक कहा ''बिना किसी कारण के?'' ग्यारह वर्षीय रूबिक क्यूब गुरू सिर्फ फेरेरो रोशर चॉकलेट के लिए दीवाना – यह बच्चा भी भयभीत है।

हमारे संसार का वैश्विक मुख हम सब को, डर से भरा, असुरक्षित बनाता है। राष्ट्रवादी दक्षिणपंथी आंदोलन अन्य के इस भय का लाभ उठाती है और वे इस बात को मना करते हैं कि हम सब भिन्न संसारों के कगार पर रहते हैं। यहाँ, जर्मनी में दक्षिण पंथी पेगिड़ा आंदोलन नई ताकत के साथ ''इस्लामीकरण का विरोध करती है और सुझाव देती है कि ऐसे कई कई और है। चांसलर एंजेला मर्कल कह सकती हैं कि मुसलमान जर्मनी के निवासी हो सकते हैं और मैं उनके शब्दों के सांकेतिक महत्व को नकारती नहीं हूँ, परन्तु जो लटके चेहरे मैं देखती हूँ, पड़ोस की मस्जिदों के खिलाफ धमकियाँ सुझाव देती है कि अन्य आज यूरोप को लगातार परिभाषित करती है। यह धर्मान्धों के कृत्यों से किसी तरह अभी छुपी हुआ है – उन हत्यारों जिन्होंने चार्ली हेब्दों हमले किये से लेकर 1515 उग्रवादी जो लगातार क्रूर हत्याएँ करते रहते हैं।

चाहे शोधकर्त्ता हो या नागरिक, हम नहीं जानते कि इस बहु विभाजकारी भय, जब वह हमारे चमड़ी के नीचे घुसता है, से कैसे लड़े। बढ़ती असुरक्षा और बढ़ता संदेह हमारे मकसद में बाधा बनता है। हमें अपने पड़ोसियों – जो भिन्न प्रजातियों और संप्रदायों के हो, के साथ–साथ हाथ मिलाना चाहिए। हमें उग्रवाद से शिष्टतापूर्ण, उसी शिष्ट परम्परा के साथ जिससे हम बचाव करना चाहते हैं, लड़ना होगा। एक बाहरी व्यक्ति अन्दरूनी व्यक्ति के इन दो भिन्न संसारों को करती हुई मस्जिदों पर शोधार्थी के रूप में मेरा डर चार्ली हेब्दों हमलों के बाद लौकिक से अस्तित्व सम्बन्धी की तरफ परिवर्तित हो गया है। मैं भी स्वयं को पीछे जाता हुआ पाती हूँ उन सीमाओं से, जिन्हें मैं खत्म करना चाहती थी, से बंधा पाती हूँ, वे सीमाएँ जिनमें मैं विश्वास नहीं करती तब भी उनके आसपास संचालन नहीं कर सकती। ■

एलिजाबेथ बेकर से पत्र व्यवहार हेतु पता
<becker.elisabeth@gmail.com>

> पाकिस्तान में समाजशास्त्र की खोज

लैला बुशरा, लाहौर यूनिवर्सिटी ऑफ मैनेजमैंट साइंसेज, पाकिस्तान

पाकिस्तान में समाजशास्त्र पश्चिमी अर्थों में शायद ही एक स्थापित अनुशासन है। हमजा अलावी, जिनकी मुख्य कृतियां 1960 और 1970 के दशकों में प्रकाशित हुई थी, हमारे पहले और एकमात्र अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचाने जाने वाले समाजशास्त्री थे। अलावी के बाद, पाकिस्तान में कोई गंभीर समाजशास्त्रीय कार्य निकल कर नहीं आ पाया है या पाकिस्तान के बारे में लिखा गया है। इतिहासकारों, राजनीति वैज्ञानिकों और मानवविज्ञानीयों ने यहां महत्वपूर्ण योगदान दिये हैं और हाल ही में इस्लामिक उग्रवादी और पाकिस्तानी सेना और भू–राजनीति से इसके संबंध पर पुस्तकों की बाढ़ आ गयी है। परंतु सैध्दांतिक और आत्मजागरूक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य लापता है और पाकिस्तान में स्थानीय समाजशास्त्रीय संगठनों और शोध पत्रिकाओं का अभाव है।

पाकिस्तान के एकमात्र "वास्तव में मौजूद" समाजशास्त्र में कुल मिलाकर पांच समाजशास्त्री (तीन अमेरिका में और दो इंग्लैंड में प्रशिक्षित) शामिल है। लाहौर यूनिवर्सिटी ऑफ मैनेजमैंट साइंसेज कही जाने वाली एक निजी विश्वविद्यालय में पढ़ा रहे हैं। उन पांच में से दो ने अपना ध्यान शिक्षण और अनुसंधान से क्रमशः दर्शनशास्त्र और राजनीति विज्ञान की ओर मोड़ लिया है और एक वर्तमान में छुट्टी पर हैं। हमारे इतिहास और संदर्भ को देखते हुये निकट भविष्य में सुधार की उम्मीद करने की वजह बहुत कम है।

1990 के दशक के मध्य में, LUMS –पाकिस्तान का सबसे प्रतिष्ठित निजी बिजनेस स्कूल –ने देश का प्रथम चार–वर्षीय स्नातक कार्यक्रम शुरू किया जिसे केवल यूरोप और उत्तरी अमेरिका से प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा पढाया गया। इस तरह पाकिस्तान के अप्रभावी सार्वजनिक शिक्षा के विशाल सागर में महंगे अमेरिकी शैली के स्नातक कार्यक्रम एक छोटे द्वीप के रूप में उभरे। जबकि LUMS के कार्यक्रम उस समय सिर्फ अर्थशास्त्र और कंप्यूटर विज्ञान विषयों में प्रस्तुत किये गये थे, पाठ्यक्रम में कुछ मानविकी और/या सामाजिक विज्ञानों के कोर्स भी थे। हांलांकि, प्रमुख दो विषयों के विपरीत, मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के कोर्स अधिकतर आपूर्ति पर आधारित थे, और जुडे हुये प्रोफेसरों और पेशेवरों (जैसे राजनायिकों और मनोवैज्ञानिकों) द्वारा पढाये गये जो कि स्थानीय स्तर पर उपलब्ध होते थे।

शुरूआत से ही, छात्रों ने सामाजिक विज्ञानों के शिक्षण में पूर्ण नये दृष्टिकोण (पाकिस्तानी मानकों से) को सकारात्मक प्रतिक्रिया दी, हांलाकि वे प्राथमिक रूप से दो प्रतिष्ठित और पेशेवर रूप से आशाजनक विषयों के लिये LUMS आये थे। समय के साथ, सामाजिक विज्ञान धीरे–धीरे एक उपभाग से अलग विषय के रूप में विकसित हो गया, ऐसा प्राथमिक रूप से उन विद्यार्थियों की बढ़ती हुई संख्या को समायोजित करने के लिये हुआ जो कि अर्थशास्त्र और कंप्यूटर विज्ञान की कठिन आवश्यकताओं का पूरा करने में असमर्थ थे लेकिन फिर भी प्रतिष्ठित LUMS डिग्री पाना चाहते थे – और समर्थ – थे। विभाग ने भी परिसर में विद्यार्थीयों की संख्या में एक समग्र वृद्धि की व्यवस्था करने के लिये विस्तार किया।

LUMS का स्नातक कार्यक्रम अब बीस वर्षों का हो गया है और मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग ने एक लंबा रास्ता तय कर लिया है। विभाग के स्थायी सदस्यों के कोर समूह ने पाठ्यक्रम को परिष्कृत करने और केवल पश्चिमी डिग्री पर आधारित अविवेकी नियुक्ति के बजाय अनुशासनात्मक समूहों को एकीकृत करके अपनी स्वयं की स्थिति को परिभाषित करने में बहुत मेहनत की है। एकमात्र पूर्णकालिक समाजशास्त्री होने के कारण, मुझे मानवविज्ञानिकों के वृहद समूह द्वारा अपना लिया गया था। विभागाध्यक्ष जो स्वयं एक मानवशास्त्री थे, हाल ही में संकाय–विशिष्ट मुख्य विषयों को सामान्य सामाजिक विज्ञान मुख्य विषयों की जगह चलाने में सफल रहेः मनोविज्ञान और दर्शनशास्त्र के छोटे विषयों सहित राजनीति और अर्थशास्त्र, राजनैतिक विज्ञान, नृविज्ञान–समाजशास्त्र, इतिहास और अंग्रेजी। हम हर वर्ष कम से कम एक अंतःवैषयिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करते हैं और अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों के साथ सहयोग करते हैं। परंतु हम प्रशासनिक विरोध सहित नयी चुनौतियों के साथ साथ, शिक्षक आपूर्ति और विद्यार्थी मांगों की पुरानी समस्याओं से ग्रसित हैं।

शोध और निजी कारणों से जो मुठ्ठीभर शिक्षक पाकिस्तान में स्थित है, के अलावा, हमारे अधिकतर कर्मचारी LUMS में शिक्षण को परिवर्तनकालिक कार्य के रूप में देखते हैं जब वे यूरोप और अमेरिका, और हाल ही में, पूर्वी एशिया और मध्य–पूर्व में, बेहतर अवसरों की तलाश कर रहे होते हैं। कई शिक्षक विदेशों में अल्पकालिक सहायक

>>

"हम समाजशास्त्र के बिना परन्तु समाशास्त्रीय विश्लेषण की तत्काल आवश्यकता वाला एक देश।"

पदों पर काम करते हेतु एक स्थायी नौकरी पाने की उम्मीद में कार्य से लंबे अवकाश ले लेते हैं।

उच्च प्रशासन शिक्षकों के आने–जाने को वास्तव में एक गंभीर समस्या नहीं मानते हैं। उनका पसंदीदा मॉडल होगा व्यापक असंरचनात्मक सामाजिक विज्ञान विषय जो कि विशिष्ट विषयों और शिक्षकों पर आधारित ना हो और संभवतः पूरी तरह से सहायक और विजिटिंग शिक्षकों से चलाया जा सकता हो। वास्तव में, LUMS के केन्द्रिय प्रशासन ने दो वर्षों तक किसी नये विषयों शुरू नहीं किया और उनकी हमारे संकायों के प्रति सम्मान में कमी, विद्यार्थी मांगों की प्रवृत्तियों से नियमित रूप से सुदृढ होती है। हमारे पास कभी भी रूझान रखने वाले विद्यार्थीयों की कमी नहीं है परंतु कुछ ही मजबूरी की बजाय मर्जी से इस रूझान को प्रतिबध्दता में परिवर्तित करना चाहते हैं। साल दर साल, प्रवेश के समय प्रशासन हमें विद्यार्थीयों द्व ारा दी गयी विषयों की वरीयता के आंकडे भेजता है और हमारे विषय सबसे नीचे स्तर पर होते है। इस स्तर में केवल इतिहास विषय ही मानवविज्ञान–समाजशास्त्र के पीछे होता है। हमारे पाठ्यक्रम भारी संख्या में चुने जाते है पर हमारे विषयों का चुनाव एक विकल्प के रूप में ही रहता है।

एक सफलता का दावा हम यह कर सकते है कि कई विद्यार्थी स्नातक स्कूलों में आवेदन के समय हमारे संकाय में परिवर्तित हो जाते हैं और उनके दाखिले की दर लगातार प्रभावशाली रही है। यहां भी, हालांकि, विदेशों और स्थानीय मीडिया घरों, थिंक टैंक, और दाता संगठनों में नौकरीयों में पहुंच की आशा करते हुये, अधिकतर व्यवहारिक कार्यक्रमों का चुनाव करते हैंः विकास अध्ययन, मीडिया अध्ययन, जन नीति और हाल ही में शहरी अध्ययन। यह देखते हुये कि हमारे विद्यार्थी चतुर, प्रेरित और महत्वाकांक्षी हैं, वे इस तरह के व्यवहारिक चुनाव करते रहेंगें। मै आशा करता हूं कि हर साल एक या दो विद्यार्थी विशुध्द शैक्षिक निर्णय लेते रहेंगें और यह भी शायद ही समाजशास्त्र के पक्ष में होगा।

यदि पाकिस्तान समाजशास्त्र तक नहीं आ रहा है, तो शायद समाजशास्त्र पाकिस्तान तक आने के लिये अधिक प्रयास करना चाहिये। यदि उनके पास बेहतर कॅरियर विकल्प हैं मैं तो पाकिस्तानी नागरिकों सहित कई पश्चिमी प्रशिक्षित समाजशास्त्रीयों की यहां आकर बसने की परिकल्पना नहीं करता हूं और पाकिस्तान में वरिष्ठ समाजशास्त्रीयों को अस्थायी रूप से काम में लगाना भी मुश्किल है। 2008 से 2011 के मध्य, मैने विद्यार्थीयों और शिक्षकों को प्रेरित और परामर्श करने के लिये नामी विद्वानों को आमंत्रित करते हुये, एक अंतर्राष्ट्रीय वक्ता श्रंखला आयोजित की। हमें इतिहासकारों और राजनैतिक वैज्ञानिकों के साथ कुछ सफलता मिली, परंतु कई वरिष्ठ समाजशास्त्रीयों में से किसी एक ने भी हमारा निमंत्रण स्वीकार नही किया। हम आशा करेंगें कि भविष्य में युवा और वरिष्ठ दोनों समाजशास्त्री शैक्षिक घटनाओं के लिये हमारे निमत्रंण को अधिक सकारात्मक प्रतिक्रिया देगें। हमारे भाग पर, हमें वैश्विक कक्षा सहित ISA की पहलों में अधिक सक्रियता से संलग्न होने की जरूरत है।

परंतु शायद सबसे बडा वादा पूरे संसार के समाजशास्त्र के स्नातक विद्यार्थीयों के साथ है। पाकिस्तान न केवल संसार का सबसे खतरनाक देश है बल्कि सबसे गलत समझा गया देश भी है। इस राज्य और समाज के कम पहलूओं का व्यवस्थित ढंग से अध्ययन किया गया है। चुनौतीपूर्ण प्रबंधों पर कार्य की तलाश करने वाले स्नातक विद्यार्थीयों का पाकिस्तान पर काम करने का विचार अच्छा होगा। हाल ही के डॉक्टरेट स्नातक हमारे विश्वविद्यालय जैसे छोटे शिक्षण वातावरण में काम करने के लाभों पर भी विचार कर सकते हैं जैसेः प्रेरित विद्यार्थी, पर्याप्त शिक्षण स्वायत्तता, एक उचित शिक्षण कार्यभार, और अन्य विषयों के सहयोगियों के साथ कार्य करने के अवसर। हम समाजशास्त्र के बिना एक देश हैं परंतु समाजशास्त्रीय विश्लेषण की शीघ्र आवश्यकता वाला एक देश। ■

लैला बुशरा से पत्र व्यवहार हेतु पता
<laila@lums.edu.pk>

> पाकिस्तान में समाजशास्त्र के लिये संभावनायें

हसन जाविद, लाहौर यूनिवर्सिटी ऑफ मैनेजमैंट साइंसेज, पाकिस्तान

जब मैने पाकिस्तान में नौकरी की तलाश शुरू की, मै जानता था कि समाजशास्त्रीयों के लिये अवसर बहुत कम और काफी अंतराल पर थे। दुनिया भर के अन्य भागों की तरह, राज्य द्वारा विज्ञान और इंजीनियरिंग पर ऐतिहासिक जोर ने देश के अधिकतर विश्वविद्यालयों में सामाजिक विज्ञान और मानविकी को अपेक्षाकृत परिधीय स्थिति में ला दिया था। जहां पर समाजशास्त्र विभाग थे भी, वहां संस्थागत बाधाओं ने अक्सर स्थान की उपलब्धता को सीमित कर दिया था। उदाहरण के लिये, सार्वजनिक क्षेत्र में पाठ्यक्रम रूपरेखा में सरकारी दखल और सुरक्षित सरकारी नौकरी की प्रतिद्वंदिता से उपजी पेशेवर दुश्मनी के साथ अकादमिक स्वतंत्रता, एक ऐसे वातावरण का निर्माण करती है जो प्रभावी शिक्षण और शोध के लिये अनुकूल नही है। निजी क्षेत्र में, विश्वविद्यालय अधिकतर अर्थशास्त्र, व्यापार और सूचना प्रौद्योगिकी, सभी क्षेत्र जिसमें स्नातकों को बेहतर आर्थिक लाभ से जुडे है, में डिग्रीयों की मांग का फायदा उठाता है। सार्वजनिक और निजी, दोनों क्षेत्रों में शोध लगभग न के बराबर है, इसमें जुडने के बहुत कम फायदे और बहुत कम संस्थागत सहयोग के साथ।

इस संदर्भ में, मैने लाहौर यूनिवर्सिटी ऑफ मैनेजमैंट साइंसेज (LUMS), निजी क्षेत्र में पाकिस्तान के श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में से एक है और देश के कुछ स्थानों में से एक जो सामाजिक विज्ञानों और मानविकी को सहयोग करने की स्पष्ट प्रतिबध्दता रखते है, में एक पद के लिये आवेदन किया। जब मैने LUMS मे आवेदन किया था तब इसके सामाजिक विज्ञान और मानविकी स्कूल पुर्नसरंचना के दौर से गुजर रहे थेः जहां पहले विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान में स्नातक की डिग्री प्रस्तुत कर रहा था जिसमें विद्यार्थी विभिन्न संकायों से पाठ्यक्रमों की एक श्रंखला का चुनाव करते थे, अब अधिक विशेषज्ञ संकाय–विशिष्ट डिग्री को प्रस्तुत कर रहा था यद्यपि मैने समाजशास्त्र में एक पद के लिये आवेदन किया था, मुझे राजनीति विज्ञान के नवीन रूप से गठित विभाग में शामिल होने के लिये कहा गया।

राजनीतिक और ऐतिहासिक समाजशास्त्र की मेरी पृष्ठभूमि, और दक्षिण एशिया के राज्य, वर्ग और लोकतांत्रिकरण से संबंधित प्रश्नों में मेरी रूचि को देखते हुये, राजनैतिक विज्ञान विभाग में काम करने की संभावना में मुझे कुछ भी समस्यात्मक नहीं लगता। राजनैतिक विज्ञान में, जगह और अतिरिक्त शिक्षक की जरूरत, दोनों ही थी; अर्थशास्त्र और वित्त के बाद, हर साल 150 नये स्नातकों के आवेदनों के साथ, राजनीति विज्ञान LUMS में सबसे अधिक लोकप्रिय कार्यक्रम था। इसके विपरीत समाजशास्त्र और मानवविज्ञान का संयुक्त कार्यक्रम जो सामान्यतः 10 से 20 नये विद्यार्थी आकर्षित करता है। हालांकि इसे व्यापक (यदि सही हो आवश्यक नही है) धारणा के माध्यम से समझाया जा सकता है कि राजनीति विज्ञान अन्य सामाजिक विज्ञान की डिग्रीयों की तुलना में बाजार में अधिक प्रचलित है, शिक्षक भर्ती पर इसका प्रभाव स्पष्ट है। विद्यार्थीयों की बढ़ती संख्या को छोड़, समाजशास्त्र जैसे कम प्रचलित संकायों की हाशिये पर, कम स्टाफ और कम वित्तिय सहायता वाला रहने की संभावना अधिक है।

पाकिस्तान में काम करने की अपनी कुछ समस्यायें हैं। यहां तक कि अपेक्षाकृत विशेषाधिकार वाले स्थान जैसे LUMS –जिसने स्वतंत्र अभिव्यक्ति और बहस के बचाव के लिये सराहनीय काम किया है– के लिये अकादमिक और विद्वत्तापूर्ण संसाधनों की कमी, शोध के लिये अपर्याप्त सामग्री और संस्थागत सहयोग, और स्नातक विद्यार्थीयों और कार्यक्रमों का अभाव से संघर्ष करना अक्सर आवश्यक है। ये कठिनाईयां समान संकाय ढांचे में साथियों और सहयोगियों के एक व्यापक समुदाय के अभाव से मिलकर और बढ जाती है।

पाकिस्तान, औपनिवेशिक शासन की विरासत से लदा हुआ, तीव्र शहरीकरण और आर्थिक परिवर्तन का सामना करता हुआ, अनियंत्रित और विवादास्पद राजनीति से लोकतंत्र की ओर परिवर्तन से होते हुआ, सामाजिक और राजनैतिक गतिशीलता के नये प्रतिमानों के उद्‌गमन का साक्षी बनता हुआ, लगभग 200 मिलियन लोगों का एक बहुजातिय, बहुधार्मिक देश है। यद्यपि, विशेषतः 9/11 के परिणामस्वरूप, पाकिस्तान में शोध इस्लाम और आंतकवाद के चारों ओर घूमता है। जैसे–जैसे अधिकाधिक धन इस तरह के विश्लेषणों की ओर केन्द्रित किया गया और शोधकर्ताओं की अधिक संख्या ने अपना समय और ऊर्जा इन प्रश्नों में लगायी, शोध के अन्य क्षेत्रों और छात्रवृत्तियों में इसी के अनुरूप गिरावट आयी है। इसका मतलब है कि राजनीति विज्ञान में, ज्यादातर विभाग अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और सुरक्षा अध्ययन की ओर अधिक उन्मुख हुये हैं। इसी समय, मात्रात्मक विधियों और शोध पर जोर ने विदेशी

>>

> “सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में सामाजिक अनुसंधान वस्तुत: न के बराबर है।”

दानदाता संगठनों और सरकारी योजना आयोगों के साथ साफ तौर पर सामंजस्य बिठा लिया; पाकिस्तान में अधिकतर सामाजिक शोध "नीति–प्रासंगिक" प्रश्न के चारों ओर घूमता है जो कि जाहिर तौर पर अर्थमितिय मॉडल का प्रयोग करते हुये सिर्फ अर्थशास्त्रीयों द्वारा संबोधित किया जा सकता है। सारी जटिलताओं और विविधताओं के लिये, पाकिस्तान को अक्सर हिंसक धार्मिक अतिवाद के केंद्र से कुछ अधिक ही समझा जाता है, जिसकी शासन समस्यायें विशिष्ट नीति प्रस्तावों के समीकरणों के प्रभावी प्रदर्शन के द्वारा ही हल की जा सकती हैं। यह पूर्वाग्रह पाकिस्तान पर हाल ही में प्रकाशित कार्यों में प्रतिबिंबित होता है; यहां तक कि वामपंथी राजनीति और कृषक राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर पुस्तकों के शीर्षकों और व्याख्यानों में स्पष्ट रूप से अपना काम निकालने के लिये इस्लाम का उपयोग करती है।

राजनीति विज्ञान विभाग में काम करने वाले पाकिस्तान में एक समाजशास्त्री के रूप में, मैने अधिकाधिक पाया कि शोध, अनुसंधान, समाज और सिध्दांत के बारे में सिर्फ बातचीत ही उन मापदंडों के अंदर आ सकती है। मेरे स्वयं के काम में, हालांकि, मैने दक्षिण एशिया के घोषित अभिजात वर्ग और राज्य के मध्य संबंधों का अवलोकन किया है। कैसे औपनिवेशिक–काल की संस्थाओं और हस्तक्षेप प्रमुखतः कृषक अर्थव्यवस्था में, संपत्ति–मालिक वर्गों की समय के साथ अपने हितों को स्पष्ट करने और आगे बढाने की क्षमता पर चिरकालिक प्रभाव डालते हैं। पाकिस्तान की समकालीन लोकतांत्रिक राजनीति पर इन प्रतिमानो का प्रभाव जांचने मे मेरी रूचि है और मैं यह विश्लेषण करने में भी दिलचस्पी रखता हूं कि कैसे जबरदस्त आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों के बीच अभिजात वर्ग की शक्ति पुनरूत्पादित और पुनःआकार पाती है।

इस्लाम और नीति से स्पष्ट कड़ी के अभाव में, हालांकि, इन प्रश्नों में रूचि सीमित रहती है। ऐसा ही जातीयता, लिंग, और शहरीकरण सहित अन्य मुद्दों के लिये भी कहा जा सकता है। इसके अलावा, समाजशास्त्री अपनी अनुपस्थिति द्वारा प्रसिद्ध रहते हैं। मेरी तरह के प्रश्नों में दिलचस्पी रखने वाले सहयोगियों और साथियों की तलाश में, मैने अपने आप को अर्थशास्त्रीयों और राजनीतिक वैज्ञानिकों के बीच में काम करते पाया। जो, वे कर रहे थे उसमें बहुत अच्छे थे, फिर भी स्वयं के संकाय के दृष्टिकोण के साथ साथ दाता–संचालित अनुसंधान की व्यापक अनिवार्यताओं, और प्रश्न कैसे बनाये, शोध और उत्तर किये जाते है की संबंधित विषय की बाधाओं से बंधे हुये थे। पाकिस्तान में अनुसंधान और छात्रवृत्तियों के अन्य दो प्रमुख विषयों, इतिहास और मानवशास्त्र के मित्रों, ने समान समस्याओं के बारे में बताया परंतु फिर भी, उनके और मेरे संकायों में अवधारणात्मक और पद्धतिय दूरी निराशाजनक रूप से बड़ी है।

पाकिस्तान में समाजशास्त्र ने, अर्थशास्त्र और राजनीतिक विज्ञान जैसे संकायों जिनके दाताओं और सरकार के साथ मजबूत संस्थागत संबंध थे, को स्थान देते हुये, स्वयं को स्थापित करने के लिये संघर्ष किया है। इसके निकट भविष्य में परिवर्तन की संभावना कम ही हैः बाजार की शक्तियों और वैश्विक राजनीति की अनियमितताओं जिन्होंने पाकिस्तान में समाजशास्त्र को कमजोर किया है, ने कई होनहार स्नातक विद्यार्थियों को देश और विदेश में वैकल्पिक विषयों में अपना कॅरियर बनाने के लिये भी आगे बढ़ाया है। फिर भी, पाकिस्तान रोचक और चुनौतीपूर्ण प्रश्नों पर काम करने की आशा करने वाले समाजशास्त्रीयों के लिये उपजाऊ भूमि बना रहेगा। ■

हसन जाविद से पत्र व्यवहार हेतु पता
<hassan.javid@lums.edu.pk>

> अल्रिच बैक
सार्वभौम उद्देश्य[1] वाले यूरोपीय समाजशास्त्री

क्लॉस डोरे, फ्रेडरिख–शिलर–विश्वविद्यालय, जेना, जर्मनी एवं आईएसए की समाजशास्त्रीय सिद्धान्त (RC16), कार्य का समाजशास्त्र (RC30), श्रमिक आन्दोलन (RC44), और समाजिक वर्ग और समाजिक आन्दोलन (RC47), की शोध समिति की सदस्य

आईएसए की फ्यूचरस रिसर्च की शोध समिति (RC07) से 2014 में फ्यूचरस रिसर्च में सबसे अधिक उत्कृष्ट योगदान के लिए लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड प्राप्त करते हुए अलरिच बेक

अल्रिच बैक की 'रिस्क सोसाइटी' के प्रारंभिक प्रकाशन ने जर्मनी में बौद्धिक भूकंप को प्रारम्भ किया। बैक अपनी विवादास्प्रद स्थिति कि सामाजिक वास्तविकता अब समाजशास्त्रीय शब्दावली से संपर्क नहीं करती है पर दृढ़ता से डर रहे। उनका तर्क है कि (आधुनिकता की नयी विभन्नता की तरफ अद्ध–क्रांतिकारी झुकाव हुआ है), जो औद्योगिक आधुनिकता के संस्थागत खोल में अखण्ड प्रतीत होने वाले होता हुआ प्रतीत होता है; जो कोई भी इस स्थान्तरण को पूरी तरह से समझने को इच्छुक है उन्हें प्रभावशाली 'मार्क्स–वेबर आधुनिकीकरण मतैक्य' को और उसकी रैखिक प्रास्थानापाओ को तोड़ना होगा। बैक ने आधुनिकता की मुख्यधरायी समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों को –विशेषकर पूँजी संचयन की प्रक्रिया (मार्क्स) या तार्किकीकरण और नौकरशाही (वेबर) में रैखीय वृद्धि– को 'अधि वैयक्तिक बाधायें' माना है, जो समाजिक कर्त्ताओं के लिए व्याकरण बताता है, जिसको सभी सामाजिक क्रियायें माने ऐसी अपेक्षा की जाती है। उन्होंने तर्क दिया कि परिवर्त आधुनिकीकरण के सिद्धान्त को रैखिकता की मान्यताओं से अलग होना होगा और उन्हें स्व–खतरे के तर्क : ''आगे का आधुनीकरण औद्योगिक समाज के आकार को विलीन कर रहा (है)'' से प्रस्थापित करना होगा। ''आधुनीकरण की स्वायत्र प्रक्रिया के दौरान, औद्योगिक समाज पर अतिक्रमण होने लगा यहाँ तक कि उसे नष्ट कर दिया, जैसे औद्योगिक समाज आधुनीकरण ने प्रस्थिति आधारित समाज और जागीरदारी समाज को वि–स्थापित किया और अपने आपको पुनः स्थापित किया।''

बैक ने तीन तरह के घटना क्रम को भिन्न आधुनिकता के परिवर्तन के सूचक के रूप में माना। प्रथम– औद्योगिक उत्पाद के अनदेखे परिणाम, जो बैक के विचार से इतिहास के प्रमुख चालक बल के रूप में कार्य कर रहे हैं। पर्यावरणीय रिस्क और उनके अपरिवर्तनीय परिणाम एक गंभीर वैश्विक चेतावनी का निर्माण करते हैं। एक ''लोकतांत्रिक अलबेट्रोपफेहनहाइट,'' एक ऐसी चेतावनी जो हम सब से सम्बन्धित है और जो अन्ततः पूँजीपतियों और श्रमिकों में कोई भेद नहीं करती। 'संपत्ति वितरण तर्क' के उत्तरोत्तर आगे बढ़ कर बैक ने तर्क दिया कि रिस्क के 'लोकतांत्रिक वितरण के तर्क' को अब ज्यादा समय तक वर्ग संघर्ष, प्रकार्यात्मक, विभेदीकरण या तार्किकीकरण के आधार पर नहीं समझा जा सकता। जैसा कि बैक ने कहा : गरीबी संस्तरित है, और धुऑ लोकतांत्रिक! द्वितीय, यह पर्यावरणीय सामाजिक संघर्ष सामाजिक असमानता के वैयक्तिकरण के साथ कार्य करता है। सामाजिक समूहों के बीच का अन्तर जहॉ एक ओर युद्ध के बाद के दशकों में कम नहीं हुआ, वह एक या अनेक स्तरों पर एक तरह से 'एलीवेटर एफेक्ट' के रूप में बढ़ता है (पफेहरसटुहली–इफेक्ट) सबसे गरीब के पास भी औसत रूप से, पूर्व पीढ़ी से ज्यादा है और वो व्यक्तिगत चुनावों के श्रंखला में से चुनाव कर सकता है।

रूढ़िवादी सामाजिक वातावरण धीरे–धीरे नष्ट हो गया वर्ग और स्तर अब ज्यादा

>>

समय तक व्यक्ति के जीवन में अनुभव नहीं किये जा रहे है और अतः वे सिर्फ सांख्यकीय आंकड़े हैं जीवन अनुभव के सामाजिक पहलू में। व्यक्ति उत्पादन की आखरी उत्पादक ईकाई के रूप में रहता है। उसे जबरदस्ती अपनी जीवनी के पेचवर्क का योजना केन्द्र बनना पड़ता है, अन्यथा वह स्थायी हानि की रिस्क उठा सकता है। व्यक्ति को वर्ग, स्तर या लिंग भूमिका के सामाजिक रूप से मुक्त किया जाता है और उसकी जगह उसे सामाजिक संरचना के व्यावहारिक बाधाओं में डाला जाता है।

यहॉ पर, जिसे बैक तीसरा विकास कहते है, सिविल सोसाइटी की उपराजनीति का उदय होता है। जो औद्योगिक उत्पाद के अनदेखे परिणामों के रूप में, राजनीति और अराजनीति के मध्य की रेखा को खत्म कर देती हैं। विज्ञान–प्रौद्योगिकी प्रगति समाज वर्ग की वैद्यता और न्यायोचितता के लिये जवाबदेह है। इस बात से कोई अन्तर नहीं पड़ता कि वस्तु परमाणु शक्ति है या जेनेटिक ऐन्जीनियरिंग, विशेषज्ञों को वैकल्पिक हमेशा 'सामान्य आदमी' से तर्क वितर्क करने के लिये ज्ञान के साथ तैयार रहना चाहिये। इस प्रकार पर्यावरणीय सामाजिक संघर्ष संपूर्ण रूप में राजनीतिक समन्वय तंत्र को परिवर्तित करते हैं। वाम और दक्षिण पंथियों के मध्य पुराना अन्तर अब स्पष्टतः नाजुक हो रहा है। नव दक्षिणपंथी सर्वग्राही, अनियंत्रित बाजार शक्तियों को खोल देना का समर्थन करते हैं, जबकि पर्यावरणीय रूप से अभिज्ञ नव वामपंथ संरक्षण के रूढ़िवादी सिद्धांत को प्राकृतिक वातावरण पर लागू किया है जो हमेशा प्रक्रिया में रहे है और जिनका सामाजीकरण हुआ है। पर्यावरण आन्दोलन और ग्रीन पार्टी के उदय से, और साथ ही अन्य राजनैतिक शक्तियों के कार्यक्रम में परिवर्तन, ने कुछ हद तक विकास को प्रदर्शित किया है, को राजनीति और अराजनीति के बीच की रेखाओं को परिवर्तित करने के लिये जिम्मेदार माना गया है अपने पूरे कैरियर में, अलरिच बैक ने कभी–कभी 'रिस्क सोसाइटी' की कोर थीसिस को नया रूप देने की कोशिश की है और सबसे ऊपर उन्होंने उसे संशोधित किया है। अन्ततः वो उनके साथ अन्त तक खड़े रहे। जबकि 'रिस्क सोसाइटी' एक जर्मन किताब थी, विशेष तौर समाजिक रिस्क के वैयक्तिकरण वाला खण्ड बैक शीघ्र ही विश्व रिस्क सोसाइटी को सम्बोधित करने के लिए बढ़े, जो पर्यावरण चेतावनी के वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप उदय हुआ। बैक नियमित रूप से 'पद्धतीय राष्ट्रवाद' के विरूद्ध तर्क दिया जिसे उन्होंने समाजशास्त्र में व्यापक माना। उसकी जगह उन्होंने 'सार्वभौम परिप्रेक्ष्य' की अवधारणा की पैरवी की जो पार–राष्ट्रीय जगहों और क्रास बॉडर उप–राजनीतिक को (विश्व रिस्क सोसाइटी के जटिल विस्थापन के बावजूद भी) अपने खाते में लेती है। परावर्तन आधुनिकतावाद के सिद्धान्त जो समसामयिक समाजों के सैद्धान्तिकरण के लिये काफी है, के निर्माण के प्रयासों में अल्रिच बैक को जल्द ही साथी मिल गये, जैसे एन्थोनी गिडिन्स, स्कोट लेश और ब्रूनी लेटॉर। अगर हम बैक के योगदान के शुरूआती स्टोक ले तो पर्यावरण सामाजिक संघर्ष पर उनके समाजशास्त्रीय लेख उनके कार्य के श्रेष्ठ आयाम को प्रदर्शित करते हैं। पर्यावरणी रिस्क की परिभाषा और 'खतरे की विपरीत शक्तियों' पर चर्चा में उनका विमर्श काफी ज्यादा चर्चित है। पर्यावरण परिवर्तन से संबंधित रिस्क आज युद्ध और राजनीतिक वार्ताओं के केन्द्र स्थिति लिये हुये है हालांकि उनको अस्थायी रूप से दर किनार कियाजा सकता है पर निश्चित रूप से सामाजिक मुद्दों के रूप में वे ज्यादा शक्ति के साथ सामाजिक उथलपुथल के रूप में आयेंगे।

बैक की स्थायी सफलता है कि उन्होंने यथार्थ को पहचाना और उसका समाजशास्त्रीय शब्दावली में अनुवाद किया। यह सही है कि 'वर्गविहीन पूॅजीवाद' की उनकी पहचान पर ('वर्ग की वापसी' से) आज प्रश्न चिन्ह लग रहा है, क्योंकि देशों के मध्य आर्थिक असन्तुलन के कि कम होने से देशों के मध्य वर्ग अधिक स्पष्ट हो जाता है। सामाजिक विस्थापन, घटती हुयी वृद्धि दरें और पर्यावरणीय महावरणीय महाविपात्रि ने 'धन सम्पदा वितरण तर्क और आपदा वितरण के तर्क' को और रिस्क वितरण के तर्क को आर्थिक पर्यावरणीय 'पिंसर आपदा' के अन्तः चालको के रूप में परिवर्तित कर दिया। शीर्ष पर उत्थापन यंत्र को एक प्रकार के 'पेटेरनोस्टर अफेक्ट' से प्रतिस्थापित कर दिया गया, एक समूह का उत्थान इसलिये क्योंकि वो दूसरे समूहों को नीचे भेज रहा था।

जहॉं अल्रिच बैक ने इन विकासों को स्पष्ट रूप से देखा (जो पूॅंजीवाद के शास्त्रीय सिद्धान्तों के तत्वों की चल रही प्रासंगिकता को दर्शाते हैं) वे अ–परम्परागत वर्ग संरचना के विश्लेषण को अनिच्छुक थे। तब भी बैक में 'जेइटगिस्ट' (नये और अप्रत्याशित विकास के लिये) के लिये असाधारण समझ–बूझ थी। हाल ही में, सार्वभौम और लोकतांत्रिक यूरोपिय के रूप में, बैक ने अपनी आवाज 'मरकियावेलिस्म', जिसने दक्षिणी यूरोप को आधीन किया, शाश्वत गुलामी के रूप में, के खिलाफ उठाई। इस प्रकार यह यूरोपिय विचार और उसके कार्यान्वित करने को चेतावनी दे रहा है।

अल्रिच बैक ने अपने पीछे एक गहरा प्रभाव डालने वाले बौद्धिक पदचिन्ह छोड़े हैं। उनके बिना, मैं निश्चित रूप से प्रथम स्तर पर समाजशास्त्री नहीं बन पाता। वो इतनी जल्दी चले गये और एक ऐसी खाली जगह छोड़ गये जिसे भर पाना असंभव हैं। जर्मन और यूरोपियन समाजशास्त्र को कुछ वक्त लगेगा, यह अहसास होने में भी, कि अल्रिच बैक के साथ क्या खोया है। परावर्तन आधुनिकरण का सिद्धान्त खण्डित हो गया। नवाचार विचार के लिये उसकी मौलिक क्षमता को फिर से घोषित करना, अल्रिच बैक की बुद्धिजीवी वसीयत को आगे विकसित करने का एक तरीका हो सकता है। ■

क्लॉस डोरे से पत्र व्यवहार हेतु पता
<Klaus.Doerre@uni-jena.de>

[1] Translated from German by Jan-Peter Herrmann and Loren Balhorn.

> लेटिन अमेरिका में अल्रिच बेक

एना मारिया वारा, सेन मार्टिन कानेश्ल राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, अर्जेंटीना एवं आईएसए की पर्यावरण एवं समाज शोध समिति (RC24) की सदस्य

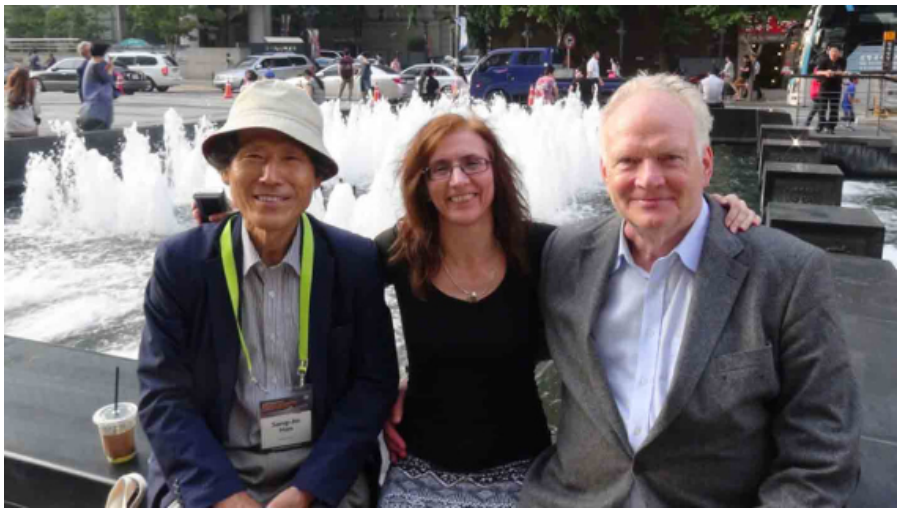

एना वारा और सेंग–जिन हान के साथ अल्रिच बेक

लेटिन अमेरिका में अल्रिच बैक के कार्य के असर का आकलन किस प्रकार किया जाय? वह कार्य जो मानव समाज, पर्यावरण और प्रौद्योगिक विज्ञान के ज्ञान को नाटीकी और उत्तम तरीके से जोड़ता है। इनके कार्य को उपमहाद्वीप के नागरिकों, समाज वैज्ञानिकों को काफी कुछ कहना है जो उसकी प्रकृति और औद्योगिकरण को अनसुरण सम्बन्धित से प्रायः परिभाषित होता है।

बैक के द्वारा विकसित की गयी 'रिस्क सोसाइटी' की अवधारणा, जो पिछले तीन दशकों से उनके लेखन में है, और लेटिन अमेरिका की निर्भर स्थिति के बारे में धारणा है, के बीच गहरा संबंध है। यह धारणा बींसवी सदी के शुरूआती दशको में इस प्रांत के लेखकों और बुद्धिजीवियों द्वारा विकसित की गयी। इसका उद्देश्य लेटिन अमेरिकन देशों के आजादी के बाद की नव–उपनिवेशवाद स्थिति को दर्शाना था। इस विमर्श के द्वारा प्रगति की आड़ में छिप कर प्राकृतिक संसाधनों के निर्ममतापूर्वक दोहन का राज उजागर हुआ। यह कार्य परदेशी कर्त्ताओं के द्वारा, जिनके साथ स्थानीय संभ्रात वर्ग सम्मिलित था, किया जा रहा था। यह सामान्य ज्ञान बना और 1970 के 'निर्भरता सिद्धान्त' और 'दोहनतावाद' और 'नवदोहनवाद' पर समसामयिक चर्चा के सैद्धान्तिकरण के पीछे था। हम बैक के सिद्धान्तवाद और इस विमर्श के बीच सीधे संपर्क की बात नहीं कर सकते है, पर वह संवाद जो एक दूसरे को प्रकाश में लाता है, उसके मुख्य तर्क को मैं यहॉ पुनः चिन्हित करना चाहूँगा।

बैक के रिस्क का एक बुनियादी लक्षण है, कि यह 'प्रौद्योगिकी–आर्थिकी विकास' का एक अवश्यम्भावी सह उत्पाद है (1992:20) ने इस प्रक्रिया की दो मुही प्रकृति की तरफ ध्यान खींचा। बैक के शब्दों में 'बुराई' जो औद्योगिकरण की अच्छाई का नतीजा है लेटिन अमेरिका के उन क्षेत्रों में अधिक दिखाई पड़ते है, जो इस प्रक्रिया को भड़काने के लिये प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध करवाते है, जिनका सामाजिक और पर्यावरण संबंधी असर बाद में घटित होता है। 'रिस्क' के वितरण संबंधी समस्या भी असमानता चिन्हित इलाकों में अधिक स्पष्ट और नैतिक रूप से अकाट्य है। इस प्रकार, बैक का सिद्धान्त, इस प्रांत की लंबे समय से चली आ रही इस प्रघटना को समझने में निर्णायक भूमिका निभा रहा है।

साथ ही, यूरोप और यू. एस. में 'रिस्क सोसाइटी' को उस कार्य के रूप में सबसे ज्यादा पढ़ा जा रहा था जो रिस्क के 'लोकतांत्रिक' लक्षण की बात करता है, इस तथ्य पर बल डालता है कि उन रेखायों को नहीं खींचा जा सकता जिनमें अम्ल वर्षा और रेडियोएक्टिव बादल हो, जिनका उद्भव चेरनोबिल में हुआ था। यद्यपि बैक प्रारम्भ से ही रिस्क और शक्ति के बीच संबंध को लेकर और देशों के अन्दर और उनके मध्य रिस्क के असमान वितरण को लेकर सचेत थे। भारत की भोपाल आपदा और ब्राजील के वृहद रूप से प्रदूषित विला पारिसी कस्बे को ध्यान में रखते हुये उन्होंने लिखाः

> विश्वभर में 'रिस्क पोजीशन' का समानीकरण (रिस्क में निहित नई सामाजिक असमानताओं पर) हमें भ्रमित करने वाला नहीं होना चाहिये। यह मुख्यतः वहाँ उठता है जहाँ रिस्क स्थिति और वर्ग स्थिति एक दूसरे को परस्पर ढकते है, वह भी अंतराष्ट्रीय पैमाने पर वैश्विक रिस्क समाज का सर्वहारा वर्ग–धुँआ उड़ाने वाले, जो रिफाइनरिस और रसायनिक फैक्ट्री जो तीसरे देश का औद्योगिक केन्द्र है के बाद आती है के, नीचे दबा है। (1992:41)

> >

तथापि, शुरू में बैक सोचते थे कि थोपी हुयी रिस्क को विकासशील देशों के नागरिकों ने विकास के मूल्य के रूप में बिना सोचे समझे स्वीकार कर लिया, ''इन लोगों के लिये रसायनिक फैक्ट्री को उसके पाइप और टैंक के साथ जटिल रूप से स्थापित करना सफलता के महंगे चिन्ह है'' (1992:42)। परन्तु (लेटिन अमेरिका में बींसवी शताब्दी में विकसित) विमर्श को पढ़ने पर, इस तरफ इशारा होता है कि इस प्रकार के प्रोजेक्ट का विरोध काफी पहले से किया जा रहा था।

1930 में निकोलय गुइलिन, जो धीरे–धीरे क्यूबन क्रांति के आधिकारिक रूप से कवि बने ने अपनी कविता लिखी (शुगर केन)

गन्ने के खेत के समीप
काला आदमी
गन्ने के खेत के उपर
अमरीकी
गन्ने के खेत के नीचे

वो उन सामाजिक और पर्यावरण वाले विनाशकारी तरीको को बदनाम कर रहे थे जो उन दिनों में यू. एस. की कम्पनी क्यूबो को चीनी उत्पाद के लिये प्रयुक्त कर रहीं थी।

अब तक हमने रिस्क के वितरण और उत्पादन के संबंध में बात की। (लेटिन अमेरिका में इन प्रक्रिया को समझने के लिये) रिस्क की परिभाषा स्वयं बैक का एक अन्य योगदान है। रिस्क स्वयं किससे निर्मित होती है, इसे परिभाषित करने की शक्ति किसके पास है? जो 'परिभाषा के संबंध' पर नियंत्रण करते है, वे भी शक्ति से लाभान्वित होने की स्थिति में होते है। विश्व रिस्क समाज में 'वैश्विक रिस्क में असमानता' पर बैक ने लिखा है:

> जो कोई भी विश्व रिस्क और सामाजिक असमानता के बीच के संबंध को बेपरदा करने की इच्छा रखता है, उसे रिस्क की अवधारणा की व्याकरण को दिखाना होगा। रिस्क और सामाजिक असमानता, वास्तव में रिस्क और शक्ति सिक्के के दो पहलू है। रिस्क निर्णय करती है इसलिये निर्णयकर्ता है, और उनके बीच जो निर्णय लेते है, रिस्क को परिभाषित करते है, उससे लाभ लेते है और वो जिनको ये दी जाती है, जिनको दूसरों के निर्णयों के अनदेखे परिणामों को भुगतना पड़ता है, यहॉ तक की अपनी जिंदगी से उनकी कीमत चुकानी पड़ती है, और उनको निर्णय करने की प्रक्रिया में कोई अवसर नहीं दिया जाता है के मध्य आमूलचूल असमानता को निर्मित करती है। (2014:115)

क्या यह सम्भव है कि इस स्थिति में परिवर्तन होगा? क्या यह सम्भव है कि शक्तिविहीन की भी भविष्य में कभी कोई सुनेगा, क्या लेटिन अमेरिका (जहॉ कुछ प्रक्रियायें अभी भी हो रही है) नव उपनिवेशवाद की परिस्थितियों से पार पा सकेगा। पिछले प्रकाशित लेखों में बेक ने दावा किया था कि 'विश्व का कायान्तरण' आजकल प्रगति में है जो कि 'बुरे के समारात्मक प्रभावों' का नतीजा है। यह ''हमारी कल्पना के परे परिवर्तन के पैमाने'' को बताता है और यह अधिकांशतः पर्यावरण के बदलाव का और किस प्रकार इसने हमें बदला है, ''विश्व में हमारे रहने के तरीके को, विश्व के बारे में हमारी सोच को हमारी राजनीति करने की और कल्पना करने के तरीके को बदला है, परिणाम है। (2015a:75-76)

हालाँकि उन्होंने 'निर्भरता सिद्धान्त' और 'सार्वभौम सिद्धान्त' के मध्य अन्तर पर बल दिया है, उन्होंने सचेत किया है :

> सिद्धान्त रूप से कार्यान्तरण, अधूरा, कभी न अन्त होने वाला, खुला हुआ और शायद उलटनीय वाला सिद्धान्त है। अगर शक्ति संबंध खुलते भी है, अगर ज्यादा समानता भी होती है और निर्भरता का समान वितरण होता है, क्या इसका अर्थ है कि सार्वभौम संबंध अब नव–साम्राज्यवाद की रणनीति के हथियार नहीं बनेंगे? नहीं, कदापि नहीं। सार्वभौम एक दिशायीय नहीं है। इस प्रकार यह साम्राज्यवाद शक्ति संरचना को पुनः लागू करने की संभावना शामिल करता है। (2015b: 122) मूल रूप पर जोर)

उन्होंने स्वीकार किया कि उनके 'उत्तर–उपनिवेशवाद' के कार्यान्तरण' पर विचार जैसे कि वो कहते है, 'अल्पविकसित' थे। (Ibid:121) उनकी अचानक से हुयी मृत्यु ने इस चिन्तन को बाधित किया। किसी भी हाल में, लेटिन अमेरिका में, समाज वैज्ञानिक और सामान्य नागरिक उनसे सीखते रहेंगे। यह महत्वपूर्ण है कि उनकी कई पुस्तकों (weltrisikegesellschaft, Fernliepee, Elisabeth Beck-Gernsheim vkSj Das deutsche Europa) का अंग्रेजी से पहले स्पेनिश में अनुवाद हुआ है। वो एक बुद्धिजीवी थे और जन चर्चाओं में क्रियाशील थे–एक ऐसे व्यक्ति जो हमारे क्षेत्र में माना हुआ है और हमारी प्रशंसा के तो दो कारण है। ■

एना मारिया वारा से पत्र व्यवहार हेतु पता
<amvara@yahoo.com.ar>

References

Beck, U. (1992) [1986] *Risk society. Towards a New Modernity*. **London: Sage Publications.**

Beck, U. (ed., 2014) *Ulrich Beck. Pioneer in Cosmopolitan Sociology and Risk Society*. **London: Springer.**

Beck, U. (2015a) "Emancipatory catastrophism: What does it mean to climate change and risk society?" *Current Sociology* **63(1): 75-88.**

Beck, U. (2015b) "Author's reply." *Current Sociology* **63(1): 121-125.**

> पूर्वी एशिया[1] में अलरिच बेक का प्रभाव

सैंग जिन हान, सियोल नेशनल यूनिवर्सिटी, दक्षिण कोरिया तथा आई.एस.ए. की सामाजिक वर्गों एवं सामाजिक आंदोलनों की अनुसंधान समिति (RC24) के पूर्व बोर्ड सदस्य

दक्षिण कोरिया की सेवोल त्रासदी पर बहादुरी दर्शाते हुए, बेक सुझाव देते हैं कि एक 'बुरी' चीज के कभी–कभी अनभिप्रेत 'अच्छे' परिणाम भी हो सकते हैं – सुरक्षा के मुद्दों पर अधिक ध्यान और सरकार की संगठित लापरवाही पर बहस।

सामाजिक परिवर्तन की ऐतिहासिक प्रक्रियाओं के साथ तर्कमूलक विवेचनाओं के परिदृश्य के अंतर्गत सार्वजनिक ध्यान आकार ग्रहण करता है। पूर्वी एशिया विशेषतः चीन, जापान एवं दक्षिण कोरिया पर अलरिच बैंक के प्रभाव को इस आधार पर देखा जा सकता है कि यह क्षेत्र आज क्या व्यक्त करते हैं, इनकी समस्याएँ एवं संभावनाएँ क्या हैं तथा वह बहस जिसमें न केवल जोखिम के प्रति समकालीन जन दृष्टिकोण सम्मिलित है अपितु यह भी सम्मिलित है कि आज इस क्षेत्र में भविष्य को लेकर लोग इतने अधिक संवेदनशील क्यों है?

द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत हुए आधुनिकीकरण की पूर्व एशिया विश्व की सर्वाधिक सफल कहानी का प्रति–निधित्व करता है। पूर्वी एशिया में हुआ यह आधुनिकीकरण अपवाद की दृष्टि से न केवल अत्यंत तीव्र है अपितु परिणाममूलक एवं रूपान्तरणकारी है। इस आधुनिकीकरण के कारण यहाँ के नागरिकों को न केवल गौरव एवं आत्म विश्वास की अनुभूति हुयी है अपितु तीव्र आधुनिकीकरण के गैर इरादतन सह उत्पाद भी उभर कर आये हैं। लेकिन चूँकि तीव्र आधुनिकीकरण को गति नौकरशाही सत्तावादी विकासात्मक राज्यों ने दी है अतः नागरिकों के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इस आधुनिकीकरण ने गहराई से प्रवेश किया है। परिणामस्वरूप तीव्र आधुनिकता के लाभ यहाँ के नागरिकों को मिले हैं परन्तु साथ–साथ खतरनाक किस्म के जोखिम भी उभर कर आये हैं और इसलिए जनता का ध्यान अराजकतावादी तरीके से विकास के लाभकारी पक्षों से अंधेरे पक्षों की तरफ अग्रसर हो जाता है।

पूर्वी एशिया के आदर्शात्मक परम्पराएँ जैसे कंफयूशियवाद, ताओवाद एवं बुद्धवाद आज भी पश्चिमी सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के प्रभाव के बावजूद मजबूती से बनी हुई हैं। पूंजीवादी वैश्वीकरण से उत्पन्न जीवन संबंधी चुनौतियों या जीवन की धमनी से संबंधी जोखिम की तरफ हमारा ध्यान जाता है। परंतु ऊपर उल्लेखित परंपराए जो मूल रूप से संकीर्णवादी है, जोखिम की लोकप्रिय आलोचना करती है और पूंजीवादी वैश्वीकरण को मानव की शिष्टता सह अस्तित्व एवं मानवीय मूल्यों से केन्द्रित अर्थात जन केन्द्रित राजनीति के लिए सर्वाधिक खतरनाक चुनौती बताती हैं।

इस क्षेत्र में बैक की लोकप्रियता के तीन स्पष्ट कारण है – (1) बैक की जोखिम समाज (रिस्क सोसायटी) की अवधारणा को गहराई से एक वास्तविक यथार्थ के रूप में स्वीकारा गया। यह स्वीकृति कुछ उदाहरणों पर आधारित है जैसे जापान में फोकोशिमा दामची आणविक दुर्घटना (2011), कोरिया में सिवाल फैरी दुर्घटना (2014) एवं बीजिंग में हुआ वायु प्रदूषण एवं यलोडस्ट के रूप में धूलभरी आंधियां इत्यादि। द्वितीय, जोखिम की विवेचना के अतिरिक्त बैक भविष्य के प्रति एक दृष्टि भी प्रस्तुत करते है जिसे प्रत्यावर्तनीय आधुनिकीकरण या द्वितीय आधुनिकता की संज्ञा दी जाती है। अपनी अस्मिता को खोजने की प्रक्रिया में लगा पूर्वी एशिया का प्रयास बैक की इस दृष्टि से मेल खाता है और इसके साथ–साथ पूर्वी एशिया को एक ऐसे भविष्य की तरफ जाने का संकेत देता है जो पश्चिम आधुनिकता की प्रक्रिया से भिन्न है अर्थात यह इसका अनुकरण नहीं है। तीसरे, जोखिम की प्रबंधन प्रक्रिया में सहभागिता के जिस उपागम की बैक चर्चा करते हैं वह भी पूर्वी एशिया के लिए उत्साहवर्धक है क्योंकि यह राज्य के द्वारा नियमन के परिपाटीय प्रारूप एवं जोखिम प्रबंधन के प्रौद्योगिकीय प्रारूप से बिल्कुल भिन्न है।

>>

जुलाई 2014 में बैक ने सिओल की यात्रा की और वहाँ उनको मिली जन स्वीकृति एवं उनका प्रभाव समाज के मध्य साफ–साफ नजर आया। अप्रेल में एम.वी. सीवॉल के डूबने की घटना से देश अभी भी बुरी तरह प्रभावित था। सरकार की अकर्मण्यता ने जनता में दुख एवं क्रोध को उत्पन्न किया था क्योंकि इस घटना में विद्यालय भ्रमण के लिए गये अनेक युवा विद्यार्थी के साथ सैंकड़ों लोग अपना जीवन गवां चुके थे। इस पृष्ठभूमि के खचाखच भरे कोरिया प्रेस सेंटर के इंटरनेशनल कांफ्रेंस रूम में बैक का एक सार्वजनिक व्याख्यान हुआ। हालांकि यह व्याख्यान जलवायु परिवर्तन पर केन्द्रित था लेकिन बैक ने इस व्याख्यान के अंतर्गत उन सुविधाजनक तंत्रों की विवेचना की जिन्हें केन्द्र में रखकर नागरिक स्वयं परिवर्तन के प्रेरक तत्व बन सकते हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि कोई भी 'खराब' वस्तु कभी कभी गैर इरादतन रूप से 'अच्छे' परिणामें को जन्म देती है। सिवॉल दुर्घटना के कारण हमें अब सुरक्षा के मुद्दों की तरफ अपना ध्यान आकर्षित करना चाहिए और सरकार की संगठित गैर–उत्तरदायीपूर्ण क्रियाओं के विषय में बहस को प्रेरित करना चाहिए।

बाद में बैक ने सिओल मैगा सिटी थिंक टैंक एलायंस (METTA) के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित किया जिसका मुख्य विषय 'बियांड रिस्क टू वर्ड सेफ सिटी' (जोखिम के परे एक सुरक्षित शहर की ओर) था। सिओल के सिटी हॉल में एक टी.वी. कार्यक्रम के सीधे प्रसारण में बैक ने नवीन राजनीति का विचार प्रस्तुत किया। उनका मत था कि: पूर्वी एशिया द्वारा महसूस की जाने वाली सभी सामान्य समस्याएँ प्रकाश में आ चुकी हैं। सभी राष्ट्र अन्तः सम्बद्ध है लेकिन वे ऐतिहासिक समस्याओं के कारण एक दूसरे से संघर्षरत हैं। अगर ये एशिया को एक संगठित इकाई के रूप में जन्म देने में असमर्थ रहते हैं तब फिर कोई कारण नहीं है कि कोई भी एशियाई देश विकास का आगे कोई रास्ता तय कर सके। सिओल जैसे नगर एक एकीकृत नगर का प्रारूप बन सकते हैं इन्हें राष्ट्रीयता का प्रारूप नहीं बनना चाहिए। नगर अब महानगर बन रहे हैं एवं 'वैश्विक' मेगा सिटी और अधिक महानगरीय हो रही है। अन्तःनगरीय सहयोग का यह एक प्रारम्भ बिंदु है।

बैक की आकस्मिक मृत्यु से कोरियाई समाज को धक्का लगा और रूढ़िवादी एवं उदारवादी संचार माध्यमों ने बैक को समान प्रकृति का सम्मान प्रदान किया। सिओल के महापौर पार्क बान सून ने अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि मैं सिओल को एक मॉडल नगर बनाने का अनवरत प्रयास करूंगा ताकि उन अनेक प्रकार की जोखिमों को न्यूनतम किया जा सके। जिनकी चेतावनी बैक ने नागरिकीय सहभागिता एवं अन्तःनगर सहयोग के माध्यम से की थी। कोरिया विश्व विद्यालय के प्रोफेसर किम मुंजो ने 'द जूनगैंग इल्बो' में बैक को श्रृद्धाजंलि अर्पित करते हुए लेख लिखा। जबकि सिओल नेशनल विश्वविद्यालय की रिसर्च प्रोफेसर हांगचाक सुक ने 'द क्यूनहैंग शिनमन' में एक लेख उनकी स्मृति में लिखा और म्यूनिख में विद्यार्थी जीवन के उन अनुभवों के विषय में लिखा जो बैक के साथ जुड़े थे। उनका मत था कि उन्होंने अपने विद्यार्थियों की सदैव मदद की एवं उनके साथ बैक के सम्बन्ध सदैव सौहार्द पूर्ण रहे। ऐसे विद्यार्थी जो दूरदराज के देशों से विशेषतः पूर्वी देशों से आते थे और म्यूनिख के परिवेश से अपरिचित होते थे, की सहायता बैक सदैव किया करते थे।

'द हैनक्यूरह' में मैंने बैक को एक अत्यंत ऊर्जावान एवं सर्वाधिक प्रतिबद्ध एवं जागरूक पश्चिमी विचारक की संज्ञा दी है। मैं अब तक जितने विचारकों से मिला, बैंक को मैंने उन सबसे आगे पाया। महापौर पार्क के अनुरोध पर बैक ने जनवरी 2015 में सिओल परियोजना का शुभारम्भ करना स्वीकार किया जिसमें जोखिम को न्यूनतम करने के लिए प्रशासनिक एवं जनसहभागिता का समन्वय होगा। 22 दिसम्बर को मेरा जब उनसे आखिरी बार स्काइप पर वैचारिक आदान–प्रदान हुआ तो उस परियोजना के प्रति उनमें अत्यंत उत्साह दिखा। उनका यह भी प्रस्ताव था कि एक 'पूर्वी एशिया में जोखिम से सम्बद्ध कार्यकर्त्ताओं के लिए संसद' (पार्लियामेन्ट फॉर रिस्क एक्टर्स इन ईस्ट एशिया) का गठन किया जाए। पेरिस में दिसंबर के प्रारम्भ में हुयी एक कार्यशाला के तत्काल बाद ब्रूनोलाटूर से उन्होंने इस विचार को ग्रहण किया था। इस मार्च महीने में जब सिओल परियोजना के प्रारम्भ के संदर्भ में हुयी कांफ्रेंस में प्रसिद्ध भिक्षु मोयंग जिंग, जिनसे बैक एवं उनकी पत्नी की मुलाकात सिओल में 2008 के दौर के अंतर्गत हुयी थी, ने बैक की सेवाओं का स्मरण किया।

जापान में बैक ने सर्वप्रथम पर्यावरण समाजशास्त्र के क्षेत्र में अपनी पहचान को बनाया तथा वर्ष 2000 के प्रारम्भ एवं इसके प्रारम्भिक दशक में बैक के द्वारा प्रस्तुत व्यक्तिकरण की अवधारणा को लोकप्रियता मिला। लेकिन बैक सार्वजनिक जगत में फोकोशिमा दायची आणविक त्रासदी के बाद प्रसिद्ध हुए। 2011 में दिए गये एक साक्षात्कार में बैक ने जोखिम की प्रकृति की विवेचना की और साथ ही जापानी नागरिकों का आहवान किया कि वे सक्रिय हो जाए और उद्योग जगत तथा पेशेवर विशेषज्ञों को रोके क्योंकि वे निर्णयों में एकाधिकारवाद को स्थापित कर रहे हैं।

बैक की जोखिम समाज की अव–धारणा जापान में फोकोशिमा त्रासदी के साथ तो जुड़ी ही है लेकिन इस अवधारणा को विश्व में चेर्नोबिल त्रासदी के उपरान्त देखा जा सकता है। बैक की मृत्यु के उपरांत अनेक राष्ट्रीय समाचार पत्रों जैसे असाही शिम्बुन, निहोन केजाई शिम्बुन, मनीची शिम्बुन, योमुरी शिम्बुन, सैंककाई शिम्बुन एवं अनेक स्थानीय समाचार पत्रों ने बैक की उपलब्धियों को रेखांकित किया। बैक के नजदीकी सहकर्मी होशोई विश्वविद्यालय के प्रोफेसर मुनी नूरी सुजुगी ने बैक को ''एक ऐसे व्यापक चेतना वाले बौद्धिक व्यक्तित्व की संज्ञा दी जिसने जोखिम का विश्लेषण किया''।

संभवतः बैक चीनी जनता के बीच में जाने जाते थे। लेकिन चीन के अकादमिक क्षेत्र में उनकी महत्वपूर्ण उपस्थिति रही है। कम से कम 8000 चीनी अकादमिक शोध ग्रंथों के लेख में बैक एवं जोखिम समाज का उल्लेख मिलता है। चीन में जनता के बीच में कम जाने जाने के बावजूद मुख्य समाचार पत्रों एवं संचार माध्यमों में बैक की मृत्यु के समाचार को प्रस्तुत किया गया। चीन से प्रकाशित समाचार पत्र 'बैगहुई डैली' में एक पूरे पृष्ठ के लेख बैक के जोखिम समाज सिद्धान्त के मुख्य अवयव (फोर की वडर्स ऑफ बैकस् रिस्क सोसायटी थियरी) शीर्षक से प्रकाशित किया गया। फ्यूडान विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सुन वुओडांग ने बैक के योगदान को 'द्वितीय आधुनिकता, प्रत्यार्वतनीयता, उप राजनीति एवं महानगरीयतावाद' (सैकेड मॉर्डिनटी, रिफ्लेक्सीविटी, सब–पॉलिटिक्स एवं कास्मोपोलिटिनिज्म) के अंतर्गत विवेचित किया। सिंगुहा विश्वविद्यालय के प्रोफेसर वियुक्वांग ने 'क्यू सेंचूरी मैंगजीन' में बैक के विषय में लेख लिखा। अनेक शिक्षा विदों ने अपने विबियों 'माइक्रो ब्लॉग्स पर बैक ने योगदान की चर्चा की। जापान एवं कोरिया की भांति चीन में भी अलरिच बैक की मृत्यु पर शोक मनाया गया। ■

सैंग जिन हान से पत्र व्यवहार हेतु पता
<hansjin@snu.ac.kr>

[1] The author wishes to thank Sae-Seul Park, Professor Midori Ito, Mikako Suzuki, Professor Yulin Chen and Zhifei Mao for their contributions in collecting the necessary information from Korea, Japan and China.

> अल्रिच बेक का उत्तर अमेरिका में विविधतामूलक प्रभाव

फुयुकी कुरासावा, समाजशास्त्र विभाग, मार्क विश्वविद्यालय, टोरेंटो, कनाडा एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत पर आईएसए की अनुसंधान समिति (RC16) के बोर्ड सदस्य

2014 में योकोहामा में आयोजित आईएसए की समाजशास्त्र की विश्व कांग्रेस में अलरिच बेक

अल्रिच बेक का महानगरीयतावाद के प्रति प्रतिबद्ध तामूलक दृष्टिकोण निर्विवाद है। यह दृष्टिकोण न केवल सैद्धांतिक है अपितु इसमें ऐसी जीवंतता है जिसे गहराई तक महसूस किया जा सकता है। संभवतः इसलिए यह उपयुक्त है कि एक जापानी–फ्रांसीसी–केनेडियन समाजशास्त्री उत्तर–अमेरिकन समाजशास्त्र में बैक के योगदान पर एक आलेख लिखे। बैक के अकादमिक योगदान से हालांकि, मैं बहुत पहले से परिचित था पर उनसे मेरी पहली मुलाकात सन् 2000 के मध्य में उनके टोरेंटो प्रवास के दौरान हुयी। मुझे याद है कि अलरिच बैक इस नगर के वास्तुशिल्पीय आधुनिकतावाद (फिनिश वास्तुकार विलजोरेविल की बनायी डिजाइन के आधार पर निर्मित सिटी हॉल इसका प्रतीक है) से अत्यंत प्रभावित थे और उनको नृ–सांस्कृतिक बाहुल्यतावाद के प्रति उत्साह देखने को मिलता था। शायद टोरेंटो एक ऐसा नगर है जिसे विविधत के अध्ययन के लिए विश्व की सर्वाधिक समृद्ध सामाजिक प्रयोगशालाओं में से एक कहा जा सकता है। हालांकि बैक के बौद्धिक विश्व में अनेक विचारों में से यह भी एक विचार था। हम लोगों ने जब आपस में बातचीत की तो मैंने पाया कि बौद्धिक विवेचना के परे प्रत्यावर्तनीय आधुनिकीकरण एवं महानगरवाद ऐसे व्यावहारिक पक्ष है जिन पर बैठक प्रतिदिन सवाल किये जा सकते थे।

उत्तर अमेरिका में बैक के प्रभाव का मूल्यांकन करते हुये हमें कम से कम तीन भौगोलिक सीमाओं, बौद्धिक अंतः निर्भरताओं से बने समाजशास्त्रीय विश्व के मध्य अन्तर करना होगा। बैक का सर्वाधिक प्रभाव संभवतः फ्रांसीसी भाषा पर है जिसे क्यूबिकस समाजशास्त्र को इस संदर्भ में देखा जा सकता है। यह आश्चर्य नहीं है कि इस समाजशास्त्र में यूरोपियन समाजशास्त्रीय चिंतन के साथ ऐतिहासिक सम्बंधों की विवेचना सम्मिलित है। अलरिच बैक की अनेक केन्द्रीय अवधारणाएं एवं उनके तार्किक विचारों को अनेक क्यूबिकॉइस समाजशास्त्रियों ने संदर्भ बिंदुओं के रूप में प्रयुक्त किया है। यह समाजशास्त्री आधुनिकता एवं उत्तर–आधुनिकता सम्बंधी लेखों में जोखिम समाज एवं प्रत्यावर्तनीय आधुनिकीकरण की अवधारणाओं को प्रयुक्त करते है (मिचेल फ्राईटेक, जोजफ वामॉन थ्रिडाल्ट)। व्यक्तिकरण का उभार सम्बंधी लेखों पर भी (डेनियल डजनॉस) बैक का प्रभाव है। पैन अमेरिकन संस्कृति बाहुल्य प्रयासों (जीन फ्रेंकाइस कोटे) के विश्लेषण में बैक के महानगरीयवाद की अवधारणा को केन्द्रीय स्थान मिला है। वास्तव में क्यूबिकॉइस जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी जिसका नाम सोशियोलाजी एट सोसायटीज का सन् 2012 में एक विशेषांक महानगरीयवाद पर आया जिसमें बैक का लेखन संदर्भ बिंदु था।

दूसरा उत्तर अमेरिकन समाजशास्त्रीय विश्व अंग्रेजी–केनेडियन समाजशास्त्र से निर्मित होता है जिसमें यूरोपियन एवं अमेरिकन समाजशास्त्रीय समूह अंतः सम्बद्धता दर्शाते हैं। इस अंतः सम्बद्धता में बैक की अवधारणाओं (अर्व) जो उनकी विभिन्न पुस्तकों में है, को प्रयुक्त किया गया है। हालांकि, अंग्रेजी भाषी केनेडा में क्यूबिक की तुलना में हमें यह प्रभाव संभवतः कम नजर आता है। बैक के लेखों का कम से कम तीन विषयों के उप क्षेत्रों में प्रभाव नजर आता है। सुरक्षाकरण एवं निगरानी का समाजशास्त्र जिसमें नवीन सुरक्षा क्षेत्रों एवं जोखिम मूल्यांकन के मध्य के सम्बंधों को जोड़ा गया है (डेविड लियोन, सीन पी. हायर, डेनियल बीलैंड), पर्यावरणीय समाजशास्त्र जिसमें सांस्थीकृत नागरिक प्रबंधन जो कि स्थानीयता पर आधारित जोखिम युक्त समस्याओं एवं सम्बंधित स्थानों को सम्मिलित करता है

> >

(हैरिस आली) एवं केनेडियन राजनीतिक अर्थवाद विशेषतः गहराती हुए बेरोजगारी के सम्बंध में (लीह वास्को), वे क्षेत्र हैं जिनमें बैक के प्रभाव को देखा जा सकता है।

अमेरिकन समाजशास्त्र जोकि सबसे विशाल है, में तीन उत्तर अमेरिकन क्षेत्र सम्मिलित होते हैं, वह भाग है जिसमें बैक के योगदान कम नजर आते हैं। यूरोप, एशिया एवं दक्षिण अमेरिका (अन्य लेख जो कि ग्लोबल डायलॉग के वर्तमान अंक में सम्मिलित हैं) की तुलना में अमेरिका एक ऐसा अपवाद है जहां बैक का प्रभाव कम है। यह कहा जा सकता है कि अमेरिकन आनुभविकतावाद एवं यूरोपियन सिद्धांतवाद के मध्य के अंतर्विरोध के कारण ऐसी स्थिति पैदा हुयी है। हालांकि इसके लिए अन्य कारक भी उत्तरदायी हो सकते हैं। एक संस्थागत दृष्टिकोण से बैकियन विशेषज्ञों अथवा उनके अनुकरणकर्त्ताओं का अमेरिका में आधारित ऐसा कोई नेटवर्क नहीं है जो अमेरिका के महत्वपूर्ण विश्वविद्यालयों के समाजशास्त्र विभाग में (मिशिगन, विसकांसिन, शिकागो, वर्कले, हार्वड इत्यादि) विचारों का आदान–प्रदान कर सके अथवा विभिन्न शोध पत्रिकाओं (अमेरिकन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी, अमेरिकन सोशियोलाजिकल रिव्यू इत्यादि) में विचारों की प्रस्तुति कर सके। हमें यह भी देखना होगा कि एक समन्वित विश्लेषणात्मक प्रारूप के बजाय बैक ने एक निबंध के रूप में अपने लेखों को प्रस्तुत किया। इन लेखों के माध्यम से तीव्र गति से परिवर्तित हो रहे सामाजिक–ऐतिहासिक घटनाक्रमों की प्रतिक्रिया में बैक नवीन अवधारणात्मक उपकरणों को विकसित कर सके। अतः बैक के द्वारा प्रस्तुत की गई अवधारणाऐं सामाजिक जीवन के विविध क्षेत्रों से सम्बंधित विस्तृत व्याख्या एवं आनुभाविक अंवेषणों में तत्काल क्रियाशील नहीं हो सकती। और इसलिए अमेरिकन समाजशास्त्र के क्षेत्र में बैक की प्रभावशीलता जगमॉट बाउमन की तरह है। इन दोनों विचारकों का प्रभाव जहॉ सीमित है, वहीं बोर्दियो की उपस्थिति अत्यंत व्यापक है। यदि हम इसके अतिरिक्त माइकल बोरावे की वैचारिकी को प्रयुक्त करे तो यह कह सकते हैं कि बैक एक परम्परागत जन समाजशास्त्री थे, जिनका योगदान अमेरिका के पेशेवर समाजशास्त्र में प्रभावी तरीके से स्थापित नहीं हो सकता। बैक की सार्वजनिक बौद्धिक गातिविधियाँ जैसे हाल में जर्मन चांसलर एंजिला मार्केल (जिन्हें बैक, 'मैर्कियावल' की संज्ञा देते है) की आलोचना तथा उनके जर्मन केन्द्रित यूरोप की अवधारणा की आलोचना के पक्ष हैं, जिन्हें अमेरिका में लोग ज्यादा नहीं जानते। हालांकि बोरावे, ओरलैण्डो पेटसर्न, माइकल लेमॉर एवं अमेरिका में आधारित अनेक महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीयों के विचारों में विशेषतः नीति निर्माण से सम्बंधित समाजशास्त्र एवं अन्य प्रकार की वैचारिकी में बैक का प्रभाव नजर आता है। ठीक वैसे ही बैक के प्रभाव को अमेरिकन समाजशास्त्र के अनेक हिस्सों में देखा जा सकता है। जोखिम समाज की उनकी अवधारणा अमेरिका के पर्यावरणीय समाजशास्त्र में तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के समाजशास्त्र में (विशेषतः जोखिम के संगठनात्मक प्रबंधन एवं प्रौद्योगिकी–वैज्ञानिक जोखिम नीति के संदर्भ में) महत्वपूर्ण स्थान रखती है। उनके विचारों को जैफरी सी. अलेक्जेंडर, क्रेग कलहन एवं संसकियां हनेसन इत्यादि ने अपने लेखन में पर्याप्त स्थान दिया है। यह भी एक महत्वपूर्ण पक्ष है कि बैक ने जिस पद्धतिशास्त्रीय महानगरीयतावाद की अवधारणा की चर्चा की उसे अमेरिका में कार्यरत नारीवादी समाजशास्त्रीय विश्लेषण जो कि प्रभुत्व के अंतः सामूहिक साधनों से सम्बंधित था, में पर्याप्त स्थान मिला। इसके अतिरिक्त विश्व व्यवस्था सिद्धांतकारों, सभ्यताओं अथवा शासकों का अध्ययन करने वाले, तुलनात्मक ऐतिहासिक समाजशास्त्रियों, अनेक भू–भागों पर कार्यरत वैश्विक नेतृत्वशास्त्रियों तथा आरोपी राजनीति के अंतराष्ट्रीय स्वरूप की चर्चा करने वाले राजनीतिक समाजशास्त्रियों ने बैक के विचारों को स्थान दिया है। अतः यह कहा जा सकता है कि पद्धतिशास्त्र राष्ट्रवाद की बैक की आलोचना और अमेरिकन समाजशास्त्र के अनेक गतिशील पक्षों में बिना किसी संदेह के बैक के विचार प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में सम्मिलित होते रहे हैं।

इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए मैं ऐसे चार अनुसंधान क्षेत्रों का प्रस्ताव रखूंगा जो बैक के विचारों के महत्व के साथ जुड़े हैं। पहला प्रस्ताव निरंतर तीव्र हो रही वैश्विक जोखिम के चक्र के सामाजिक–राजनीतिक प्रभावों का परीक्षण करना है। इसके अंतर्गत उन चुनी हुयी प्रक्रियाओं के मूल्यांकन करने होंगे जिसके अंतर्गत संगठन प्रतीकात्मक एवं राजनीतिक रूप में कुछ विकास अवयवों को तत्काल महत्वपूर्ण जोखिम मानते हैं (जैसे आतंकवाद इस प्रक्रिया में हम कुछ पक्षों की उपेक्षा करत है (उदाहरण के लिए व्यवस्थित निर्धनता एवं संरचनात्मक हिंसा)। दूसरे, हम सामाजिक प्रघटनाओं पर वैश्विक शक्तियों के प्रभाव को रेखांकित करे और इसमें यह भूल जाये कि इसका विश्लेषणात्मक आकार कितना है और इसलिए, यह होता ही है, के स्थान पर समस्याजनित पक्षों को महत्व दे। इस दृष्टि से हमारे अध्ययन का उद्देश्य 'सामाजिक' पर केन्द्रित हो जाता है। तीसरा, हम कर्त्ताओं एवं संस्थाओं की कार्य–प्रणाली को अच्छे तरीके से जाने क्योंकि वे उन समानतामूलक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से बाहुल्यतावादी उन सामूहिक परियोजनाओं को महत्व देते हैं जो कि महानगरीयतावाद के पक्ष में है लेकिन इसके साथ–साथ हमें महानगरीयतावाद के विरोधी एवं कट्टरवादी ताकतों के विषय में भी जानना होगा जिनकी उपस्थिति वैश्विक नागरिकीय समाज में है। चौथा, हमें तथ्य संकलन एवं पद्धतिशास्त्रीय उपकरणों को ऐसे विकसित करना होगा जो एक राष्ट्र–राज्य को विश्लेषण की इकाई नहीं बनाते हो अपितु ऐसी तुलना करनी होगी जो राष्ट्रों, उपराष्ट्रों, कर्त्ताओं एवं संस्थाओं के परे जाती है। (जैसे नगर, क्षेत्र एवं अंतराष्ट्रीय संगठन)। इस प्रकार बैक के विचार हमारे दौर के अनेक महत्वपूर्ण सवालों का विवेचन करने के लिए एक प्रारूप बन जाते हैं।

दिसंबर 2014 में मेरी एवं बैक की आखिरी मुलाकात पेरिस की एक कार्यशाला में हुयी जोकि महानगरीय तथ्यों एवं अनुसंधान पद्धतियों पर केन्द्रित थी वहां पर बैक ने बड़े उत्साह से अपनी आगामी पुस्तक 'द मेटामोरफोसिस ऑफ द वर्ल्ड' का उल्लेख किया। उन्होंने इसे अपनी उत्कृष्ट रचना कहा। उनका तर्क था कि यह एक नये समाज वैज्ञानिक विश्व दृष्टिकोण को प्रस्तुत करेगी जिसके आधार पर आज के दौर में हो रहे तीव्र परिवर्तनों को विश्लेषित किया जा सकेगा। यह उनका नवीनतम दूरगामी विचार था जिसमें बौद्धिक सृजनशीलता के अनेक 'बड़े संदर्भ' उदाहरण के रूप में थे। कार्यशाला की आखिरी रात एक छोटे परंपरागत भोजनालय में मैंने अपने दोस्त के साथ रात का भोजन लिया। यह वे स्थल होते हैं जो पेरिस की सड़क के केन्द्रीय भागों से बहुत जल्दी विलुप्त हो जाते हैं। जब हम उस भोजनालय से बाहर आ रहे थे तो हमें बैक एवं उनकी पत्नी उस भोजनालय में मिले। उनकी पत्नी का नाम एलसिया बैक जरनशिम है जो अपने क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण समाजशास्त्री है। वो हमसे ठीक आगे थे और इसलिए ऐसा लगा कि उन्होंने रात्रि का भोजन वहीं लिया होगा। वो जा रहे थे और हमने उसमें हस्तक्षेप करना उचित नहीं समझा लेकिन हमने उन दोनों को साफ देखा वे हाथों में हाथ डाले हुए थे और शायद उन्होंने मिर्च, वहां की हवा और रात्रि का नजारा अपनी आँखों में बिठा रखा था। यह अलरिच बैक की स्मृति का मेरे लिए आखिरी हिस्सा है। वह एक महान बुद्धिजीवी एवं अत्यंत सद्भावी व्यक्ति थे जिन्होंने हमारे सामाजिक विश्व के अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण हस्तक्षेप किये। उनकी मृत्यु मेरे लिए व्यक्तिगत रूप में एक बड़ा नुकसान है साथ ही यह नुकसान समाजशास्त्र एवं समूचे समाजविज्ञान के लिए है। ■

फुयुकी कुरासावा से पत्र व्यवहार हेतु पता
<kurasawa@yorku.ca>

> आयरलैंड की आर्थिक आपदा की यात्रा

सिएन ओ'रियायिन, आयरलैंड का नेशनल विश्वविद्यालय, मेयनूथ, आयरलैंड

90 के दौर में आयरलैंड को विश्वभर में तेजी से विकसित होते हुये 'सेल्टिक टाइगर' के नाम से जाना जाता था। विदेशी निवेश के द्वारा लायी गयी निर्यात में तेजी मुख्यपंक्तियॉ बनी; परन्तु वास्तविक कहानी यह थी कि देश में रोजगार में व्यापक वृद्धि हुई जिसको ऐतिहासिक रूप से उच्च बेरोजगारी और उत्प्रवास द्वारा चिन्हित किया गया। 1990 की तेजी के अन्त तक, आयरिश समाज को अब तक के अकल्पनीय संसाधन प्राप्त हो गये, जिनमें आर्थिक, संस्थागत और सांस्कृतिक संसाधन सम्मिलित थे। आयरिश आर्थिकी को स्थायित्व प्राप्त हुआ, उल्लेखनीयपूर्ण विकासात्मक लाभ प्राप्त किये गये, और 1980 के दौर से बचा हुआ भारी राष्ट्रीय कर्ज को उतारने का दबाव अब खत्म होने को था।

2008 तक, ये संसाधन हवा हो गये, वित्तिय संकट से इनके चिथड़े उड़ गये। 1990 के दौर का पोस्टर बालक जो उदारवाद भूमंडलीय आर्थिकी के लिये था, पूँजीवाद की सावधानीपूर्ण कहानी में परिवर्तित हो गया।

इस नाटकीय परिवर्तन के पीछे क्या था? समसामयिक पूँजीवाद के तीन वृहद विषय–वित्तियकरण, अंतराष्ट्रीय एकीकरण और 'उदारवादी' आर्थिक नीतियॉ–तीनों ने एक साथ मिलकर आयरलैंड के संकट को नाटकीय बना दिया। प्रथमत्या, 1990 की तेजी ने नव उद्योगों में उत्पादकपूर्ण निवेश को प्रोत्साहित किया, जिनको विकासात्मक राज्य अभिकरणों का समर्थन प्राप्त था। परन्तु 2000 के दशक में अचानक संपति सटट्ेबाजी में उछाल देखा गया। यह उछाल सस्ते ऋण की दर और रिहायशी एवं व्यवसायिक भवनों की सटट्ेबाजी के साथ देखा गया, जो संपत्ति मे बुलबुले को प्रदर्शित कर रहा था। अन्तः इसका परिणाम बैंकिग क्रैश के रूप मे आया और जनता पर भारी बैंक ऋण का भार आ पड़ा।

दूसरा, आयरलैंड़ का वित्तियकरण, यूरोप समाकलन के बदलते आयाम से घातक ऊँचाईयों की तरफ बढ़ रहा था। 1990 मे यूरोपियन सार्वजनिक फण्ड, आयरलैंड़ निवेश के उच्च प्रतिशत का समर्थन कर रहे थे। 2000 मे, निजी उधार के उच्च अन्तः प्रवाह ने आर्थिकी पर प्रभुत्व बना रखा था। आयरिश बैंक अंतराष्ट्रीय उधार दाताओं के भारी कर्जदार हो गये। नीति के तहत, यूरोपिय संघ ने वित्तिय समाकलन को प्रोत्साहित किया– जिसमें यूरो का एकरूप मुद्रा के रूप मे निर्माण समाहित था– चाहे जितनी राष्ट्रीय सरकारों ने और यूरोपिय संघ ने सामाजिक एवं पूँजी निवेश कम कर दिया हो। जहॉ पर यूरोप ने भविष्य मे भारी मात्रा मे निवेश किया हो, वहॉ फिलहाल वो सटट्ेबाजी कर रहा था।

तीसरा, आयरलैड़ की खुद की राष्ट्रीय राजनीति ने अंतराष्ट्रीय वित्तियकरण को घरेलू आपदा के दबाव के रूप मे परिवर्तित करने मे मदद की। 1990 के अन्त की सरकार ने नव–उदारवाद और लोकप्रियवाद को मिश्रित रूप मे घातक कॉकटेल बना दिया। सारे कर काट दिये और संपत्ति विक्रय कर पर बढ़े हुये खर्चे का निर्वहन करने के लिये निर्भरता बढ़ गयी। जब ऋण और संपत्ति बुलबुला 2008 की विपदा के रूप मे फूटा, तब आयरलैंड़ ने अपने आपको सार्वजनिक वित्त मे वृहद छेद के साथ पाया। प्रतिक्रिया स्वरूप आयरलैंड़ ने असंगत रूप से अपने आपको, नाटकीय बढ़े हुये कर और खर्चे की उच्च कटौती की तरफ स्थानान्तरित किया।

आयरलैंड की कहानी वास्तव मे जो आर्थिक उदारवाद आस्तित्व मे है, के बारे में कुछ अहम् पाठ बताती है। प्रायः पूँजीवाद के एंग्लोअमेरिकी 'उदारवाद' परिवार के वर्ग मे रखे जाने पर भी, आयरलैंड़ के अनुभव के कुछ लक्षण जाने पहचाने है। पूँजी अर्जित कर मे कटौती और निवेश को प्रोत्साहित करने के लिये करों में कटौती प्रदान करना, स्टॉक बाजार पर भरोसा, बैंकिंग नियमन पर 'हल्के हाथ' की जिद, (यहॉ तक कि बैंक की गतिविधियों से सम्बन्धित सूचनायें एकत्रित करने के लिये भी) राज्य क्षमता को सीमित करना, – इन सभी जाने पहचाने और निर्णयात्मक 'बाजार यंत्रावलि' ने आयरलैंड के आपदात्मक क्रैश मे प्रत्यक्ष भूमिका निभाई।

हालॉकि कुछ और तत्व भी थे। उच्च केन्द्रित सरकारी तंत्र ने मंत्रियों के एक छोटे समूह को असीम शक्ति दी, जिसने आर्थिक विकास को एक संकीर्ण और बंद परिप्रेक्ष्य प्रदान किया और इस प्रकार लोकतांत्रिक सरकार कमजोर हुयी। वित्त सबंधी नीतियॉ, जिन्होने सट्टेबाजी बुलबुले को और उछाल दिया और राष्ट्रीय कर आधार को कमजोर किया, ने बाद में मित्तव्ययता की नींव रखी। कल्याण राज्य जो सार्वभौमिक सार्वजनिक सेवायों के बजाय नकद देने मे अधिक केन्द्रित रहता है ने सामाजिक सेंवायों की सुरक्षा के लिये जन सर्मथन को क्षीण कर दिया। यह सब वे राजनीतिक कारक थे जिनका सबसे ज्यादा असर हुआ। परन्तु हर एक कारक पूँजीवाद के उदारवादी विश्व का लक्षण भी है।

एंग्लो अमरीकी उदारवादी आर्थिकी मे सार्वजनिक और निजी संस्थाओं मे स्तरीकृत विभाजन का स्वरूप ज्यादा होता है और यहॉ पर सरकारी पार्टीयों को भी ज्यादा शक्ति दी जाती है। वो बजट घाटे को चलाते है और सार्वजनिक सेवायों के बजाय आय से जुड़े लाभों पर जोर डालते हैं। ये लक्षण हो सकता है 'बाजार' के आयाम न

>>

हो, पर यह उदारवादी पूँजीवाद मे काफी सामान्य है और इस प्रकार वास्वतिक रूप से उदारवाद, जो अस्तित्व मे है, के सामान्य तत्व है।

आयरलैंड आर्थिकी के क्रैश के छः साल के बाद, आयरलैंड की अर्थव्यवस्था नाजुक और असमान तरीके से दुबारा उठने के चिन्ह दिखा रही है। विशेष तौर पर रोजगार बढ़ रहे है, कर राजस्व बढ़ रहा है और बजट घाटा घट रहा है। हालॉकि आयरलैंड की आगे बढ़ने की काबलियत को भी वो ही तीन प्रवृत्तियाँ चुनौती दे रही हैं, जो उसको ध्वस्त करने मे सहायक रही है। अब बैंक उतनी असावधानीपूर्वक कर्ज नहीं दे रहे हैं जितना वे दिया करते थे। वो उत्पादक उद्योग को छोटा ऋण देते है और सरकार ने हाल ही मे राज्य निवेश बैंक बनाया है। वित्त एवं संपत्ति दोनों को बढ़ते हुये सेक्टर के रूप मे प्रोत्साहित किया जा रहा है, इस प्रकार बढ़ते हुये किराये और दाम, परिवार और छोटे उद्योगो पर दबाव डाल रहे है।

उभरते हुये पुनः वित्तियकरण के साथ, यूरोजोन की नीति प्रक्रिया सही नहीं रही है। यह आश्चर्य का विषय नहीं है, कि यूरोपिय नेताओं ने सरलता और सादगी पर जोर दिया है, जबकि यूरोप का सामाजिक लोकतंत्र ऐतिहासिक रूप से बजट घाटे को चलाने और खुद को अन्तराष्ट्रीय वित्त बाजार के समक्ष उद्मासित करता है। परन्तु यह आश्चर्यजनक प्रतीत नहीं होता है कि इन्हीं सामाजिक

> **"एक समय में जहाँ यूरोप ने भविष्य में भारी निवेश किया, अब भविष्य में सट्टेबाजी कर रहा है"**

प्रजातंत्र संरचनायो न सतत् रूप से वर्तमान खर्चे को उल्लेख पूर्ण निवेश योजना के साथ सामजस्य बैठाने के गंभीर प्रयास को नकारा है, विकास एवं सामाजिक व्यवस्था बनाये रखने के लिये। समसामालिक निवेश योजना, जिनको सार्वजनिक एजेसियों के द्वारा क्रियान्वित किया गया को गुणात्मक सरलता के नये प्रयास के द्वारा जा निजी वित्त में फंड खनिज करती है, को बौना कर दिया।

अंतत आयरलैंड की वर्तमान सरकार एक बार फिर करों को कम करने की जल्दी कर रही है, आश्चर्य नहीं कि यह चकरायी हुई जनता के साथ एक लोकप्रिय तरीका है। यह वर्तमान यूरोपीय एवं आयरिश मित्तव्यत्तता नीतियों का विरोध करने वाली ताकतों के लिए चुनौती पर ध्यान केन्द्रित करता है। सामान्य सोच के विपरीत बजट को सन्तुलित करना युरोपिय आर्थिक उदारवादीयों की युक्ति नहीं रही है, अपितु यह यूरोपीय सोशल डेमोक्रेट की रही है। उन्होनें उच्च रोजगार, मजबूत सामाजिक सेवाएँ और समतामूलक वेतन आधारित सामाजिक संवेदा में सामाजिक एकता को ढूंढने का प्रयास किया है। यह सब मित्तव्ययी वित्त के एक सुरक्षात्मक खोल में लिपटी हुए है। आयरिश और युरोपिय पद्धतियाँ आज केवल खोल पर जोर दे रही है, जिनमें सामाजिक सुरक्षा बहुत कम थी समाहित है। मित्तव्यत्तता, सुरक्षा और आर्थिक एवं सामाजिक रूप से उत्पादक गतिविधियों में लिप्त एक पुराने सामाजिक लोकतंत्र–एक उपागम जो लंबे समय से यूरोपीय संघ की नीति विमर्श में काफी समय से हाशिये पर है, की पुनः प्राप्ति अभी बाकी है। ■

सिएन ओ'रियायिन से पत्र व्यवहार हेतु पता
<Sean.ORiain@nuim.ie>

> सार्वजनिक क्षेत्र के बचाव में

मैरी पी. कोरकोरन, आयरलैंड का नेशनल विश्वविद्यालय, मैयनूथ, आयरलैंड

नवीनीकृत नागरिक समाज की अभिव्यक्ति – डबलिन के बाहरी उपनगरों में आवंटन।
मैरी कोकारान द्वारा फोटो

जैसा कि अन्य उदारवादी लोकतंत्र में होता है सार्वजनिक उपलब्ध वस्तुओं एवं सेवाओं, शिक्षा एवं सार्वजनिक सेवा – मीडिया द्वारा प्रतिनिधित सार्वजनिक क्षेत्र ने आयरलैंड में अपने आप को पीछे हटता हुआ पाया। इसी समय जिसे मैं अन्तरालीय सार्वजनिक क्षेत्र कहता हूँ – जहाँ घटनायें रेडार के नीचे है, क्रियाकलाप एवं व्यवहार ऐसे है जो सार्वजनिकता और उसकी आत्मा से संबद्ध है – सादगी पूर्ण वर्षों में अपनी उपस्थिति को आयरिश समाज में महसूस करा रहा है। यहाँ सुधारवादी गणतन्त्र, जहाँ अंतराजीय सार्वजनिक राज्य के मूल संस्थागत सार्वजनिक राज्य में विसरित हो, जो बाजार राज्य और सिविल सोसायटी के मध्य संबंधों को फिर से संतुलित करने पर बल दें, को दृष्टिगोचर करना संभव है।

औपचारिक सार्वजनिक क्षेत्र ने भौतिक संसाधनों को वापस लेने और साथ ही आलोचनाओं का सामना कर क्रमबद्ध रूप से विषम परिस्थितियों का सामना किया है। जे.के. गेलब्रेथ के शब्दों में यह 30 वर्षों के ''निजी सम्पन्नता और जन मलीनता'' का परिणाम है। स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता, शिक्षाविद एवं जनसेवक नेताओं, निजी क्षेत्र के प्रशंसकों और मीडिया के हास्य के पात्र हैं। आयरलैंड में 2008 से 2010 तक सार्वजनिक क्षेत्र का मीडिया द्वारा फ्रेमिंग का एंथनी कावले द्वारा विश्लेषण इस संदर्भ में अनुदेशात्मक है। उन्होंने अपने शोध के द्वारा यह प्रदर्शित किया कि मीडिया जो रिपोर्ट करता है, वह निजी क्षेत्र को सार्वजनिक क्षेत्र को जहाँ एक तरफ प्राय व्यय भार और खर्च जैसी अवधारणाओं में संबद्ध किया जाता है, वहीं दूसरी तरफ निजी क्षेत्र शब्दावली है। हम इस ध्रुवित उपकरण के इतने अभ्यस्त हो गये हैं, कि प्रायः यह हमें ध्यान देने योग्य नहीं लगता है।

संकटपूर्ण वर्षों में आयरलैंड का वित्तियकरण एवं बाजारीकरण के द्वारा फिर से संविन्यास हुआ।

ऐसा कदापि नहीं था कि सिर्फ सार्वजनिक वस्तुओं और सेवाओं की ही

>>

उपेक्षा की गयी। अपितु जन–बुद्धिजीवियों ने भी आलोचनात्मक क्षेत्र में रहने में कठिनाई (कभी कभी असहजता) भी महसूस की। कुछ ने आरोप लगाये कि जन बुद्धि–जीवियों ने बाजार कटटरता का विरोध नहीं किया जिसके परिणामस्वरूप आयरलैड का राजनैतिक जीवन और संस्कृति बाधित हुयी। जन बुद्धिजीवियों ने अपने आप को तेजी से वार्ता करने वाले तकनीक तंत्रियों के सामने तुच्छ पाया। चुप रहने वालों की आवाजें अनसुनी कर दी गयी।

धर्मतंत्रीय राज्य में कैथलिक चर्च को प्राधान्य भूमिका प्रदान करने के फलस्वरूप, सिविल सोसायटी हमेशा से अपेक्षाकृत कम विकसित रही है और साथ ही कम संसाधनपूर्ण भी रही है। ऐसा कम से कम अगर यह तुलना यूरोपियन देशों से की जाय तो है। राज्य में कुछ प्रभुत्व संस्थाए है, जो राज्य की सीमाओं से परे एक ऐसा प्लेटफॉर्म प्रस्तावित करती है जो 'जनसामान्य' के मूल्यों की रक्षा करे, चाहे वो हमारे जन वस्तुओं और सेवाओं पर लागू हो या जन बुद्धिजीवियों पर अपने शहर और कस्बे में जन राज्य पर लागू होता हो।

संकटकाल को हालांकि एक अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए। आयरलैंड आर्थिक छंटनी, राजनीतिक अस्थिरता और मनो सामाजिक परावर्तन के दौर से गुजर रहा है। हमने 'प्लॉट खो दिया', अपने आप को खो दिया, और अपनी आर्थिक संप्रभुता को खो दिया। पर हम अब अधिक लचीले और ज्यादा साधन सम्पन्न हो रहे हैं, जो कि हमारे शहर, कस्बे, पड़ोस के अंसरालीय जन राज्य में अधिक दृष्टिगोचर है। यहाँ हम अनुप्राणन और नवीकरण के प्रमाण पाते है, जैसे जैसे लोग अपनी सार्वजनिक, नागरिक और सामाजिक आत्म को गले लगाते हैं – विनिमय और उत्पादन की रोजमर्रा के व्यवहार के द्वारा, सहभागिक प्रजातांत्रिक और प्रत्यक्ष क्रिया में, जो कि मध्य क्षेत्र और प्रत्यक्ष क्षेत्र के बीच क्रियान्वित होती है। यहां तक कि रोजमर्रा के जीवन का सतही परीक्षण अपने अंतरालीय जन राज्य में 'समर्थता के क्षेत्रों' की उपस्थिति प्रदर्शित करता है, जिनकी शुरूआत नीचे से होती है, पोषण सक्रीय नागरिकों से मिलता है और नागरिक अंतः संबंध की मानवीय आवश्यकता की पूर्ति के लिये जीवित है।

उत्पादकपूर्ण क्षेत्र जैसे नगरीय आवंटन और विनिमय क्षेत्र जैसे किसानों के बाजार, शहरों में अभी हाल ही के वर्षों में फल फूल रहे है। यह जन उपभोक्ता प्रारूप को चुनौती दे रहे हैं, लोगों को प्रकृति से दुबारा जोड़ रहे है और प्रकृति एवं संवृद्धि के मुद्दों के बारे में जागरूकता उत्पन्न कर रहे है। सार्वजनिक पुस्तकालय अपने आप को 21वीं सदी के लिये दुबारा आविष्कृत कर रहे हैं और सेवा प्रावधान जो स्थानीय समुदाय में संबद्ध है और नवआगन्तुकों की आवश्यकताओं का ध्यान रखता है, के एक जबरदस्त उदाहरण के रूप में है। यह नवआगन्तुक इरिश भी हो सकते है और परदेशी भी। एक उच्च पुलिस अफसर ने बताया कि सबसे अधिक समाकलित क्षेत्र डबलन शहर का बचे पूरब डबलन उपनगर का सार्वजनिक पुस्तकालय है।

सशक्तता के क्रिया आधारित क्षेत्र के यहाँ काफी उदाहरण मिलते है जो जन राज्य को जमीन से ऊपर चालित करने में मदद करते हैं वार्षिक लिफी तैर, डबलिन दौड़ या फिर 40 फुट दक्षिण डबलिन का सार्वजनिक स्थान बिन्दु जो सबके लिये खुला है, सभी स्तर के लोगों को आकर्षित करता है, प्रवेश के कम निषेध है और हमारे उल्लास की जन अभिव्यक्तियाँ है। आयरलैंड में तकरीबन 700 त्यौहार और घटनायें स्टेज पर वार्षिक रूप से बनाये जाते है। इस प्रकार के सशक्ता के मंचित क्षेत्र जो एक बड़ी संख्या में स्वयंसेवकों और स्थानीय समुदाय के सद्भावना वाले प्रयासों पर प्रायः निर्भर है, हम उस प्रसन्नता की याद दिलाता है जो कला, भोजन, संगीत, साहित्य और काव्य रचना से प्राप्त होती है।

सशक्तता के 'मध्य क्षेत्र' में पाप–अप आर्ट गैलेरी स्टोर और प्रदर्शन (प्राय ऐसी भूत संपत्ती के बचे हुये ढ़ांचे पर जो खत्म हो चुकी हो। जन घटनाये और अभी नयी प्रसिद्ध कार बूट सेल सम्मिलित है। इस प्रकार की उपज प्रबंध घटनायें हमारे सार्वजनिक क्षेत्र को जीवित कर देती है। हमें दुबारा से हमारी प्राकल्पनाओं को परीक्षण करने पर मजबूर करते हैं (जैसे रीसाइकलिंग, उपसाइकलिंग और साइकिलिंग काफी प्रसिद्ध हो रहे हैं) सशक्तता के प्रत्यक्ष क्षेत्र कम्प्यूटर के द्वारा संचारित हो रहे है और राजनीतिक संरचनात्मकता के लिये अवसर प्रदान करते हैं, उद्योग के लिये निधियन और स्पंदनशील सर्जनात्मक जन सामान्य के लिये भी अवसर प्रदान करते है।

गेलिक ऐथिलिटिक एसोसिएशन का कार्य – यह एक स्वयंसेवी संस्था है जिसका कार्य उन लोगों को बुलाना है, जो नगरों और हरे–भरे उपनगरों में समुदाय का निर्माण करना चाहते है – यह जन सामान्य में एक पहचान और अपनत्व और हम की भावना को पोषित करने में अहम भूमिका निभा रहा है। प्रजातांत्रिक। सहभागिक क्षेत्र विभिन्न पहल करते है जैसे 'क्लेमिंग आर फ्यूचर' सिविल सोसायटी समूह का एक फेडरेशन है जो एक साथ आगे आये है यह शोध करने के लिये कि किस प्रकार एक समानता लिये हुये, समेकित और संवृद्धिपूर्ण आयरलैंड का निर्माण किया जा सकता है। मेनस् शेड प्रोजेक्ट जो बुजुर्ग व्यक्तियों को इकटठें होकर बैठने के लिये क्षेत्र आदान प्रदान करता है ताकि वो अपने खाली समय का सदुपयोग कर सके एवं कला आधारित क्रियाओं का मजा ले सके और काफी सक्षम एन्टी वाटर चार्जिस कैपेन जो सड़को पर बहाव लाता है। यह सभी सक्षमता के क्षेत्र नागरिक संलग्नता के अहम बिन्दु का निर्माण करते है, जिनका असर आयरिश जन राज्य को नीचे से दुबारा चलित करना है, ताकि नागरिक देखे कि यहाँ आर्थिकी से ज्यादा सार्वजनिक जीवन है। यह समाज के लिये भी है। जैसे–जैसे अंतरालीय राज्य विकसित होता है और विसरित होता है, वो अपने अन्दर उस शक्ति को पाता है, जो संस्थागत जन राज्य को गणराज्य को नया जीवन देने के वृहद प्रोजेक्ट का हिस्सा बना सके। ■

मेरी कोरकोरन से पत्र व्यवहार हेतु पता
<Mary.Corcoran@nuim.ie>

> आयरिश महिला आन्दोलन

पाउलीन कुलीन द्वारा, आयरलैंड का नेशनल विश्वविद्यालय, मैयनूथ, आयरलैंड

आइरिश महिला आंदोलन की पहली लहर में सम्मिलित – Cumann na mBan – 1916 में अंग्रेजी शासन के खिलाफ ईस्टर विद्रोह में लड़ने वाला महिला रिपब्लिकन अर्द्धसैनिक संगठन।

आयरलैंड में पितृसत्ता के लम्बे इतिहास का वहाँ उद्विकसित हो रहे महिला आन्दोलनों से मेल किया जाता है। आज का जटिल, अंतर्राष्ट्रीय, नारी अधिकारवाद अपना उद्विकास औपनिवेशिक काल से देखता है। आयरिश महिला आन्दोलन की प्रथम लहर 19वीं शताब्दी के मध्य में उठी थी, जब 1918 में महिलाओं का मताधिकार सुनिश्चित किया गया था, जबकि आयरलैंड में उस वक्त अंग्रेज औपनिवेश शासन था। प्रथम लहर के नारी अधिकारवादियों ने राष्ट्रवादी आन्दोलन में भूमिका निभाई परंतु जब रूढ़िवादी कैथोलिक उत्तर औपनिवेश आयरलैंड राज्य का निर्माण हुआ, तो उनकी मांगों को दरकिनार कर दिया गया। दूसरी लहर 1970 में उठी जिसने आमूलपरिवर्तनवादी और समेकन के आलोचनात्मक काल को चिन्हित किया। इस काल में महिलाओं के विरूद्ध हिंसा और महिला प्रजनन अधिकार जैसे संवेदनशील मुद्दों पर मुख्यत जीत हासिल की। इसके विपरीत 1980 का काल सामाजिक रूढ़ीवादिता का काल था, जिसके लक्षण बढ़ी हुयी बेरोजगारी और उत्प्रवास थे। इस काल ने उल्लेखनीय रूप से महिला अधिकार अधिवक्ताओं द्वारा अर्जित किये गये लाभ के विरूद्ध भी कार्य किया, जिसमें गर्भपात और वैवाहिक संबंध विच्छेद पर संवैधानिक प्रतिबंध शामिल है।

1990 का दौर नारी अधिकारवादी सक्रियतावाद में एक ठहराव ले आया, जिसे महिला आन्दोलन के विकेन्द्रीकरण और विभाजन कर स्थानीय समुदाय और स्वयंसेवी समूहों के जाल में परिवर्तन होने से चिन्हित किया गया। वैवाहिक संबंध विच्छेद का वैधीकरण, समलैंगिगकता का वि–अपराधीकरण और श्रम–शक्ति में महिलाओं

> >

की बढ़ती सहभागिता, नारी अधिकारवादी सक्रियतावादी और सामाजिक अभिवृत्ति में परिवर्तन को प्रमाणित करते है। इस काल में, नारी अधिकारवादियों ने पूर्व में लांछित मुद्दों को सफलतापूर्वक सार्वजनिक किया था, एवं समानता, गर्भ निरोधक विधान और महिला कल्याण के लिए निधियन हेतु राज्य के समर्थन को सुनिश्चित किया था। 1990 के दौर को यूरोपियन न्यायालयों के माध्यम से प्रजनन अधिकारों पर मुकदमें, एक ऐसी व्यूहरचना जिसने संवैधानिक परिवर्तन के सापेक्ष मिश्रित परिणाम दिये, से भी चिन्हित किया जाता है। यह तीसरी लहर एक आन्दोलन में परिवर्तित हुयी, जो आधिका–धिक पेशेवर थी और जो मुख्यधारा में राज्य नारी अधिकारवाद के रूप में सम्मिलित हुयी।

हाल ही में, आर्थिक मंदी की प्रक्रियास्वरूप, कैथलिक दक्षिण पंथियों द्वारा सक्रियतावाद का पुनरूज्जीवन, राज्य मितव्ययता के परिणामस्वरूप आयरिश परिप्रेक्ष्य में नये समसामाजिक समूह उभरे है। आयरिश फेमिनिस्ट नेटवर्क जिसकी नींव 2010 में रखी गयी थी, युवा महिलाओं को लामबंद करने का लक्ष्य रखता है, प्रो. चॉइस समूह प्रजनन अधिकारों के समर्थन को जुटाने में निरंतर प्रयासरत है, यह एक ऐसा मुद्दा है जो नारी अधिकारवादी की भावी पीढ़ियों का निरंतर रूप से राजनीतिकरण करता है। इस संकट के दौर ने महिला सामूहिक संरचना और एजेंसी के लिए कुशलता को नकारात्मक तरीके से प्रभावित किया है – जो लैंगिक समानता ऐजेन्सियों और जन सेवाओं में की गयी कटौतियों से प्रामाणित होता है। साथ ही ऐसे कार्यक्रम जो महिलाओं और परिवार का समर्थन करते है में भी काँट–छाँट की गयी। उल्लेखनीय है, कि लैंगिग असमानता पर मितव्ययता का असमानुपातिक नकारात्मक प्रभाव, अपेक्षाकृत मजबूत नारी अधिकारवादी राजनीतिक प्रयासों के साथ अपना आस्तित्व रखता है, जिसमें लैंगिक समानता के लिये मंदी के परिणामस्वरूप, उत्पन्न ऊर्जात्मक प्रदर्शन सम्मिलित है।

जहाँ एक तरफ वैश्विक शक्ति जैसे वृहद मंदी एवं बढ़ता हुआ नव–उदारवाद आयरलैंड के विकासात्मक प्रतिरूप को दिशा दे रहा है, इसमें कोई शंका नहीं कि इस प्रतिरूप का सीधा असर आयरिश महिलाओं और आयरिश नारी अधिकारवाद पर हो रहा है। अंतर्राष्ट्रीय शक्तियों की भूमिका आयरलैंड के महिला आन्दोलन में बहस का विषय रहा है। जहाँ एक ओर कुछ लेखक इस आन्दोलन को घरेलू आन्दोलन के रूप में देखते है, वहीं दूसरी तरफ अन्य इसे अंतर्राष्ट्रीय संसाधनों पर निर्भर मानते हैं। यूरोपीय संघ (EU) को प्रायः आयरलैंड में लैंगिग समानता पर विवाद के एक महत्व पूर्ण कारक के रूप में देखा जाता है। 1980 और 1990 के दौर में आयरलैंड में वैवाहिक संबंध विच्छेद और गर्भपात विधेयक पर यूरोपीय संघ के 'आधुनिकतावादी प्रभाव'' के पारंपरिक प्रतिरोध ने नारीवादी लामबंदी को लगातार आकार दिया है। वहीं दूसरी तरफ यूरोपीय संघ लैंगिक मुख्यधारीकरण एवं यूरोपियन कोर्ट ऑफ ह्यूमन राइटस (ECHR) ने हाल ही में नारी अधिकारवादी वकालत और लैंगिक समानता प्रारूप के लिये नये अवसर खोले। लैंगिकता की आयरिश राजनीति में, यूरोप से तुलना ने उन नारी अधिकारवादियों को अधिक वैद्यता प्रदान की जिन्होंने राष्ट्रीय नीति को चुनौती दी। दूसरी ओर, घरेलू नारी अधिकारवादी सक्रियतावाद अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है। आयरलैंड की लैंगिक नीति का यूरोपीकरण और फिर उसका विकास, प्रदर्शन, मुकदमों और लॉबी प्रचार आदि के माध्यमों से प्राप्त किया गया। 2014 में तकरीबन 30 से ऊपर आयरिश विधेयक जो लैंगिक समानता पर आधारित थे का उदभव EU की सदस्यता से हुआ था। EU ने नारी अधिकारवादियों को अंतर्राष्ट्रीय रूप से कार्य करने का प्रस्ताव दिया – पेन यूरोपियन संस्था जैसे यूरोपियन वोमेन लॉबी का सदस्य बनकर।

हालांकि EU ने आयरिश समाज में व्यापक रूप से फैले एवं अपनी जड़े जमा चुके लैंगिक असमानता पर विमर्श का कोई समाधान नहीं देता है – यूरोपियन स्तर पर लैंगिक समानता की नीतियों ने सिर्फ कामकाजी महिला यूरोपियन नागरिकों को ही लक्ष्य किया। यह तर्क दिया जा सकता है कि आजकल EU लैंगिक समानता बढ़ाने के लिये पूर्व से अपेक्षाकृत कम अवसर का प्रस्ताव देता है क्योंकि वि–लैंगिकता का दबाव राष्ट्रीय और EU स्तर दोनों पर समान है। उसी प्रकार नव उदारवाद व्यक्ति के अधिकार और संस्था की दक्षता के प्रति संवेदनशील होकर और फिर बाजार के साथ सम्मिलित रूप से समान अवसर की व्यूहरचना का समर्थन करता है जो पुराने लैंगिक विभाजन को न केवल छिन्न भिन्न कर सकते है बल्कि उन्होंने लैंगिक सम्बन्धों का पुनर्निर्माण किया है जो कभी कभी महिलाओं पर नये भार डाल सकता है। आयरलैंड में महिला 'मानव पूंजी में सुधार और वेतन युक्त रोजगार को उन्नति के चिन्हित कारक के रूप में देखा जाता है, पर प्रायः सामाजिक प्रजनन, देखभाल करना, संरचनात्मक भेदभाव या पुरूष स्त्री के मध्य शक्ति असंतुलन को स्वीकार्य सामाजिक संरचना से बाहर रखा जाता है।

EU के अलावा, आयरिश नारी अधिकारवादी समूहों ने लम्बे समय से इरिश राज्य पर अंतर्राष्ट्रीय परम्पराओं के लिये UN परिवीक्षण प्रक्रिया जिनमें कनवेन्शन ऑन द एलिमिनेशन ऑफ डिस्क्रिमिनेशन अगेंस्ट वोमेन (CEDAW) और बीजिंग प्लेटफॉर्म भी सम्मिलित है के द्वारा दबाव बनाये रखा। 2014 की सिविल और पॉलिटिकल राइटस पर इंटरनेशनल कमेटी की आयरलैंड पर रिपोर्ट ने प्रबल सिफारिश की, कि लैंगिक समानता एवं महिला सहभागिता को बढ़ाने के लिये कार्य किये जाने चाहिये। आयरलैंड निरंतर रूप से महिला की स्थिति के सापेक्ष में, आर्थिक, राजनीति और सार्वजनिक जीवन में महिला के प्रतिनिधित्व की निम्न स्थिति दर्शाता है। महिलाओं को उच्च राजनीति आर्थिकी निर्णय सम्बन्धित भूमिका में सम्मिलित करने का तर्क अपनी प्रांसगिकता लिये हुये है, ताकि आयरलैंड की राजनीतिक पितृसत्तात्मक संस्कृति में परिवर्तन के सुर आये। सेल्टिक टाइगर काल में आयरिश आर्थिकी की सफलता और महिला आन्दोलन की सफलता ने नई संभावनाओं के द्वार खोले है। आयरिश अधिकारवादियों को वर्तमान में जटिल, अनुकूलित और विभेदित के रूप में समझा जाता है एवं जिनका लक्षण अपने आप को सामाजिक सांस्कृतिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में संलग्न करना है। यह विभिन्न प्रकार के स्थानीय राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय आन्दोलनों में लिप्त रहते है। इस जटिल पृष्ठभूमि पर भी नारी अधिकारवादी राजनीतिक एजेंसी को लैंगिक समानता सुनिश्चित करने के लिये संकट की स्थिति में गुजरना पड़ता है। ■

पाउलीन कुलीन से पत्र व्यवहार हेतु पता
<Pauline.Cullen@nuim.ie>

> सेल्टिक सम्बद्धताएं :
आयरलैंड के वैश्विक परिवार

रेबेका सीयोको किंग ओ'रियायिन, आयरलैंड का नेशनल विश्वविद्यालय मैयनूथ, आयरलैंड

वैश्विक प्रेम से जलप्लावित आयरलैंड

एक समय अपने उत्प्रवास के लिये प्रसिद्ध, आयरलैंड वर्तमान में एक भूमण्डलीय राष्ट्र अधिक है, यह 1990 और 2000 के दौरे की तेजी के दौरान हुये अप्रवास का परिणाम है। अपेक्षाओं के विपरीत, तेजी के दौर में आयरलैंड आये सभी अप्रवासी 2008 की आर्थिक मंदी के दौर में वापस 'अपने घर' पोलेण्ड या अन्य स्थान पर नहीं लौटे। वस्तुतः कई रुके और उन्होंने अपने परिवार शुरू किये। आयरिश समुदाय की बात की जाये तो, जहाँ एक तरफ 1980 एक दौर में काफी देश छोड़ कर चले गये, वहीं दूसरी ओर उछाल के दौर में काफी वापस भी आ गये – विशेषकर उच्च शिक्षित वर्ग जो अपने साथ भूमंडलीय अनुभव, प्रायः आयरिश सहभागी, बच्चे और पारदेशीय नेटवर्क भी लाये। इन सब ने मिलकर आयरलैंड को संचार का एक बदला हुआ भूमंडलीय केन्द्र बना दिया।

2011 तक आयरिश सेंसस ने पाया कि 17% आयरिश आबादी ने यह बताया कि उनका जन्म आयरलैंड में नहीं हुआ था। यह 2006 के आंकड़ों से 25% बढ़ा हुआ था। 2011 में दुबारा 12% प्रतिशत जनसंख्या ने बताया कि उनके पास आयरिश राष्ट्रीयता नहीं थी। जहां 85% आबादी ने बताया कि वे श्वेत और आयरिश थे, जो कि मुख्यतया 40 वर्ष से कम उम्र के थे। 2011 में 4.5 मिलियन इरिश निवासियों में से लगभग आधे मिलियन (514,068) से ज्यादा निवासी अपने घर पर विदेशी भाषा बोलते थे, और यह जानकर अचंभा नहीं होगा कि अब तक पोलिश भाषा सामान्यतया बोली जाने वाली भाषा थी, और इसके बाद फ्रेंच, जर्मन और लिथुएनिएन आती है। इस प्रकार के जनसंख्यात्मक परिवर्तन के अलावा प्रौद्योगिकी ने नई अंतर्राष्ट्रीय पलटवार का समर्थन किया। आयरलैंड और अन्य देशों में तेजी से विस्तार लेती ब्रॉडबेंड और तारहीन सामर्थताओं ने 2012 में आयरलैंड में 81% जनसंख्या को इंटरनेट के द्वारा विश्व से जोड़ा 2008 में यह संख्या 61% थी।

इस प्रकार के जानकारों और अंतर्राष्ट्रीय अंतरंग संबंधों का इरिश और अइरिश समुदाय के मध्य विकसित होना, इरिश समाज के भीतर और बाहर क्या अर्थ प्रदान करता है?

परिवार – अपने विविध रूप में – एक दूसरे के प्रतिपक्ष वाली संस्थाओं के विवाद पर है जो प्रेम और अंतरंगता को एक सांस्कृतिक समझ का प्रारूप प्रदान करती है, यह निर्धारित करती है कि किस प्रकार के प्रेम और अंतरंग संबंधों को वैद्य दृष्टि से देखा जाना चाहिये और किसको नहीं। इस प्रकार की समझ प्रायः भावात्मक व्यवहारों के रिर्पोटाअर का प्रारूप ले लेती है। यह परिवर्तित राष्ट्रीय परिवार और भावात्मक आदतें अब इरिश रोजमर्रा के जीवन का केन्द्र बन गयी है। सेंसस 2011 से हमें यह ज्ञात है कि मिश्रित

> >

इरिश/अइरिश' परिवार है। इनमें ऐसे परिवार भी शामिल हैं जिनमें अलग–अलग राष्ट्रीयता वाले सदस्य रहते है, जैसे आयरलैंड में जन्मित बच्चे और उनके अभिभावक जिनका जन्म नाइजीरिया में हुआ है या दोस्तों का ऐसा समूह जो विभिन्न राष्ट्रों से आये हैं परन्तु एक परिवार के रूप में रहते है। कुछ प्रजाति समूह की संख्या इस प्रंकार के मिश्रित परिवारों में काफी ज्यादा हैं, जिनमें USA (72%), UK (64%) और नाइजीरिया (77%) शामिल है।

प्रजातियों की बढ़ती विभिन्नता, मिश्रित इरिश/अइरिश परिवार और आयरलैंड में परिवार मूल्यों की विविधताओं ने आयरलैंड को परिवार आधारित बहुसंस्कृतिवाद का अनुभव करा दिया है, जिसे Ulrich Bekk ने 'ग्लोबल परिवार' कहा है। इस प्रकार के परिवार प्रायः अंतरप्रजातीय, अंतरसांस्कृतिक, अंतरास्थावादी और बहुभाषीय होते है, और आयरलैंड के बाहर एवं सम्पूर्ण विश्व के साथ विद्युत मीडिया से संपर्क में रहते है। 2012 में आयरलैंड में 29% इंटरनेट उपभोक्ताओं ने रिपोर्ट किया, कि वो वेबकेम प्रौद्योगिकी का प्रयोग वीडियोकॉन्फ्रेंस के लिये करते है, इस प्रकार संपूर्ण राष्ट्र एवं उसके बाहर भावात्मक समर्थक जाल का निर्माण करते हैं एवं उसे बनाये रखते है।

प्रश्न यह है कि किस प्रकार यह विविधता लिये हुये परिवार, सोशल नेटवर्क के केन्द्र का कार्य करते है जो आयरलैंड को समस्त विश्व के साथ जोड़ते हैं। जैसा पहले भी बताया जा चुका है। ट्रांसनेशनल संपर्को का एक मुख्य साधन आर्थिकी नहीं है अपितु भावनायें और सांस्कृतिक बंधन है, जो डिजीटल प्रौद्योगिकी के प्रयोग से अपने आप को संभाले हुए है। स्काईप वेबकेम प्रौद्योगिकी परिवारों को यह अनुमति प्रदान करती है वे संपर्क में रहे, चाहे भौतिक दूरियाँ कितनी भी हो। इस प्रकार यह इस प्रारूप को दर्शाता है कि, किस प्रकार लोग अपने भावात्मक कार्य को डिजीटल प्रौद्योगिकी में पॉलीमीडिया से करते है। इसलिए औश्र उरे का तर्क है, कि प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रयोग ने लोगों को भावात्मक रूप से प्रौद्योगिकी साधन (जैसे मैसेज और चित्र) पर निर्भर कर दिया है। जिन्हें बाद में पीछे खींचा जा सकता है – ''यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति 'भावात्मक निर्भरता' के कार्य में संलग्न हो, उसका मूढ़, स्वयं के अनुभव एक वस्तु के रूप में इकठठे होते रहते हैं, जबतक कि वो भविष्य के संकेत और चिंतन के रूप में पीछे नहीं खींच लिये जाते'' (इलिएट एवं उरे, मोबाइल लाइवस 2010:39) 'भावात्मक स्ट्रीमिंग' जैसे व्यवहार में भी संलग्न रहते है और इसका परिणाम है निरंतर विकसित होता वेबकेम द्वारा अंतः संबंध। स्काईप वेबकेम सिर्फ एक वॉइस कॉल के रूप में ही प्रयोग नहीं होता है अपितु इसमें दृष्टिगत असर भी होता है – कम्प्यूटर की स्क्रीन के सामने बैठकर वार्तालाप करना। वेबकेम का लगातार प्रयोग इस प्रकार है कि जैसे किसी फिल्म या विडियों का निरंतर चलते रहना एवं दिनचर्या का शोर मिनटों नहीं अपितु घंटों तक चलता है। स्काइप का प्रयोग, कई बार लगभग रोजाना अपने प्रियजनों के संपर्क में रहने का अनूठा साधन है एवं यह भावात्मक बंधन को बनाये रखता है। भौतिक दूरियों के बावजूद अपनत्व की भावना का निर्माण करता है।

आयरलैंड में नये परिवार समाज की सिर्फ जनसंख्यात्मक संरचना नहीं बदल रहे अपितु परिवार की भौतिक पहुँच भी बदल रहे है। इन नई प्रौद्योगिकीयों के साथ, परिवार उन तरीकों को बदल रहे है जो इरिश लोग और वो विभिन्न लोग जिनके वे संपर्क में है – अपनी भावात्मक और अंतरंग जीवन को जीते हैं। ■

रिबिका किंग–ओ'रिआन से पत्र व्यवहार हेतु पता
<Rebecca.king-oriain@nuim.ie>